गुणों की पिटारी

काशीनिवासी स्वामी **परमानन्दजी** निर्मित

मुद्रक व प्रकाशक

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस

कल्याण-बम्बई.

संवत् २०१७ सन् १९६१

भूमिका

इस ग्रन्थका नाम "गुणोंकी पिटारी" इसलिये रक्खा है कि, इसमें मनुष्योंके ऊपर उपकार करनेवाले अनेक गुण भरे हैं, जिन गुणोंसे लोग बहुतसे फायदे उठा सकते हैं और भी बहुतसे गुण इस ग्रन्थमें ऐसे भरे हैं जो कि, शरीरको पुष्ट और बली करनेवाले हैं और बहुतसे गुण इसमें ऐसे भी हैं कि-लोग जीविकोपार्जन अच्छी तरहसे कर सकते हैं और बहुतसे गुण खाने पीनेके कामवाले हैं, जिनको बनाकरके खाने पीनेका मजा मिलता है और बहुतसे गुण इसमें ऐसे भी हैं जो कि, जमींदारीके कामके वास्ते परमोपयोगी हैं और बहुतसे गुण अनेक रोगोंको भी दूर करनेवाले इसमें भरे हैं। इस ग्रन्थमें पांच अध्याय हैं। १ पहले अध्यायमें अनेक प्रकारकी धातुओंके फूँकने और सेवन करनेके तरीके लिखे हैं। २ दूसरे अध्यायमें सिंदूर वगैरहके बनानेके तरीके हैं। ३ तीसरे अध्यायमें साबुन और दूसरी अनेक चीजोंके बनानेके तरीके हैं। बाकीके अध्यायोंमें सब प्रकारके तरीके अतीव उपयोगी हैं, वे इस ग्रन्थकी विषयानुक्रमणिका देखनेसे भलीभांति मालूम होंगे। इस ग्रन्थमें जो जो विषय हमने उद्धृत किये हैं वे अनेक ग्रंथोंके आधारसे बडे परिश्रमके साथ प्राप्त किये हैं, जो साधारण मनुष्य भी अनुभव प्राप्त कर घर बैठे ही अनेक प्रकारके ज्ञान प्राप्त कर कृतार्थ होंगे और साथ ही मुझे भी अनुगृहीत कर सकेंगे ऐसी आशा है।

इस ग्रंथको मैंने परोपकारके वास्ते बडे परिश्रमसे निर्माण कर जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालयाध्यक्ष-सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास महोदयको पुनर्मुद्रणादि सर्व हक्क समेत अर्पण किया है।

द० स्वामी श्रीपरमानन्दजी

श्रीः

विषयानुक्रमणिका

दूसरा अध्याय २

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता

श्रीः

अथ गुणोंकी पिटारी

पहला अध्याय

मंगलाचरण

दोहा–बन्दौं परमानंदको, जो अनन्त निजरूप ॥
ध्यानधरत जिहि तम मिटै, स्मृत ह्वै ब्रह्मस्वरूप ॥ १ ॥
बर्णाश्रम जामें नहीं, नहीं जाति अरु रूप ॥
जो जानै निज रूपकर, लै पद परम अनूप ॥ २ ॥
ऊंच नीच जामें नहीं, नाहीं जामें भेद ॥
पूरण सबमें एक जो, रहित त्रिविध परिछेद ॥ ३ ॥
हंसदास गुरुको प्रथम, प्रणवौं बारंबार ॥
नाम लेत जिह तम मिटै, अघ होवत सब छार ॥ ४ ॥

चौपाई

परमानंद मम नाम पछानो, उदासीन मम पथको जानो ॥
रामदास मम गुरुको गुरु है, आत्मवित्त जो मुनिवर मुनि है ॥ ५ ॥

दोहा–परसराम मम नगर है, सिंधुनदी उस पार ॥
भारत मंडलके विषे, जानै सब संसार ॥ ६ ॥

प्रथम धातुओंके शोधनेकी रीतिको लिखते हैं जो कि रांगा और शीशा वगैरह पिघलनेवाली धातुएँ हैं उनकी इस रीतिसे शोधे-किसी बर्तनमें तेल या छांछ या गोमूत्र अथवा कांजीका पानी डालदेवे और उस बर्तनके मुखपर एक छिद्रवाला ढकना धरदेवे फिर धातुको पिघाल करके ढकनेमें छोडदेवे वह छिद्रद्वारा हांडीमें चलीजायगी जब कि ठंढी होजावे फिर उसी तरह करे तीन या सात वार करनेसे शुद्ध होजायगी, इसी तरह करनेसे धातु उछलती नहीं है और चांदी, सोना,

तांबा, फौलाद, वगैरहके महीन पत्र बनवाकर उनको अग्निमें तपा करके तेल कांजी और छांछ तथा गोमूत्रमें सात २ बार बुतानेसे शुद्ध होजाते हैं और शिंगरफ, हरताल, संखिया वगैरह यह सब उडनेवाली धातु हैं इनको तागासे बांधकर दूधमें लटका देनेसे नीचे आग जला-नेसे शुद्ध होजाती हैं ।इनकी शोधनेकी रीतियां आगे लिखी जायंगी । जो धातु मारी जाय प्रथम उसकी परीक्षा करलेनी चाहिये। शिंगरफ, संखिया, हरताल इनकी जरासी राखको जलते हुये अग्निके कोइलापर डाले अगर धूवां देवे तब जानलेना कि, कच्ची है । और रांगा, शीशा, तांबा वगैरह धातुओंकी जरासी राखको एक गिलासमें पानी भरकर उसपर छोडे फिर उस पर गेहूंके पांच सात दाने छोडे अगर वे दाने डूब जायें तब कच्ची, तरजायें तब पकी और पकी धातुका खाना गुणकारी होता है और कच्ची धातु नुकसान करती है । अब उन धातुओंके मारनेकी विधिको लिखते हैं–जिनकी एक रत्ती या एक चावलभर राखके खानेसे शरीरकी सब बीमारियाँ दूर होजाती हैं और घृत दूध भी खूब पचजाता है और दुर्बल शरीर भी बलवाला हो जाता है ।

प्रथम शिंगरफकी विधिको दिखाते हैं

यह शिंगरफ उपधातु है अग्निपर रखनेसे कोइला होजाता है अर्थात् जल करके धुवां होकरके उडजाता है फिर यह शिंगरफ धातु दो प्रकारकी होती है, एक तो पारा और चांदी सोनेकी खानोंसे निकलती है वह खानी कहाती है और दूसरी पारा और गंधकके मिलनेसे बनाई जाती है, जो बनावटी कहाती है । खानी शिंगरफ बहुत ही कम मिलती है और बनावटी ही सब जगहमें मिलती है, इसमें भी दो भेद होते हैं एक नर शिंगरफ कहाता है दूसरा मादा कहाता है जिसमें सुफेद मोटी २ लकीरें हों वह नर शिंगरफ कहा जाता है, और जिसमें सुफेद छोटी २ लकीरें हों वह माद्रा शिंगरफ कहा जाता है, रंग इसका लाल होता है, तोलमें भारी है, फूंकनेसे

नर शिंगरफ ही अच्छा होता है, मिजाज इसका गरम और खुश्क है और कम खुराक इसकी खूनको साफ करती है और अधिक खुराक दूषी विषके तुल्य है अर्थात् शरीरमें फोडे और फुनसियोंको पैदा करदेती है, बूटी या किसी पत्तीके रससे बनाई हुई शिंगरफकी राख बडी गुणकारी होती है और अनेक रोगोंको दूर भी करती है और नामर्दको मर्दभी बनादेती है । अब पहले इसके शोधनकी विधिको लिखते हैं पश्चात् मारनेकी विधिको लिखेंगे फिर खानेकी विधिको लिखेंगे ।

शोधनेकी विधि

नर शिंगरफकी एक तोलेकी या दो तोलेकी डली लेकरके उसको एक तागेके साथ बांधकर फिर एक हांडीमें आधा सेर गौका मूत्र डालकर उस डलीको उसके ऊपर लटका दे, परन्तु गोमूत्रसे एक अंगुल ऊँचा रहे नीचे हांडीके बराबरकी आग जले, गोमूत्रकी बाफ उस डलीको बराबर लगता रहे फिर दो या तीन घण्टोंके पीछे मूत्रको फेंक दे और आधसेर गौका दूध हांडीमें डालकर फिर उसके ऊपर शिंगरफकी डलीको दो अंगुल ऊंचा लटका देवे और बराबरकी आग नीचे जलाये जबकि आधा दूध सूखजावे तब शिंगरफकी डलीको निकालकरके दूधको फेंक देवे और फिर दूसरे दिन आधसेर या अढाई पाव या तीन पाव गौका दूध लेकर हांडीमें डालकर उसको आगपर चढा देवे और उस शिंगरफकी डलीको उसके ऊपर लटका देवे और बराबरकी आगको नीचे जलाता रहे, दूधकी बाफ बराबरही शिंगरफको लगती रहे जबकि चहारमें दूध सूख जावे तब डलीको निकाल करके रख छोड़े और दूधको सबेरे या संध्याके समय या रात्रिको भोजनसे दो घण्टे पीछे पीलेवे इसी तरह चालीस दिन बराबरही उस शिंगरफको दूधपर लटका करके पहिली रीतिसे दूधको औटा करके मीठा डाल करके नित्य पीवे वहां दूध बड़ा गुण करेगा और शिंगरफ भी अतिशुद्ध होजायगा ।

शिंगरफ शोधनेकी दूसरी रीति

जितना शिंगरफ शोधना हो उसको नींबूके रसमें रगडके सुखा लेवे इसी रीतिसे सात बार नींबूके रसमें रगडके खुखा लेवे शुद्ध हो जावेगा और कोई २ भेडके दूधमें रगडके सात बार सुखा लेते हैं शुद्ध हो जाता है ।

और विधि

शिंगरफकी डलीको लेकरके किसी लोहेके बरतनमें उसको रख करके फिर एक पावभर नींबूका रस निकाल कर थोडा २ करके उसके ऊपर डाले जब कि वह सूखजावे फिर थोडा डाले पावभर नींबूका रस उस शिंगरफपर जब कि सूख जाये तब फिर रंगके प्याजके गठे लेकर उनका एक पावभर रस निकालकर उसी शिंगरफपर थोड़ा थोड़ा डालकरके सारा सुखा दे शिंगरफ शुद्ध हो जायगा ।

शिंगरफके मारनेकी विधि

एकपुटिया लहसन इतना लेवे जितनेमें आधपाव रस निकल आवे अर्थात् आधपाव एकपुटिया लहसनके रसको किसी छोटेसे खरलमें डाले उसमें फिर उस शोधे हुवे शिंगरफकी डलीको डालकरके खरल करे जब कि रस सूख जाय तब गोली बना ले फिर एक सवापाव सुफेद कपडेके टुकड़ोंको लेकरके उस गोलीके ऊपर लपेट करके गेंदकी तरह कसके बना दे फिर उसको एक तरफसे आग लगा कर देवे जब कि वह ठंडा हो जाय, तब उसमेंसे धीरेसे शिंगरफको निकाल लेवे यह गुलाबी रंगका शिंगरफ तैयार हो जायगा ताकतके वास्ते १ चावल भर मलाईमें खिलावे और अचार चटनी दहीको न खावे, घृत दुग्ध खूब खावे ।। १।।

दूसरी रीति

चार सेर लाल मिरचकी लकडीको लेकरके उसको जला करके राख़ करलेवै फिर एक हांडीको लेकर उस हांडीमें नीचे ऊपर उस राखको देकर बीचमें शोधी हुई शिंगरफकी ड़लीको रखकर उसपर

उस राखको खूब दबाकर फिर हांडीको चूल्हे पर धरके नीचे उसको पांचसेर बेरकी लकडीकी नरम अग्निमें जलाये जबकि सब लकडी जल जाय और हांडी ठंडी होजाय, तब शिंगरफकी डलीको निकाल ले सुफेद रंगका यह शिंगरफका कुशता बन जावेगा इसको एक रत्तीभर पानके पत्तेमें खावे ताकत बहुत देवेगा परंतु ऊपरसे घृत और दूध तथा मलाईका सेवन करे ॥ २ ॥

तीसरी रीति

एक तोला शोधे हुवे शिंगरफको ले करके एक छटांक भर मदारके दूधमें उसको खरल करके गोली बनावै फिर आधपाव घीकुवारक सूदा लेकर मिट्टीके पुरवेमें डालकर उसके बीचमें शिंगरफकी गोली-को धरकर ऊपरसे ढकनी देकर कपडमिट्टी करके संपुट बना करके फिर गढा खोदकर छः सेर गोठोंमें संपुटको धरकर फूंक देवे जबकि ठंडा होजाय तब निकालकरके काममें लावे। इसकी खुराक एक रत्ती-भर मलाईमें ताकतके वास्ते देवे ॥ ३ ॥

चौथी रीति

शोधा हुवा शिंगरफ एक तोलाभर लेवे और मघां दो तोले गौका घृत पावभर फिर गौका दूध खरलमेंडालकर शिंगरफको और मघां को पीसकर दूधमें डालकर दिनभर खरल करे फिर उसको लोहेके बरतनमें रखकर उसमें उस घृतको डाल दे और अग्नि पर उसको पकावे और इतने कालतक पकावे कि जबतक बुलबुले निकलने उसके बंद होजाँय,फिर उसको किसी हथियारके साथ उलटा देवे दोनों तरफ बराबर हो जावे परंतु जलने न पावे फिर उतारकर ठंडा करके पीसके रख छोडे। एक रत्ती या आधी रत्ती पानके पत्तेमें या मक्खनमें देवे, वादी वलगमके संपूर्ण रोगोंको फायदा करेगा ॥४॥

पांचवीं रीति

एक तोला शुद्ध शिंगरफकी डलीको लेकरके एक सेर जिमीकन्द-की लुगदीमें धरकर उसका संपुट बनाकर गजपुटमें फूंकदेवे सिंगरफ मरजावेगा मलाईमें खावे ॥ ५ ॥

छठी रीति

दो तोले शोधे हुवे शिंगरफको लेकरके एक मोटा गठा प्याजका लेकर उसको फाडकर उसमें शिंगरफकी डलीको रखकर फिर बंद करके तवेपर धरकर नीचे अग्निको जला करके उसको जलावे, तब उसमेंसे निकाल करके फिर ठंडा करके दूसरे गठेमें उसी तरह धर करके गठेको जलावे इसी तरह एकसौ गठोंमें धर करके करे फिर एक छटांकपर लहसनकी लुगदी बना करके उस लुगदीमें उसी शिंगरफकी डलीको रख करके जलावे फिर ठंडा कर दूसरी छटांकभर लहसनकी लुगदीमें धरकरके उस लुगदीको भी जलावे इसी तरह सौ पुट लहसनकी लुगदीको देवे फिर एक मोटी मछली लेवे उसका मुख फाड करके उसके अंदर उस शिंगरफकी डलीको धर देवे और एक तागेसे बांधकरके उस मछलीको तवेपर जलावे जब कि मछली जल जाय तब उतारकर उसको ठंडा करके उसमेंसे शिंगरफको निकालले मर जायगा खुराक चावलभर या आधी रत्ती मलाईके साथ ताकतके वास्ते देवे, बादी खटाईको न खावे ॥ ६ ॥

सातवीं रीति

दो तोले पूर्वरीतिसे शोधा हुवा शिंगरफ लेवे और सवा पावभर बिसखपडा सुफेद लेकर पीसकर रखो फिर जिमीकंद लेकर उसके गूदेको कूटकर उसका इतना रस निकालो जिसमें बिसखपरा सनजावे फिर बिसखपडेकी लुगदी बनाकर उसमें शिंगरफकी डलीको धर करके गोलासा बनादेवे फिर एक साफ अच्छा मोटा कपडा लेकर उसके ऊपर लपेटो और चारों तरफसे उसको सूई तागेसे सीडालो फिर कुसुंभेके बीजोंका तीन सेर तेल लेकर उस तेलको एक तांबेके डेगमें (बरतनमें) डालदेवे फिर उस तेलमें उस शिंगरफवाले गोलेको डाल देवे उस बर्तनके मुखपर ढकना रख करके फिर उरदोंके आटेको सानकरके उस ढकनेके छिद्रोंको बंद करदेवे जो किसी तरहसे भी धुवां उसके बाहर निकलने न पावे । फिर उस ढकनेके ऊपर एक पांच सेरका पत्थर धर देवे फिर उस बरतनके

नीचे पतली २ दो या तीन लकडियोंकी अग्निको एक पहर तक बराबर जलावो फिर तीन पहरतक तेज आगको जलावो मगर धुवां उसका बाहर निकलने न पावे इसवास्ते उडदके आटेको थोडा सान करके पास रखलेना और उसको लगाते जाना फिर डेगमेंसे एक आवाज भारी निकलेगी उससे मत डरना फिर चार पहरके पीछे अग्निको बंद करदेना जब कि डेग ठंडी होजावे तब ढकना उतार करके देखना सब तेल गाढा होजायगा तब उसमेंसे शिंगरफकी डलीको निकाल लेना और खरलमें पीसकरके एक शीशीमें रखदेना फिर पानके पत्तेमें एक चावलभर देना और घृत दुग्धका सेवन करना बादी खटाईको नहीं खाना भोगशक्तिको प्रचंड करेगी भूख शक्तिको भी बढावेगी और कबजीको दूर करेगी कमजोरीको भी दूर करेगी बदनको मोटा करेगी । सरदीके दिनोंमें दो हफता तक बराबर नित्य खानेसे सालतक इसका असर बराबर ही बना रहता है और जो कि तेल बचेगा उसको भी एक शीशेमें रखछोडना उसको भी एक रत्ती पानके साथ खानेसे शिंगरफवाला फायदा करता है भूखको बढाता है और पुराने रोगोंको भी दूर करता है ॥ ७॥

आठवीं रीति

चार ४ तोले शिंगरफको लेकर पूर्वरीतिसे शुद्ध करके फिर उसको खरलमें महीन पीसलेवे फिर तेज शराबकी एक बोतल लेकरके थोडा २ शराब डालकरके खरल करे जब कि सब शराब उसमें सूखजावे तब उसकी टिकिया बनालेवे फिर एक मोटी हांडी लेवे और पांच सेर मोटा रेता हांडीमें भरकर उसपर शिंगरफकी टिकियाको रखके बाकीका आधा रेता उसके ऊपर दबाकर फिर हांडीपर ढकना लगाकरके उसको कपडमिट्टी करके सुखाके फिर गजपुटमें धरकरके आगको लगादे फिर तीसरे दिन या चौथे दिन जब कि वे खूब ठंडी होजावे तब हांडीको निकालकर उसमें शिंगरफको निकाल लेवे और खरलमें पीसकरके शीशीमें रखछोडे नामर्दीवाले-

को एक चावलभर पानके पत्तेमें दे ऊपरसे घृत दूध और मलाईको खूब खावे और खट्टी बादी तेलकी चीजको न खावे ॥ ८ ॥

नवीं रीति

एक तोलाभर शिगरफको लेकर शोधकर फिर उसको पावभर मदारके दूधमें खरल करके उसकी टिकिया बनालेवे और उसको सुखाकर फिर एक बैंगन मारू आधसेर तोलवाला लेकर उसको एक तरफसे काटकर उसमें उस टिकियाको धरकरके और उसी बैंगनके टुकडेको ऊपर देकर फिर उस बैंगनको कपडमिट्टी करके सुखाके फिर एक गड्ढेमें पांच सेर गोठोंमें रखकरके फूँक देवे जब कि ठंढा होजावे तब निकालिकरके ऊपरवाले अनुपानके साथ खावो बड़ा गुण करेगा ॥ ९ ॥

अब संखियेके हालको लिखते हैं

यह धातु पहाडोंमें ही मिलती है और फिर यह धातु विष होता है अर्थात् जहर होती है इसको बिना रीतिसे खानेसे पुरुष मर जाता है और रीतिसे खानेसे पुष्ट और बली होजाता है और अग्निपर धरनेसे यह धुवां होकरके उडजाती है और इसका धुवां भी नेत्रोंको अंधा करदेता है और इस संखियेको गौके दूधमें शोधकर प्रथम आधे उडदके बराबर अगहनके महीनासे खाना शुरू करते हैं और एक सालतक तो इतना ही खाते हैं और फिर दूसरे सालमें एक उडदके बराबर कर देते हैं फिर धीरे २ दो उडदोंके बराबर पहुँचा देते हैं और मक्खन तथा मलाईको खूब खाते हैं यह रुधिरको साफ करता है बलको बढाता है और गरमी आदि रोगोंको यह दूर करता है मगर यह गरम और खुश्क बहुत होता है ।

प्रथम इसके शोधनेकी रीतिको दिखाते हैं

एक तोलाभर संखियेकी डलीको लेकर एक तागेके साथ उसको बांधकरके एक हांडीमें आधसेर गौका दूध डालकरके उसमें उस डलीको लटका देवे दूधमें वह डूबी रहे मगर नीचे न लगने पावे फिर उस तागेको लकडीसे बांधकरके उस हांडीपर रखदेवे परंतु उसके

धुवेंसे बचारहे हांडीको अग्नि परधरदेवे नीचे बराबरकी आग जलाये जब कि दूध गाढा होजावे तब ठंडा करके डलीको निकाल लेवे दूधको फेंकदेवे इसी तरह तीन दिन दूधमें करनेसे वह शुद्ध हो जायगा परंतु दूधके बाफसे भी बचाव रखे जो आंखोंको लगने न पावे यह शोधनेकी रीति है ।

अब मारणकी विधिको लिखते हैं

आधापाव जिमीकंदके रसको निकालकर उसमें संखियेकी डलीको डालकरके खरल करे जब कि सब रस सूख जावे तब उसकी गोली बनाकरके उसका फिर संपुट बनाकर फिर छः सेर गोठोंमें गड्ढा खोद करके उसको फूंकदेवे तब जबकि ठंडा हो जावे तब निकालकर फिर पीस करके शीशीमें रख देवे ताकत बढानेके वास्ते आधा चावलभर मलाईमें देवे और पित्तज्वरवालेको एक चावलभर बतासेमें देवे, खटाई वादी और तेलकी चीजको न खावे ।। १ ।।

दूसरी रीति

छः सेर थोहरकी फली लेकर उसको सुखा करके फिर अग्नि लगा कर उसको जलाकर राख बनालेवे फिर एक छोटी हांडीमें आधी राख भरकर उसमें शोधी हुई तोलाभर संखियेकी डलीको धरकर ऊपर उसके बाकीकी राखको डालकरके दबा करके फिर कपडमिट्टी कर संपुट बनाकरके फिर दश सेर गोठोंमें गजपुट बना करके फूंक देवे राख होजायगी ।। २ ।।

तीसरी विधि

दो तोले संखियेको शोधकर फिर एक इतनी बडी मूलीको लेवे जिसके कूटनेसे तीनपाव रस उसमेंसे निकल आवे उस रसमें उस संखियेकी डलीको खरल करे जब कि रस सब सूख जावे तब उसकी चनेके बराबर गोलियोंको बना लेवे फिर दो डबल ईंटें पकी हुई लेकर उन दोनोंको बीचमेंसे थोडा २ खोददेवे इतना गढा उनमें करे जितनेमें कि सब गोली आजावें फिर उनके गढोंमें सब गोलियोंको भरकर दोनोंको मिलादेवे और जो फिर छिद्र

बारीक होवें उनको चिकनी मिट्टीसे बन्द कर दे या उडदके आटेको सानके बन्द करदेवे फिर एक ऐसा चूल्हा बनावे जिस के ऊपर दोनों ईटें बराबर जमजाय दोनों ईटोंको उस चूल्हेपर जमा-करके उनके नीचे चार पहरतक बेरकी लकडीको बराबर जलावे जब कि दूसरे दिनतक ईटें ठंडी होजावें तब इन गोलियोंको निकाल करके खरलमें महीन करके शीशीमें रखछोडे। शीतज्वरवालेको एक चावल-भर बतासेमें देवे और सरदीवालेको और ताकतके वास्ते एक चावल-भर मलाईमें देवे ऊपरसे घृत दूधका सेवन करे ॥ ३ ॥

चौथी रीति

दो तोले शोधे हुए संखियेको एक छटांक भर मदारके दूधमें भिगो देवे फिर दूसरे दिन एक छटांकभर मदारका दूध लेकर उस दूधमें उसको पकाकरके अग्नि पर चढादेवे जब कि दूध सूख जावे तब उतार लेवे इसी तरह चालीस दिनोंतक बराबही रोज एक छटांक मदारका दूध लेकर उसमें संखियाकी डलीको सुखालेवे फिर घीकु-वारके गूदेमें डलीको रखकर संपुट बनाकर फिर ढाककी लकडीको जलाकरके एक हांडीभर उसकी राखको बनावे और उस हांडीमें आधी राख डालकर उसपर उस संपुटको धरकर आधी राख ऊपर डालकर खूब दबाकर फिर उस हांडीको चूल्हे पर धरके उसके नीचे चारपहरतक बराबर ही बेरकी लकडीकी आगको जलावे फिर गेहूँके अर्थात् कणकके दाने चार या पांच उस हांडीकी राख पर रक्खो जब कि दाने भुंनजावें तब जानलेवे कि उमदा संखिया फुंका गया है फिर आग बन्द करदेवे जब कि हांडी ठण्डी हो जावे तब निकाल करके काममें लावो यह कृशता और सब रोगोंको दूर करता है खुराक इसकी आधे चावलसे एक चावल तक है ताकतके वास्ते मलाई में देवे और गठियावालेकोभी मलाईमें देवे ॥ ४ ॥

पांचवीं रीति

तीन मासे संखियेको प्याजके एक मोटे गठेको बीचमें खोदकर उंसमें रखदेवे और तीन या चार मासा कलमीशोरा भी पीसकरके

उसीमें डालदेवे फिर उस प्याजके गूदेसे जो कि खोदा है उसी गठे में भरकरके बन्द करदेवे फिर एक छोटीसी मिट्टीकी हांडीको लेकर उसमें प्याजका गूदा नीचे रखकर ऊपर उस गठेको धरकर उसपर और प्याजका गूदा डालकरके ऊपर धूनीसे बन्दकरके उसपर दो अंगलीभर मोटी कपडमिट्टी करो फिर उसको सुखा करके चार सेर गोठोंमें धरके गढेमें फूँक देवे जब ठण्डा होजावे तब निकालकर काममें लावो ॥ ५ ॥

छठी रीति

पुठकंडेकी आधसेर भस्म बनाकर एक हांडीमें दबाकर उसमें संखियेकी शोधी हुई डली रखकर बाकीकी राखकी ऊपर दबाकरके फिर हांडीको चूल्हेपर रखकर नीचे बेरकी लकडीको दोपहरतक जलावो जहांपर धुवां निकले उसी जगह पुठकंडेकी राखको उसपर दबाते जावो जब कि धुवां निकलनेसे बन्द होजाय तब ठंडा करके उतार लेवे संखिया खिल जायगा, पूर्वरीतिसे अनपानके साथ काममें लावो ॥६ ॥

सातवीं रीति

एक तोला संखियाको पूर्वरीतिसे शुद्ध करलेवे और पावभर अपमार्गकी लुगदी बनालेवे फिर एक मिट्टीके सकोरेमें आधी लुगदी डालकर उसपर संखियेकी डलीको रखकर उसके ऊपर फिर आधी लुगदीको दबाकर फिर उसको संपुट बनाकर दश सेर जंगली उपलोंमें फूंकदेवे भस्म हो जायगा फिर काममें लावो ॥ ७ ॥

आठवीं रीति

अपामार्गको जलाकरके उसकी एक पावभर राख बनालेवे और मट्टीका एक सकोरा ऐसा लेवे जिसमें कि वह पावभर राख आजावे, जिसमें आधी राखको दबाकर उसमें संखियेकी शोधी हुई एक तोलाभरकी डली धरकर फिर आधी राख उसके ऊपर दबाके फिर उसके ऊपर ढकनी देवे मगर उस ढकनीमें एक छोटासा छिद्र करदेवे उस सकोरेको छोटेसे चूल्हेके ऊपर धरकर नीचे उसके दो बत्तीके

बराबर आगको दो२पहरतक बराबरहीजलावे फिर एक लोहेकीसला-ईको उस छिद्रमें लगावे जब कि वह टेढी होजाय तब तो अग्निका जलाना बन्द कर देवे यदि टेढी न होवे तब फिर अग्निको कुछ देर तक जलाकरके सींकको लगाकरके देखे। जब सींक टेढी होजाय तभी अग्निको ठंडा करे, फिर दूसरे दिन उसमेंसे संखियेको निकालकर परीक्षा करके पीसकर शीशीमें रख देवे ताकतके वास्ते एक चावलभर मलाईमें देवे बडा फायदा होवेगा ।। ८ ।।

नववीं विधि

एक तोलाभर संखियाको शोधकर फिर नव मोटे कागजी निंबुओंका रस निकालकर उसमें उसको खरल करे जब कि उसकी गोली बनजावे तब फिर तांबेकी एक डिबिया दो बराबरके परदोंवाली बनवावे परंतु इतनी बडी हो जिसमें कि वह गोली बराबरही आजावे उसमें उस गोलीको रखकरके डिबियाको खमवा देवे फिर गढा खोदकर दश सेर जंगली गोठोंमें उस डिबियाको धरकरके फूंकदेवे डिबियाके सहित वह भस्म होजा वेगी पूर्ववाली रीतिसे उसको उपयोगमें लेवे ।। ९ ।।

दशवीं रीति

तिलोंके पौधोंको जलाकरके राख बनालेवे और एक मोटी हांडीमें आधी राखको दबाकरके उसके ऊपर दो तोले संखियेकी डलीको रखकरके फिर आधी राखको उसके ऊपर दबा देवे फिर हांडीके नीचे मिट्टी लगाकर उसको सुखाकरके चूल्हेपर उसको धरकर उसके नीचे कीकरकी लकडीको दोपहरतक बराबरही जलावे फिर जब कि हांडी ठंडी होजावे तब संखियेको निकालकर पीसकरके एक शीशीमें रख छोडे दमेकी बीमारीवालेको एक चावल भर शहदमें खिलावे और कमताकत वालेको पानके पत्तेमें देवे और ज्वरवालेको बतासेमेंदेवे और ऊपरसे दूध भी खावे और बादीवालेको शहदमें देवे, वह ऊपरसे हलवा खावे ।। १० ।।

ग्यारहवीं रीति

सुफेदसंखिया शुद्ध ५ तोले और लोटासजी ५ तोले लेकर एक मिट्टीके पुरवेमें नीचे लोटासजी ऊपर संखिया भरके फिर ऊपर लोटासजी डालकरके ऊपर ढकना देकर सवासेर कोइले जलाकर उनमें उस कुंजको धरदेवो संखिया मरजावेगा जब कि ठंडा होजावे तब निकालकर पीसकरके रखछोडो जिसका बुखार पुराना हो गया हो उसको ६ छः मासे तबाशीर और छः छोटी इलायचीके दाने दोनोंको बारीककरके उसमें आधाचावल संखियाकीराख मिलाकरके पिलादेवे और ऊपरसे आधासेर गौका गरमदूध पिलादेवे फिर यदि घण्टे या आंधे घण्टेके पीछे प्यास या भूख लगे तब फिर तीनपाव या सेर तक गौका दूध उसको पिलादेवे फिर यदि उसको गरमी मालूम होवे तब दो तोले केवडाका अर्क और ३ तोले सन्दलका शरबत उसमें आधपाव पानी मिलाकरके पिलादेवे और ताकतके वास्ते सतावरके चूरणमें खिला करके ऊपरसे दूधको पिलावो फायदा होगा ॥ ११ ॥

बारहवीं रीति

संखिया सुफेद दो तोले लेकरके उसको मदारके दूधमें किसी बरतनमें डुबोदेवे और उस बरतनको २१ दिन जमीनमें दबादेवे फिर उसको निकालकर ऊटकटारकी पावभर राख लेकर उसके ऊपर नीचे दबा करके बीचमें उस राखके संखियेकी डलीको रखे फिर उस बरतनको चूल्हेपर धरके नीचे आगजलायें और जिस जगहसे धुवाँ निकले उस जगहमें उस राखको दबाता जावे क्योंकि थोडीसी राखको पहलेसे ही जुदा रखलेवे जब कि आगको जलाते तीन पहर बीत जावे तब एक लोहेकी सलाईको लेकर राखमें मारे और संखियेकी डलीका हाल मालूम करे जब कि वह लोहेकी सलाई संखियेकी डलीसे पार निकलजाती है या नहीं निकलजाती है नरम है या सख्त है मालूम करे, जब कि डली मोमकी तरह नरम होजावे और सलाई पार निकलजावे तब जानलेना कि तैयार होगया है

परन्तु इसके धुँवेसे जरूर बचना चाहिये क्योंकि इसका धुवां बेहोश करदेता है। फिर ठंडा करके रख छोडे ॥ १२ ॥

तेरहवीं रीति

संखिया सुफेद १ तोला भर लेवे और लालमिरचें ताजी इतनी लेवे जिनमें एक पावभर रस निकल आवे उन मिरचोंके रसमें उसको खरल करके सारे रसको सुखादेवे फिर उसकी छोटी २ टिकिया बनालेवे और सुखाकर फिर उन टिकियोंको एरंडके पत्तोंमें लपेट करके पांच जंगली गोठामें धरके आग देदेवे संखिया मरजावेगा, खुराक इसकी आधा चावल पुराने बुखारवालेको छोटी इलायचीमें तबाशीरके साथ देना ऊपरसे गौका कच्चा दूध जितना पिया जावे उतना पीवे, नजलेवालेको गौके कच्चे दूधकेसाथ दे, गरमी और सुजा कवालेको तुलसीके २ पत्तोंमें धरके देना और ऊपरसे आधा सेर दूध पिलाना अगर उसको गरमी मालूम होवे तब पानीमें बैठजावे फिर आतशक चाहे पुराना हो चाहे नया हो, आंबके आंबी आचारमें रख-करके खिलावे और एक आंब ऊपरसे चूसलेवे तब दस्त आवेंगे अगर गरमी मालूम होवे तब पानीमें बैठे, दमेवाला कच्चे दूधके साथ खावे और दो घंटोंके पीछे गरम दूध पीवे तब उसकी लसदार बलगम दस्तोंके रास्तेसे निकलेगी अगर दूध न मिले तब शरबत या अर्कके साथ देवे, इस रीतिसे संखियेकी तासीर सर्द हो जाती है और कोई वैद्य उसको मीठा संखिया कहते हैं क्योंकि लालमिरच इसकी तलसी और गरमी दोनोंको हटादेती है ॥ १३ ॥

चौदहवीं रीति

एक तोलाभर संखियेको शोधन कर एक मोटे मारू बैंगनमें छिद्र-करके खरल उसके भीतर रखदेवे फिर बैंगनको आगमें भूंजे जब कि ठंडा होजाय तब निकालकर दूसरे बैंगनमें उसी तरह रखकर उसको भी भूने इसी तरह आठ दश बैंगनोंमें करनेसे मरजावेगा पूर्ववाली रीतिसे फिर उसको काममें लावे ॥

संखियेके शोधनकी रीतिको लिखते हैं

संखियेको नींबूके पानीमें खरल करे जब सूखजावे तब फिर डालकरके करे सात पुट देनेसे शुद्ध होयजागा। और कोई २ वैद्य बकरीके दूधमें ऊपरकी रीतिसे सात पुटोंको देकरके शोधलेते हैं। दूसरी रीति इसके शुद्ध करनेकी यह है, आधासेर दूध लेकर एक हाण्डीमें डालकर उसीके ऊपर संखियेको एक तागेसे बाँध करके लटका देवे और तागेका दूसरा सिरा एक लकडीसे बांधकरके उसको हांडीके ऊपर धरदेवे मगर संखिया नीचे हांडीके थलेके साथ न लगे कुछ ऊँचा रहे जब कि आधा दूध सूख जावे तब फिर निकालकर तीन वार इसी तरह करनेसे शुद्ध होजायगा फिर पीछे मारे ॥ १४ ॥

पन्द्रहवीं रीति

बहुतसा पुठकंडा मँगावे इसीका दूसरा नाम चिचडी भी है और इसीका नाम अपामार्ग भी है इसकी पांच सेर राख बना लेवे फिर एक बडी मोटी हांडी लेवे उसके नीचे मिट्टी लगाकरके सुखालेवे उसमें दो सेर राखको डालकरके खूब दबा देवे उसके ऊपर एक तोलाभर शुद्ध संखियेके चार टुकडे करके रखदेवे उन टुकडोंके ऊपर फिर दो सेर राखको डालकरके दबादेवे और एक सेर राखको अलग रखदेवे फिर हांडीको चूल्हेके ऊपर धरकर उसके नीचे नीमकी लकडीको मन्द २ आठ पहरमें जलावे और हांडीकी तरफ देखता रहे जब कि राखसे कहीं भी धुवां निकले तब उस पर उस राखमेंसे थोडा २ दबाता रहे, इसी तरह करते २ जब कि आठ पहर बीत जाय तब आगको बंद करदे जब कि दूसरे या तीसरे दिन हांडी बिलकुल ठंढी होजावे तब निकाल करके ऊपरवाले अनुपानोंसे काममें लावे ॥ १५ ।

खानेकी एक और भी सोलहवीं रीति है

एक तोलाभर संखियाको लेकरके दूधमें पूर्वरीतिसे शोधे। सरदीके दिनोंमें उस डलीको लेकर एक ओरसे साफ कर एक लकीर खैंचे और उसको चाटजावे ऊपरसे दूध, मलाई, घी खावे, इसी तरह एक-महीना तक बराबरही एक लकीर खैंचकर चाटे फिर धीरे धीरे बढाता जावे और सात लकीरोंतक पहुँचादे तो बडी ताकत करेगा।

अब हरतालके मारने शोधनेकी विधिको दिखाते हैं

यह धातु भी आगपर धरनेसे धुवां होकरके उड जाती है और तासीर इसकी गरम और खुश्क है और जिस जगहमें यह जलाई जाती है उस जगहसे मच्छर और मक्खियां सब भाग जाती हैं तेल इसका दादको जल्दी आराम कर देता है अगर इसमें चूना और नौसादर मिला करके इसको बालोंपर लगाया जावे तब सब बाल झड जाते हैं और यह भी एक तरहका जहर है क्योंकि इसके कच्चे खानेसे मनुष्य मरजाता है या सब अङ्गोंपर सूजन आ जाती है इस वास्ते इसको कच्चा कदापि न खावे। फिर यह हरताल पांच प्रकारकी होती है। सुफेद १ जर्द २ सुर्ख ३ सब्ज ४ स्याह ५ और इनमेंसे जो कि जर्द है सो भी दो तरहकी होती है एक तो तबकीया कही जाती है दूसरी खाली जरदीया कही जाती है। तबकीया भी वह अच्छी होती है जो कि जर्दीको लिये हुये तवाली अर्थात् पुडोंवाली होती है। वही सबमें अच्छी होती है और इसीका नाम बरकी हरताल है।

एक तोलाभर तबकीया हरतालको लेकरके एक मिट्टीके पुरवेमें धर देवे और ताकतवाला आदमी उसके ऊपर सबेरे उठते ही उस पुरवेमें पेशाब करे। चौथे दिन खट्टे अनारकी एक छटांक पत्ती लेकर उसको कूटकर उसकी लुगदी बनाकर उसमें हरतालको रखकर फिर संपुट बनाकर उसके ऊपर दो अंगुल मोटा चिकनी मिट्टीका लेप करके फिर सुखा करके पांच सेर गोठोंमें गड्ढा करके फूंकदे जब कि ठंडा हो जावे तब उस हरतालको निकालकरके काममें लावे परन्तु प्रथम उसकी परीक्षा कर लेवे। पुराने ज्वर वालेको एक चावलभर पानके पत्तेमें देवे और ताकतके वास्ते मलाईमें देवे ॥ १ ॥

दूसरी रीति

एक तोला तबकीया हरतालको लेकर प्रथम उसको एक मिट्टीके सकोरेमें घीकुवारके रसमें सात रोजतक भिगोकररखे फिर उसको

घीकुवारकी लुगदीको एक सकोरेमें डालकर संपुट बनाकरके पांच सेर गोठोंमें फूंकदेवे और फिर ठंडा होने पर निकालकरके गोली बनाकर फिर उसी तरह घीकुवारकी लुगदीमें फूंकदेवे तीन चार बार इस तरह पर करनेसे सफेद कुश्ता बनजायगा खुराक इसकी एक चावल भर है ॥ २ ॥

तीसरी रीति

दश सेर इमलीकी छालको लेकरके उसको सुखा करके उसकी राख बना लेवे फिर उस राखको एक मोटी हांडीमें आधी नीचे भर-कर उसपर दो तोला हरतालकी टिकियाको धरकर उसके ऊपर फिर आधी राखको डालकरके खूब दबा देवे फिर हांडीको चूल्हेके ऊपर धरकर बेरकी लकडीकी आग तीन घण्टेतक उसके नीचे जलावे फिर उस हांडीकी राखपर एक तृणको लगा करके देखे जब कि वह तृण जलने लगे तब जानले कि अग्नि ऊपरको आगई है फिर अग्निको बन्द करदेवे जब कि हांडी ठंडी होजावे तब उतार कर उसमें से हरता-लको निकाल लेवे फिर काममें लावे सन्निपातवालेको एक चावलभर पानमें देवे और कुष्ठवालेको भी पानमें देवे और सरदीके दिनोंमें पानमें एक चावलभर खानेसे बल बहुत बढता है ऊपरसे घृत दूध मलाई खाना चाहिये ॥ ३ ॥

चौथी रीति

शुद्ध हरतालको पहले बकरीके दूधमें खरल करके छोटी २ टिकियाँ बनाकर धूपमें सुखा लेवे फिर पलाशकी लकडी इतनी जला करके राख बनावे कि एक हांडी भरजाय आधी राखको हांडीमें दबाके ऊपर हरतालकी टिकियाको धरकर आधी राखको उसके ऊपर दबा-देवे और कुछ राखको लेकरके जुदा रख छोडे फिर हांडीको चूल्हे-पर चढाकर नीचे अग्नि जलादे परंतु धुवाँ न निकलने पावे बराबरकी आग रखे यदि कहीं जरासा धुवां निकले तब उसपर राखको दबा-करके बन्द करदेवे आठ पहरतक बराबरही आगको जलावे फिर बन्द करदेवे जब कि ठंडी होजाय निकालकर काममें लावे हरतालका रंग

सपेद होजायगा । कुष्ठकी बीमारीवालेको गुड या मक्खन या पानके साथ खिलावे ऊपरसे चनेकी दाल और रोटी खावे या साठीके चावलोंको खावे और पुराना तप और गठिया और आतशकभी इससे दूर होजायगा ।। ४ ।।

पाँचवीं रीति

दो तोले शुद्ध तबकीया हरतालको लेकरके केलेकी जडको निकालकर उसमें हरतालको धरकर उसपर कपडमिट्टी करके सुखाकर गजपुटमें फूँकदेनेसे भस्म होजायगी फिर पूर्वरीतिसे काममें लाना ।। ५ ।।

छठी रीति

छटांक भर हरताल तबकीयाको लेकरके अपने पास रखलेवे और चौपतिया बूटीकी आधासेर लुगदी बनालेवे फिर एक छोटी हांडी लेकर उसमें आधी लुगदी दबाकर उसपर हरतालके टुकडोंको धरकर बाकीकी लुगदीको उसके ऊपर दबाकर फिर संपुट बनाकर सुखाकर फिर एक मनभर बकरीकी मेंगनीको लेकरके एक गड्ढा खोदकर उसमें उस संपुटके नीचे ऊपर मेंगनीको भरकर फूँकदेवे बारह पहरके पीछे जब कि आग ठंढी हो जाय तब निकालकर परीक्षा करके रखदेवे फिर काममें लावे ।। ६ ।।

सातवीं रीति

एक तोले तबकीया हरतालको शोधकर फिर तीन ३ तोले कंजा और ३ तोले फिटकरी लेवे पहले कंजेको कूटलेवे फिर फिटकरीको भी पीसलेवे फिर मिट्टीकी एक छोटीसी डली लेवे उसमें आधा कंजा डाले उसपर आधी फिटकरी डाले उसपर हरतालकी डलीको रखे फिर उसपर फिटकरीको डाले उसपर कंजाको डालकर उसका संपुट बनाकर सुखाकर दशसेर जंगली गोठोंमें उसको फूकंदेवे जब कि ठंडा होजाय तब निकालकर पीसकर शीशीमें डालरखे ताकतके वास्ते मलाईमें देवे और कुष्ठवालेको पानके पत्तेमें आधी रत्ती चालीस दिनोंतक बराबर खिलानेसे अच्छा होजाताहै ।। ७ ।।

अब हरतालके शोधनकी रीति लिखते हैं

दश १० तोले तबकीया हरताल लेवे और एक तोला सुहागा लेवे दोनोंको मिलाकर उसको मोटे कपडेके चार टुकडोमें चार पोटलियां बांधे फिर एक मोटी मिट्टीकी हांडी लेकर उसमें १ पावभर नींबूका रस निकालकर डालदेवे और हरतालकी चार पोटलियोंको तागोंके साथ बांधकर उस हांडीमें लटकादेवे फिर उसके नीचे तेज अग्निको जलाये परंतु वे पोटलियां नीचे हांडीके थलेके साथ लगने न पावें फिर इसी रीतिसे सिरकेमें उनको पकावे फिर तिलोंके तेलमें फिर त्रिफलाके काढेमें उनको पकावे फिर हरताल शुद्ध हो जायगी ।

सफेद गोदन्ती हरतालकी रीति

एक छटांक सफेद गोदन्ती हरतालको लेकर एक सकोरेमें घी-कुँवारका गूदाभरकर उसमें हरतालको रखकर संपुटबनाकर पांच सेर गोठोंमें रखकर फूँकदेवे जब कि ठंडा होजाय तब पीसकर शीशीमें डालकरके धरदेवे बलगमी खांसीवालेको पानके पत्तेमें एक चावल-भरसे एकरत्तीतक सात रोजतक खिलावे दमेवालेको आधी रत्ती पानके पत्तेमें इक्कीसदिनोंतक बराबर खिलावे और जाडेके बुखार-वालेको आधी रत्ती तीन दिनतक खिलावे ॥ १ ॥

दूसरी रीति

एकतोला हरतालको छटांकभर नीमकी पत्तीकी लुगदी बनाकर एक सकोरेमें संपुट बनाकर तीन सेर गोठोंमें फूँक देवे मर जायगी फिर काममें लेना । जो धातु फूँको तुरन्त मत खावो कमसे कम एक सालके पीछे काममेंले जितनी पुरानी होवेगी उतनी ही गुणकारी होवेगी॥२॥

अब पारेकी विधिको लिखते हैं

पारेकी खान चीनदेशमें है और उसी जगहसे इस देशमें आता है यह धातु तोलमें सब धातुओंसे भारी होता है बांधना और मारना इसका बडा कठिन है क्योंकि यह बहुत जल्दी भाग जाता है और सफेद अबरकसे और शिगरफसे भी इसको हकीम लोग निकालते हैं इसके शोधनेकी यही रीति है पारेको लेकरके एक मोटे कपडेमें

निचोडकर निकाल लेवे तीन चार वार ऐसा करनेसे यह शुद्ध होजाता है या घीकुवारके गूदामें पारेको खरल करे फिर उसमेंसे निकाल लेवे शुद्ध होजायगा ।

मारणकी एक रीति यह है

रँगेका एक संपुट बनवावे जिसमें आधा पावभर मेंहदीकी लुगदी आजाय उस संपुटमें आधी लुगदी नीचे डालकर उसके ऊपर एक तोला पाराको धरकर बाकी लुगदी ऊपर डालकर संपुटको बराबर करके फिर खमवा देवे फिर उस संपुटके ऊपर एक अंगुल मोटा मेंहदीका लेप करदेवे फिर दो गोबरकी पाथी चार अंगुल मोटी और दो बालिश्त चौडी थाप करके सुखा लेवे फिर दोनों पाथियोंके बीचमें इतनी खोदे कि जिसमें वह संपुट बराबर आजाय और दो पाथियोंको साफ पत्थर पर घिसे जिसमें कि वह बराबर मिलजाय फिर उन दोनों पाथियोंमें संपुटको धर करके पाथियोंको बराबर मिलाकर पृथिवी पर धरकर उनके गिरदे और ऊपर दो सेर गोइठा रखदेवे फिर आगको लगादेवे जब कि ठंढा होजाय तब वह रांगा गल करके नीचे बैठजायगा और मेंहदीका गोला जुदाही खडा रहेगा उसमेंसे पारेको निकाल लेवे पारा खिल जायगा आधा चावलभर इसकी खुराक है या चावल भर हद्द है । ताकतके वास्ते मलाईमें खावे ऊपरसे घृत दूध बहुतसा खावे और वह रांगाभी मर जायगा उसको जुदा शीशीमें डालकरके रखना वह भी अनेक रोगोंपर काम देगा, उसके अनुपात रांगा मारणके प्रकरणमें लिखे हैं ।। १ ।।

दूसरी रीति

शुद्ध पारा ३ मासे, आवलासार गन्धक ६ मासे, कुलंजनकी जड अर्थात् पानकी जड ४ मासे, पहले पारा और गन्धकको दो पहरतक खरल करे फिर कुलंजनको महीन कूटकर उसमें मिलाकर दो घण्टा-तक बराबरही खरल करे, खुराक इसकी एक रत्तीसे लेकरके एक मासे तक है, ऊपरसे मिश्री डालकरके गौका दूध जितना पिया जाय पीवे, बडी ताकत करेगा ।। २ ।।

तीसरी रीति

ताकतके वास्ते और आतशक तथा कोढकी बीमारीके वास्ते भी बहुत फायदा करता है, दो तोले पारा लेकर खरलमें डालकर फिर गूलरके दूधमें एक पहर बराबर उसको खरल करे, फिर उसकी गोली बनाकर सुखा लेवे फिर आधी छटांक उमदा हींग लेकरके उसको भी गूलरके दूधमें खरल करके उसकी दो छोटी छोटी कटोरियाँ बना लेवे और पारेकी गोलीको दोनों कटोरियोंके बीचमें रखकर दोनोंको मिलाकर उनके मुखोंको जोडकर सुखालेवे फिर उसके ऊपर नरम कपडा लपेटकर उसके ऊपर नरम मिट्टीका लेप करके फिर जिस जगहमें हवा न लगे उस जगहमें एक सेरभर जंगली गोठोंकी अग्निमें पकावे तब पारा खिल जायगा, सब रोगोंपर यह काम देगा, खुराक इसकी चौथाई चावल है ।। ३ ।।

चौथी रीति

एक तोला शुद्ध पारा और एक तोला आंवलासार गंधकको लोहेके बरतनमें डालकर अग्निके ऊपर रखदो जब कि गन्धक गलजाय फिर उसमें पारेको डालकरके हिलादेवे राख होजायगी फिर उसी राखके बराबर अकरकरा पीसकर उसमें मिलाकरके रखछोडो । एक चावलभर मक्खनके साथ खावे ऊपरसे गौके घृतको गौके दूधमें मिला कर उसमें मिश्री डालकरके पीवे बडी ताकत होगी ।। ४ ।।

पारा शोधनेकी दूसरी रीति

चीता राई पीपल कालीमिरच सोंठ और सांभरनमक इन सबको बराबर लेकर पारेके साथ खरल करे उसमें नींबूका रस छोडे तीसरे दिन दवाको बदलता रहे दो एक दिनमें पारा शुद्ध होयगा ।

गंधकके शोधनेकी रीति

एक मिट्टीकी हांडीमें गौका दूध आधासेर डालकर उस हांडीके ऊपर बारीक कपडा बांधो फिर उसके गिरदेमें आटेकी या मिट्टीकी दो अंगुल ऊंची कंद बनाकर उस कपडेपर आँवलासार गंधक रक्खो फिर उसके ऊपर एक छोटासा तवा रखकर उसके ऊपर अग्निके जलते हुये

कोयले धरदेवो गंधक सब पिघल करके दूधमें जारहेगा फिर उसी तरह तीन बार करो कोई सात वार करते हैं गंधक शुद्ध होजाता है ।१।

दूसरी रीति

एक बरतनमें गौका दूध पास रखलेवे और लोहेकी कलछीमें घृत थोडा रख उसमें आँवलासारगंधकको डालकरके आगपरधर-दो जब कि गंधक पिघल जाय तब दूधमें छोड देवे गंधक शुद्ध होजा-यगी फिर काममें लावो ॥ २ ॥

रांगा मारणकी विधि

यह धातु वीर्यको गाढा करता है और बंधेजको भी करता है । पुराने तापको भी दूर करता है और सुजाकको भी हटाता है । पहले दस तोला शुद्ध कलीको लेवे और तीस तोले भांगकी पत्तीको लेवे और पीपलकी छाल साठ तोले, इसको सुखा करके कूट लेवो और रांगाके बारीक पत्र बना लेवे । पहले एक टाटके टुकडेके ऊपर पीपलकी छालका चूर्ण बिछादेवे फिर उसके ऊपर रांगाके पत्रोंको जोड देवे उसके ऊपर भांगकी पत्तीका चूर्ण डालदेवे उसपर फिर पीपलकी छालका चूरण बिछादेवो फिर उस टाटके टुकडेको पूणीकी तरह लपेट लेवे और कसके बांधदेवे और फिर गजपुटकी आगमें फूँकदेवे अर्थात् गजभर चौडा और गज भर गहरा गढा बनाकर उसमें फूँकदेवे जब कि ठंडा होजाय तब निकालकरके खर-लमें महीन करके काममें लावे । बलगमी खांसी और पुराने दमेके वास्ते भी बहुत फायदामंद है । पानके रसके साथ एक रत्तीभर देवे या अदरकके पानीके या सहदके साथ देवे और सुजाकवालेको चिर-चिटेके साथ या कबाबचीनीके साथ देवे और पतले वीर्यवालेको ताल-मखानाके साथ देवे ॥ १ ॥

रांगाके शोधनकी विधि

मिजाज इसकी सरद और खुश्क है रांगाको गलाकर भँगरेके रसमें फिर सरसोंके तेलमें फिर गौके दहीमें फिर अंडीफलमें फिर नींबूके पत्तोंके रसमें अर्थात् ऊपरवाले हरएकमें सात २ बार बुझानेसे रांगा शुद्ध होजावेगा ॥ २ ॥

अभ्रककी रीति

इसकी खान नजीमाबादमें है यह आगपर रखनेसे जलता नहीं है किन्तु फूल जाता है और तासीर इसकी सरद वा खुश्क है और राख इसकी सुजाक तपेदिक और कमजोरीको दूर करती है यह अभ्रक तीन प्रकारका होता है सफेद काला और लाल। तीनोंमें सफेद अच्छा होता है। प्रथम रीति

एक छटांक अभ्रकको लेकर कैंचीसे उसको महीन करलेवे फिर एक पावभर कलमी शोरा लेकर उसको पीसकर पुराने गुडके रसमें या मूलीके पत्तोंके रसमें भिगोकर फिर एक मिट्टीका सकोरा लेकर उसमें एक तह शोरेकी फिर अभ्रककी फिर शोरेकी फिर अभ्रककी फिर शोरेकी देकर ऊपर ढकनीसे बंद करके संपुट बनाकर कपडमिट्टी दो अंगुल मोटी करके फिर गढेमें छः सेर गोठोंमें फूँकदेना जब कि ठंडा होजाय फिर उसी तरह शोरा देकरके पूर्वकी तरह संपुट करके चार बार फूंकना तब उत्तम कुश्ता (भस्म) बन जायगा-पुराने बुखारवालेको सुजाकवालेको कमजोर-दिमागवालेको एक रत्ती बतासेमें देना और ताकतवालेको मलाईमें देना ऊपरसे घृत दुग्धका सेवन करना ॥ १ ॥

दूसरी रीति

बथुवेके सागका एक पावभर रस निकाल करके उसको एक मिट्टीके पुरवेमें डालकरके बीचमें एक छटांक भर सफेद अभ्रकके टुकडे करके छोडदेवे फिर एकसेर भर गोठोंकी अग्नि देवे इसी तरह चालीस बार बथुवेके सागके रसमें पुट देनेसे वह मरजायगा। यह सबसे अच्छा होता है। वात, सुजाक, जुकाम, पुराना ज्वर, खांसी, सरदर्द और खूनी बवासीर इन सब बीमारियोंको फायदा करता है एक रत्ती बतासेमें देनेसे तुरंत ही आराम होजाता है ॥ २ ॥

तीसरी रीति

एक छटांकभर अभ्रकको लेकरके एक मिट्टीके सकोरमेंपावभर दही छोडकर उसमें अभ्रक छोडदेवे फिर तीसरे दिन पावभर दही उसमें छोडदेवे फिर ऊपरसे ढकना देकर एक सेर गोठोंकी आग देवे इसी तरह दही छोडकर २१ पुट अग्निपर देनेसे वह भस्महोजायगा ॥ ३ ॥

अब काले अभ्रककी मारनेकी विधि दिखाते हैं

एक पावभर काला अभ्रक लेकर उसको अग्निमें तपा करके गोमूत्रमें ११ बार बुतावे फिर चौराईकी पत्तीके रसमें ११ बार बुतावे फिर खटाईमें ११ बार बुतावे फिर उसके छोटे २ टुकडे बनाकर एक मोटे कंबलके टुकडेकी थैलीमें उनको धरकर ऊपरसे पानीकोछिडकते जाना और पैरोंसे उस थैलीको मलते भी जाना जब कि बारीक हो जाय तब उसको निकालकर मदारके दूधमें खरल करके फिर उसको टिकिया बनाकर उसपर मदारके रसका लेप करके फिर कपरोटी करके गजपुटमें उसको फूंकदेवे इसी तरह ११ बार मदारके दूधमें खरल करके टिकिया बना करके फिर थोहरके दूधमें संपुट बनाकर ११ बार फूंको फिर घीकुवारके अर्कमें फिर चौराईके रसमें फिर नागरमोथाके काढेमें फिर कांजीमें फिर छत्तरा नींबूके अर्कमें फिर त्रिफला के काढेमें हर एकमें११बार फूंको तब यह असली तैयार होजायगा। नामर्दको १ रत्ती मक्खनमें और जिसकी धातु क्षीण होती हो उसको बतासामें १ रत्ती देना अच्छा हो जायगा ॥ १ ॥

चान्दी मारणकी विधि

एक तोलाभर चांदीका बुरादा बनवाकर पावभर नींबूके रसमें उसको खरल करो फिर उसकी गोली बनवाकर फिर उसको आकाशवेलकी लुगदीमें उसका संपुट बनवाकर फूंक देवे भस्म होजायगी ॥ १ ॥

दूसरी रीति

त्रिधारा थोहरमें चाकूसे छेद करो अर्थात् एक लकीर खेंचो उसमें जो दूध निकले उस १ पावभर दूधको बरतनमें निकाल लेवे और चांदीका एक पतला पत्र बनवाकरके उस दूधमें ४० बार बुताओ फिर उसी त्रिधाराकी छोटी २ पत्तीको आधपाव लुगदी बनाकर चांदीके पत्रको उसमें धरकर ऊपर उसके कपडमिट्टी करके पांचसेर मोटे गोठोंमें गढा करके फूँक देवे भस्म होजायगी अगर कुछ रहजावे तब फिर इसी तरह उसकी लुगदीमें संपुट बना करके फूँको मर जायगी ॥ २ ॥

तीसरी रीति

एक बूटीका नाम सिंही त्रिपति है उसकी ऊँचाई हाथभरकी होती है और नीमकी पत्तीकी तरह उसकी पत्ती होती है उस बूटीकी पत्तीकी एक छटांक भर लुगदी बनाकर और १ तोला भर चांदीका पत्र बारीक कर उस लुगदीमें लपेटकर गोली बनाकर दो बारीक कोठोंमें रखकर ऊपर चारसेर गोठे उसके रखकर आग लगा देवे भस्म हो जायगी ।

चौथी रीति

एक पावभर कुडासको पसारीसे लेकर उसमें जरासा पानीडालकर उसको पीसकर उसकी लुगदी बनालेवे फिर दूधिया बूटीकीछटांकभर लुगदी बनालेवे फिर १ तोलाभर चांदीको कूटकर पत्र बनाकर पहले पत्रके ऊपर बूटीकी लुगदीको लपेटो फिर उसपर कुडासककी लुगदीको लेप करके संपुट बनालेवे फिर २० सेर गोठोंको गढेमें रखकर उसमें संपुटको रख करके फूँकदेवो अगर कसर रहे तब फिर इसी तरह फूँको मर जायगी ।। ४ ।।

पाँचवी रीति

एक तोला चांदीका पत्र बनवाकर उसको शोधकर पास रक्खो फिर १ तोला पारा और १ तोला आंवलासारगन्धक दोनोंकी खरलमें कजली बनावो फिर दूधिया बूटीकी पत्तीकी १ छटांकभर लुगदी बनावो पहले एक कपडेके टुकडेको बिछाकर उसके ऊपर आधी कजली धरकर उसपर चांदीकी पत्तीको धरकर फिर उसको कपडेसे लपेटकर फिर एक सकोरामें आधी लुगदी नीचे रखकर ऊपर कजलीके गोलेको धरकर ऊपर बाकीकी लुगदीको रखकर ढकनीसे बन्द कर संपुट बनाकर दश सेर गोठोंमें धरकरके फूँक देवे राख होजायगी ।। ५ ।।

पारा मारणकी विधि

एक तोलाभर पारा लेकर उसको शोधलेवो फिर एक रोदन्ती नामवाली बूटी पानीके समीप होती है, ऊँचाईमें बित्ता या डेढ बित्ताकी होती है, चनेके पत्तेकी तरह इसके पत्ते होते हैं जडकी डण्डी इसकी लाल होती है,इसके पास चींटियाँ बहुत रहती हैं उसकी

पत्तीकी लुगदी बनाकर उसमें पाराको धरकर दो बडे गोठोंमें रख-कर उसको फूँक डालो भस्म हो जायगी ॥ ६ ॥

चान्दी मारणकी रीति

१ तोला चांदी शुद्ध और तबकीया हरताल शुद्ध १ तोला, सोना-मक्खी १ तोला, शुद्ध आंवलासार गंधक १ तोला इनको घीकुवारके रसमें खरलकरके फिर चांदीके पत्रभर लपेटकर फिर सकोरेमें संपुट बनाकर गजपुटकी आगमें फूँक देवे। एक चावलसे आधी रत्तीतक इसको मुनासिब अनुपानके साथ देवे ॥ ७ ॥

फोलाद मारणकी विधि

यह सब रोगोंपर काम देती है। दिल और दिमागको ताकत देती है। शुद्ध खूनको पैदा करती है। तीन तोले शुद्ध फोलादको लेकर उसका चूरण बनवावे और उसको चीनीके प्यालेमें डालकर उसके ऊपर जामुनके दरखतका रस छोडे जामुनके दरखतका उस पर इतना रस छोडे कि दो अंगुल ऊपर रहे और धूपमें उसको धरदेवे और फिर तीसरे दिन उसके ऊपर और रस छोडे जो सूख न जावे सात रोजतक धूपमें रक्खे फिर उसको त्रिफलाके- रसमें खरल करके उसकी टिकिया बना लेवे उसको मिट्टीके सकोरेमें डालकर बनाकर फिर गजपुटमें उसको फूँकदेवे भस्म होजायगी। खुराक आधी रत्तीसे १ रत्ती तक जिगरकी बीमारीवाले और गरमीवालेको अनारके सरबतके साथ या सिकंजीके साथ देवे गरमी हट जायगी। १ रत्ती गौकी छाछके साथ खानेसे अनेक रोग दूर होते हैं ॥ १ ॥

दूसरी रीति

आधापाव फोलादको शोधकरउसका बुरादा बनवाकर रक्खे। हर्र, वहेडा,आँवला इन तीनोंका नाम त्रिफला है फिर आधासेर त्रिफलाको लेकर एक मिट्टीके नाँदमें दो या तीन सेर पानी डाल देवे और उसको ज्येष्ठ वैशाखकी धूपमें धर देवे और एक लोहेकी करछीसे उसको दिनमें चार पांच दफे हिला देवे मगर करछी उसीमें रक्खीरहे जब कि उसका पानी सूख जायगा तब वह करछी भी उसीमें गल

जायगी फिर उसकी छोटी २ टिकियाँ बनाकर एक छोटी हांडीमें उनको भरदेवे उस हांडीमें पांच या दस बारीक २ छिद्र करके उसपर ढकना देकर उसको एक गढेमें बीस सेर गोठोंमें धरकर फूँकदेवे मर जायगी निकालकर काममें लावे और खरलमें पीसकरके धर रक्खे जिसको दस्त आते हों उसको बेलके सरबतमें देवे और मंदाग्निवालेको मट्ठेमें देवे, खांसीवालेको शहदमें, आतशकवालेको मलाईमें, एक रत्ती इसकी खुराक है ।। २ ।।

तांबेकी मारणकी रीति

शुद्ध तांबेका एक पत्र १ तोलेका लेवे और नौसादर ६ तोले सफेद घास ४० तोले पहले नौशादरको पानीमें घिसकरके तांबेके पत्तेके ऊपर गाढा लेप करदेवे फिर उस सफेद घासकी लुगदी बनाकर उसमें लेप किये हुये तांबेके पत्रको धरकर सुखा लेवे और डेढतोला भर पुराने कपडेके टुकडे लेकर उसगे ऊपर लपेटकर फिर उस गोलेको सरसोंके तेलमें तर करदेवे फिर एकांत जगहमें धरकर उसको आग लगा देवे तीसरे दिन जब कि ठंडा होजावे फिर देखे वह मरजायगा अगर कुछ कच्चा रहजावे तब फिर उसी तरह अग्नि देवे मरजायगा ।।

दूसरी रीति

शुद्ध तांबेका १ तोला चूरण बनावे और १ तोला शुद्ध शिंगरफ, १ तोला मैनशिल इन तीनोंको दो रोज तक रगडके टिकिया बनावे फिर एक कोरे सकोरेमें धरकरके संपुट बना गजपुटमें फूँक देवे अगर कुछ कसर रहे फिर इसी तरह अग्नि देवेमरजायगा और रंगभी इसका सफेद होवेगा इसकी खुराक १ रत्ती या आधी रत्ती है ।। २ ।।

तीसरी रीति

१ तोला तांबा, १ तोला बरकी हरताल, १ तोला आंवलासार गन्धक, पहले हरताल और गन्धककी कजली बनावे फिर एक कपडेके टुकडेके ऊपर आधी कजलीको बिछाकर उस पर तांबेंको धरकर उसके ऊपर बाकीकी कजलीको डालकर फिर कपडेको लपेटकर फिर पुठ-गंडाकी लुगदी एक १ छटांक लेकर एक मिट्टीके सकोरेमें आधी नीचे डालकर उसपर उस गोलेको धरकर आधी लुगदी ऊपर डालकर फिर

संपुट बनाकर कपडमिट्टी करके फिर गढा खोदकर दश सेर गोठोंमें फूँकदेवे भस्म होजायगा ॥ ३ ॥

लोहा मारनेकी रीति

शुद्ध लोहेका चूरण ५ तोले बनवाकर उसको गौके ११ तोले दहीमें भिगो करके धूपमें धरदेवे जब कि सूखजाय तब फिर उसमें ११ तोले दही मिलादेवे जब कि सूखजाय तब उसकी टिकियाँ छोटी २ बनालेवे फिर उनको मिट्टीके पुरवेमें डालकर संपुट बनाकर गजपुटमें फूँकदेवे फिर खरलमें डालकर सुरमेकी तरह बनाकर रख छोडना खुराक इसकी एक चावलसे दो रत्ती तक है ॥ १ ।

दूसरी रीति

५ तोले शुद्ध लोहेका चूरण बनाकर उसको खूब गरम करके सिरकेमें छोड देवे । एक हफ्ताभर वह सिरकेमें डूबा रहे फिर उसको सिरकासे निकालकर गौके घृतमें मिलाकर पानीमें भिगो देवे । ऊपरवालेको निकाल करके फेंकदेवे । नीचे जितना बैठा हो उसको रखले और फिर उसको कलछीमें धरकरके सात बार पानीमें बुझावे मगर पानी बदलता रहे फिर खरलमें पीस करके काममें लावे ॥

सीसेकी मारनेकी विधि

शुद्ध सीसा १० तोले और आंवलासार गन्धक १० तोला, गन्धकको पीस करके चूरण बनाले पहले सीसेको कढाईमें पिघलावे और गन्धकका चूरण उस पर थोडा२ छिडकता जाय और नीमकी लकडीसे हिलाता जावे मगर उसके धूवेंसे बचे जब, कि सारी गन्धक राख होजाय सीसा मर जायगा फिर उसको खरल करके शीशीमें डाल रक्खे । खुराक १ रतीसे दो रती तक देवे यह कुशता (भस्म) नेत्रोंसे रोगवाले और धातुक्षीणवालेको बडा फायदा करता है । गरमीवालेको अदरकके पानीके साथ या शहदके साथ देवे ॥ १ ॥

सोनेके शोधनेकी रीति

१ तोला सोनेके पत्र बनाकर एक लोहेकी डेगमें लटकाकर दो तोले तिलोंका तेल उसमें डालकर पकावे फिर चार तोले गौकी छाछको उसमें मिलाकरके पकावे फिर चार तोला सिरका उसमें

डालकर पकावे फिर मुलेठीके कषायमें फिरत्रिफलाके कषायमें सुखावे फिर भंगरेके पानीमें सुखावे फिर बच्छनागके काढेमें सुखावे फिर गोभीके पानीमें सुखा वे फिर दारुहलदीके पानीमें सुखावे अर्थात् ऊपर कहे हुये पानी सब सोनेसे दश २ गुना होवे तब शुद्ध हो जायगा।

सोना मारणकी विधि

सोनेको शोधकर १ तोलाभर फिर उसका पत्र बनवाकर फिर दोमासे शुद्ध सोनामक्खी लेकर उसको नींबूके पानीमें रगडकर सोनेके पत्रपर उसका लेप करे फिर संपुटित करके गजपुटकर आगमें फूँकदेवे, फिर दूसरी बारभी सोनामक्खी दो मासे लेकर नींबूके रसमें रगडकर संपुटित फूँकदेवे जब तक न मरे इसी तरह कर संपुट देता रहे मर जायगा। यह कुश्ता यानी भस्म दिल और दिमागको और जिगर तथा मेधाको और गुरदेको भी ताकत देता है यह बहुत उत्तम भस्म है ॥ १ ॥

अनुपानोंको संक्षेपसे दिखाते हैं

चाँदीकी भस्मको घृत या मक्खनमें खानेसे कांति और क्षुधा बढती है। तांबेकी भस्मको संपूर्ण रोगोंपर छोटी पीपल या शहदके साथ खाना गुणकारी होता है, रांगाकी भस्म शहदके साथ बलको बढाती है और पीपलके साथ मंदाग्निको दूर करती है औरसुपारीके साथ अजीर्णरोगको दूर करती है और लोहेकी भस्म सोंठ मिर्च और पीपलके साथ संपूर्ण धातुओंके विकारोंको दूर करती है। पारेकी भस्म सौंचलनमक और अजवायनके साथ मंदाग्निको दूर करती है क्षुधाको बढाती है और गिलोयके सतके साथ खानेसे पुष्टि करती है अभ्रककी भस्म, पीपल और शहदके साथ १ रत्तीसे ६ रत्तीतक खानेसे प्रमेह, श्वास, विष, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, खाँसी क्षीणता, क्षयी, व्रण, संग्रहणी, पांडू, भ्रम, कामला, गुल्मादि सब रोगोंको दूर करती है। प्रातःकाल अभ्रककी भस्मको पीपल और शहदके साथ सेवन करनेसे २० प्रकारके प्रमेहरोग दूर होते हैं ॥ १ ॥

मुरदाशंख के मारने की विधि

मुरदाशंख दो तोले लेवे और एक पावभर भंगके पत्तोंको कूटकरके

उसकी लुगदी बनावे उसमें मुरदाशंखको धरकर संपुट बनाकर चार-पाथियोंमें फूँकदेवे । इसी तरह भांगकी लुगदीमें ३ बार आग देनेसे मर जायगा । खुराक इसकी १ चावलसे १ रत्ती तक है मक्खनमें या बतासेमें देवे जिसको साँप काटे उसके नेत्रोंमें डाले और मुखमें भी डालदेवे अच्छा हो जायगा और जिस बालकके दस्त लगजावें उसको भी फायदा करेगा ॥ १ ॥

दूसरी रीति

शुद्ध मुरदाशंख १ तोले, लहसनकी गिरी१ तोला, मदारका दूध १ तोला पहले लहसनको मदारके दूधमें खरल करके लुगदी बनालेवे उस लुगदीमें मुरदाशंखको धरकर संपुट बना कर आधा सेर गोठोंमें फूँकदेवे इसी तरह सात बार फूंकनेसे मर जायगा खुराक इसकी आधा रत्ती मक्खन या बतासेके साथ देवे बलगम और बाईकी बीमारियोंको दूर करेगा और बादी बवासीरको भी फायदा करेगा और पेटके क्रिमियोंको भी मारेगा और सुजाकको भी मारेगा और सुजाककोभी फायदा करेगा ॥ २ ॥

मुरदाशंखका शोधन

१ मरदाशंखको धतूरेके रसमें चार पहर खरल करके सुखावे तब शुद्ध होजायगा ॥ २ ॥

वरकिया हरतालकी विधि

१ तोला वरकिया हरतालको लेकरके पहले शोधले फिर लोदको जलाकरके एक सेर भर उसकी भस्म बनाले फिर कढाईमें डेढपाव भस्म डाल कर उसपर हरतालकी डलीको रखकर फिर उसके ऊपर डेढ पाव भस्म डालकर दबाकर नीचे दो पहर तक बराबरकी आग देवे बेरकी लकडी जलावे जहां पर धुवां निकले राखसे दबाकर बंद करता जावे फिर एक तीला ऊपर लगाकरके देखे जब कि तीला जल जावे जाने,अब आग ऊपर आगई है फिर अग्निको बंद करदेवे फिर ठंडा करके निकाल लेवे पूर्ववाले अनुपानके साथ काममें ले ॥१॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण विरचिते गुणोंकीपिटारीनामकग्रन्थे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय

अब उन चीजोंके बनानेकी रीति लिखते हैं जिनको बनाकर बेंच-नेसे पुरुष अपनी जीविकाको अच्छी तरहसे करसकता है ।

स्याह बारनिशका बनाना

अलसीके तेलको खूब जोश देकर इसमें मुरदाशंखको घिस करके डालो फिर उसमें काजलको मिलाकरके रक्खो जिस चमडेके जूतेपर लगाओगे वह चमकदार होकर नयासा बन जावेगा ॥ १ ॥

सिंदूरका बनाना

अंग्रेजी मुरदाशंखको लोहेकी कढाईमें डाल करके उसके नीचे खूब आग जलानेसे सिंदूर बन जायगा ॥ २ ॥

रसकपूरका बनाना

गुलेअरुमनी १ तोला । कसीस २ तोले । लाहौरी नमक १ तोला । पारा दो तोले इन सबको एक खरलमें खरल करके फिर एक बर्तनमें डालकर आठ पहर अग्निपर पकानेसे रसकपूर बन जावेगा ॥ ३ ॥

जिंगारका बनाना

तांबेका बुरादा बनवाकर इसमें तेजसिरका और नौशादर डालकर फिर उसको किसी बरतनमें रखकर जमीनमें दबादेवे अगर आपसे आप खुश्क हो आवे तब अच्छा, अन्यथा अग्निपर सुखानेसे जिंगार बन जायगा ॥ ४ ॥

नीले थोथेका बनाना

तांबेके बुरादामें बहुतसा खट्टा दही छोडदेना जब कि सूख जायगा तब नीलाथोथा बनजावेगा ॥ ५ ॥

हीराकसीसका बनाना

लोहेका बुरादा बनाकर एक बरतनमें डालकर उसके ऊपर पारा और गंधकका तेजाब छोडकर थोडासा पानी भी उसमें मिलादेवे जब कि बुरादा गलजावे तब उसको आगपर रखकर पानी और तेजा-बके सुखानेसे हीराकसीस बनजायगा ॥ ६ ॥

शहद बनाना

एकसेर रशाखतमीको किसी बर्त्तनमें आठ पहर भिगोदेवे फिर इसका लुहाब निकालकर अच्छी खाँडकी चाशनीमें मिलादे शहद बन जायगा ॥ ७ ॥

जवाखारका बनाना

जौके पौधोंको पत्ती और डंडी समेत सुखाकर आगमें जलावो फिर उसको पानीमें घोल करके दो रोज तक रख छोडो फिर उसको मोटे कपडेमें डालकर जैसे कुसुंभेका रंग निकाला जाता है वैसे ही नीचे एक बर्त्तन रखकर उसको टपकालेवे फिर उस टपके हुयेपानीको कढाईमें डाल करके आगपर चढादेवे जब कि सब पानी जलजायगा तब असली जवाखार बन जायगा इसीतरह मूली वगैरहकी भी खार बनालेना ॥ ८ ॥

खांडके खिलौने बनानेकी रीति

पहले खांडको गोंदके पानीके साथ हाथोंसे खूब मलो फिर सांचोंमें दबाकर खिलौने बनालेवो ॥ ९ ॥

नमक सुलेमानीका बनाना

सौंफ, बडी इलायचीके दाने, कालीमिरच, दालचीनी,सोंठ, पीपल, सूखापोदीना यह सब एक मासा । लाहोरी नमक, काला नमक, सुहागा, भूँजा हुआ हर्र एक एक तोला, नौशादर आठ तोला सबको कूट छान करके रख छोडे बस नमक सुलेमानी बनगया ॥ १० ॥

नमक सुलेमानीकी दूसरी रीति

सांभर नमक, कालानमक, नौशादर, हर्र एक एक तोला, सूखा पोदीना एक छटांक, मूलीखार १ छटांक, फिटकरी आधा तोला सबको कूट छानकर उसमें पावभर पानी मिलाकर हांडीमें डालकर उसका मुंह बंद करके चार रोजतक रख छोडो फिर निकालकर किसी बोतलमें धरकर काममें लावो ॥ ११ ॥

हींगका बनाना

एकसेर भेडीके दूधमें तोला हींगको डालकर मिट्टीकी हांडीमें रख-

कर फिर उसको जमीनमें दाबदेवे इक्कीस दिनमें इसका खमीर उठ आवेगा उसको फिर सुखालेवे हींग बनजायगी ।। १२ ।।

दांतोंपर मलनेवाली लाल मिसीका बनाना

कत्था मंजीठ सुपारीका सफूफ पीले बहेडेका पोस्त अकरकरहा शबेयशमानी भूँ जी हुई रूमीमस्तंगी सबको बराबर लेकरके सफूफ बनालेवो ।। १३ ।।

कपूरका अर्क बनाना

छः मासा अजवाइनका सत, एक तोला कपूर, दोनोंको एक शीशीमें छोड करके पांच मिनट धूपमें धरदेवे बस अर्क बन जायगा ।। १४ ।।

कपूरका तेल बनाना

एक तोला कपूरको टुकडे २ करके धोई तिलीका तेल १ छटांक लेकर उसमें डालकर चार पांच रोजतक उसको बराबर ही हिलाता रहे तेल बन जावेगा यह तेल जोडोंके दरदके कामोंमें भी आता है ।। १५ ।।

लौंगका तेल बनाना ।

एक प्यालेके ऊपर कपडा लपेट करके उसके ऊपर लौंगोंको पीस करके रक्खो फिर उसीके ऊपर लोहेके तवेको ऊंधा रक्खो उसके ऊपर फिर आगके कोईले सुलगा करके धरदेवे तेल नीचेटपक जावेगा ।

बादाम रोगनका बनाना

बादामोंकी गिरियोंको कूंडीमें सोटेसे खूब घोटो फिर उसमें तबीकी मिश्री डालकर ऊपरसे गरम पानीके छींटे देवे तब तेल निकल कर एक तरफ कूंडीके आजावेगा इसी तरह कद्दू वगैरह मगजोंका भी तेल बनालेवे ।। १७ ।।

गुले रोगनका बनाना

अच्छे साफ तिलोंके तेलमें गुलाबके फूलोंकी कलियोंको डालकर फिर एक बोतलमें भरकर उस बोतलके मुखको कागजसे बंद करके बीस दिनों तक उस बोतलको धूपमें रक्खे फिर छान लेवे गुले रोगन बनजावेगा इसी तरह चंबेलीका और बाबूना वगैरहका भी बनालेना ।। १८ ।।

खुशबूदार तेलका बनाना

सफेद तिलोंको लेकर जिन फूलोंकी सुगंधि निकालनी हो उन फूलोंको उन तिलोंमें बसाय रक्खे तीन दिनोंके पीछे फिर उन फूलोंसे तिलोंको निकालकर उनको फेंक देवे और दूसरे वैसे ही फूल ताजे लेकर उसमें तिलोंको बसाय फिर तीसरी बार भी ऐसे ही कर चौथी बार उन तिलोंका तेल कोल्हूमें निकलवा लेवे बडा सुगंधवाला होवेगा ।। १६ ।।

पारेका कटोरा बनाना

पहले एक मिट्टीका सांचा बनवावो कटोरेका या गिलासका फिर पावभर पारेको लेकर एक कलछीमें धरो और फिर पावभर चांदीको गलाकर पारामें डालकर तुरन्त ही सांचेमें डाल देवे जब कि सांचा ठंडा होजाय तब उसको पानीमें धरदेवे मिट्टी गलकरके उतर जायगी बरतन पारेका निकल आवेगा ।। २० ।।

पारे गोलीका बनाना

एक तोलाभर पारेको लेकरके किसी कोरे दियेमें धरे फिर एक तोला भर चांदीका बुरादा बनवाकर पारामें डालकर फिर भटकटै-याका रस खरलमें डालकर उसी चांदीमें मिलाये हुए पारेको उसमें डालदेवे और खरल करे जब कि गोली बनजाय तब उस गोलीको थोडेसे रेतेमें दबाकर उस रेतेके ऊपर थोडीसी आग धरदेवे जब रेता गरम हो जावे तब जरासी देरके पीछे आगको हटादेवे फिर रेतेको ठंडा करके गोलीको निकाल लेवे गोली फिर सखत हो जावेगी जिस कालमें दूध खूब गरम होजाय उस गोलीको दूधमें डालकर दूधको पीवे फिर गोलीको धोकरके रख छोडे इसी तरह नित्य ही गोलीको दूधमें डालकर पीनेसे दूध बडा गुणकारी होता है और पाराके प्यालामें भी पीनेसे गुणकारी होता है ।। २१ ।।

पाराके बर्तनोंके बनानेकी दूसरी रीति

पारेका जितना बडा कटोरा या गिलास वगैरह बरतन बनाना हो उतना ही तोलमें पारा लेकरके एक लोहेकी कराहीमें डालो और

जैतूनका तेल भी उसी कडाहीमें भरदेवो और नरम अग्नि उस कडाही नीचे जलावो जब कि वह तेल सूखने पर आजावे तब और जैतूनका तेल उसमें डालो या हलदीका तेजाब उसमें डालते जावे जबकि पारा जमजाय तब उसमें तेलका डालना बन्दकर देवो किन्तु सांचेमें पारेको डालकर कटोरा बना लेवो उसमें दूध पीवे ॥ २२ ॥

कपूरका प्याला

पहले मिट्टीका सांचा बनवाकर उसको लोहेके तवेके ऊपर औंधा रक्खो मगर नीचे उसके कपूरको रक्खो और तवेके नीचे मन्द २ अग्नि जलाओ दो बत्तीके बराबर हो वह कपूर उड़कर सांचेके भीतर लगता चला जावेगा जब कि सब लग जावेगा तब सांचा भरजावेगा तब उस सांचेको ठंडा करके पानीके बरतनमें डालदेवे जबकि मिट्टी गल जावे तब कपूरके प्यालेको निकाल करके रखलेवे गरमीके दिनोंमें इसमें पानी पिया करो मगर उसको गोल मिरचोंमें रक्खाकरो नहीं तो धीरे २ कपूर सब उड जायगा ॥ २३ ॥

गंधकका प्याला

जितना बडा प्याला बनाना हो उतना पहले कच्ची मट्टीका प्याला लेवे और घीकुमारके रसको निकालकर उसके रसका प्यालेमें लेप करदेवे फिर किसी कटोरेमें एक तोला घृतको डालकरगरम करो फिर कटोरेको अग्निपरसे उतारकर पास रक्खो और छटांकभर गंधकको पीसकर उस घृतमें डालकर कलछीकी डण्डीसे खूब मिलावो फिर उस गंधकको उसी कच्चे कटोरेमें डालकर चारों तरफ थोडा २ उसका लेप करदेवे जब कि सब लेप होजाय तब ठंढा करके उसको पानीवाले बर्तनमें धर देवो फिर थोडी देरमें मिट्टी गल करके उतर जायगी कटोरा गंधकका निकल आवेगा इसमें पानी पीनेसे हाजमा होता है ॥ २४ ॥

फिटकरीका प्याला

आधापाव फिटकरीको पीसकर दो तोलाभर गरम घृतमें मिलाओ जबि क खूब मिलजाय तब मिट्टीके कच्चे कटोरामें थोडा२चारों तरफ

लेप करते जावो जब कि सब कटोरेमें लेप होजावे तब उसको ठंढा करके पानीवाले बर्तनमें डुबा देवो जब कि मट्टी गलजावे तब कटोरेको निकाल करके अपने काममें लावो ।। २५ ।।

कपूरके प्यालाके बनानेकी दूसरी रीति

आधपाव कपूरको नारियलके तेलमें खरल करके एक कढाईमें धर देवे और उसके ऊपर कच्ची मट्टीके प्यालाके सांचेको औंधा धर देवे और नीचे उसके मंद २ अग्निको जलावो कपूर ऊपर उड़करके धीरे २ ऊपर उस प्यालेमें जाकरके लगताजायगा जब कि सब कपूर लग जावे तब उसी मट्टीके प्यालेको पानीके बरतनमें डाल देवे जब कि मट्टी गल जावे तब कपूरका प्याला निकाल करके रख छोडो ।। २६ ।।

बिना आग खिचडी पक जावे

जीते पत्थरके चूनेको एक बरतनमें डालकरके उसमें थोडासा पानी छोडकर किसी बरतनमें चावलोंको धोकरके उस चूनेवाले बर्तन के ऊपर रख दे, चूनेकी गर्मीसे खिचडी पक जायगी ।। २७ ।।

सिरकेका बनाना

एकसेर गुडको एक घडेमें डालकर उसमें ६ सेर पानी डाल दे और फिर उसमें ३ मासा समुद्रझाग मिलाकर दसरोजतक धूपमें रक्खे, सिरका तैयार हो जायगा मगर दूसरे दिन दूसरे घडेमें छानते रहो कि उसमें जीव न पड जावें ।। २८ ।।

गन्ने और ऊखके रसका सिरका बनाना

गन्नेके रसको लेकर पकाओ, जब उबाल आवे तब उसको मिट्टीके बरतनमें डालदेवे, फिर जब उस पर झाग आने लगे तब उसको छानकर रखदो और जब झाग हटजावे तब उसको छानकरके काममें लावो ।। २९ ।।

सादे शरबतका बनाना

सवासेर मिश्री या सफेद खांड लेकर जलमें चाशनी तैयार करे जब तार आने लगे तब उसको बोतलमें भरदे और जब पीना हो

तब दो या चार तोला शरबतमें चार तोला पानी और २ तोले गुलाबका अर्क डालकर पीवो ॥ ३० ॥

अनारका शरबत

जिन अनारोंका छिलका पतला हो और रंग लाल हो उन अनारोंके दानोंका १ सेर रस निकाल लेवे परन्तु वह अनार सडे और गंदे न हों। उस रसमें सवासेर मिश्री या कच्ची चीनी डाल करके बोतलमें भर दे या आधा सेर रसमें आधा सेर मीठा पानी देकरके पकावे तार बनजाने पर बोतलमें डाल करके रखदे । खुराक इसकी दो तोलेसे चार तोले तक है, जिसका जी मचलता हो, जिसको ऊपर छल हुई हो या ज्वर आया हो, शरीरमें गरमी मालूम हो वह पीवे उसको बहुत फायदा करेगा ॥ ३१ ॥

मीठे अनारका शरबत

एक सेर मीठे अनारका रस लेकर एक सेर सफेद मिश्री उसमें डालकर हलकी आगपर ऊपरवाली रीतिसे शरबत बनालेवे दो तोलेसे चार तोलेतक शरबत लेकर उसमें गुलाबका अर्क दो तोले और चार तोले पानी देकरके पीवो दिमागको फायदा करता है ॥ ३२ ॥

इमलीका शरबत

पकी इमलीको लेकर उसकी छाल और बीजोंको निकाल करके एक पावभर हांडोमें डालकर एक सेरभर जलमें रात्रिभर भिगोरखे फिर दूसरे दिन सबेरे उसका रस टपकाले, जो गूदा बचे उसमें भी और पानी डालकर फिर उसका भी रस टपकाले, फिर दो सेर मिश्रीमें शरबतको पकाले। खुराक इसकी आधी छटांक है, यह गरमीको दूर करता है और हाजमा भी है, गरमी और बरसातमें भी पिया जाता है ॥ ३३ ॥

नींबूका शरबत

इसीका नाम शिकञ्जी भी है एक सेरभर नींबूका कडुवाहट रस निकाले परंतु बहुत दबा करके न निकाले क्योंकि उससे कडुवाहट आजाती है । फिर उस रसको किसी मिट्टीके बर्तनमें या कलईदार

बर्तनमें इतनी आंच दे, जो आधा रस रहजावे। फिर उसमें एक सेर मिश्री मिला कर मन्द अग्निपर शरबतको तैयार करले। सफराई बुखारमें यह फायदा करता है हाजमाभी है ॥ ३४ ॥

दूसरी रीति

आधासेर नींबूका रस लेकर जुदा एक मिट्टीके बर्तनमें धर दे, फिर एक सेर मिश्रीमें तीन पाव जल मिलाकर पकावे, जब कि पकनेपर आवे तब उसमें नींबूका रस डालकर शरबत तैयार करले ॥ ३५ ॥

नारिंजगाका शरबत

नारिंजका रस एक सेर, मिश्री १ सेर, पहले नारिंजके रसको मिट्टीके बरतनमें या कलईदार बरतनमें डालकरके औटावो, जब फेन ऊपर आजावे तब उतार लेवो जब आधा रस रहजाय तब उसमें मिश्री डालकर मन्द २ अग्निपर शरबत पकालेवे यह शरबत, गरमीको प्यास तथा शिरदर्दको दूर करता है ॥ ३६ ॥

सन्दलका शरबत

सन्दल सफेद साढे सात तोले लेकर उसका बुरादा बनावे या उसको पीसकर आठ पहर एक सेर गुलाबके अर्कमें भिगो देवे, दूसरे दिन उसको अग्निपर जोश देकर उसका शीरा निकाल लेवे फिर एक सेर मिश्रीमें मिलाकरके पूर्ववाली रीतिसे शरबत बनालो, यह शरबत भी बडा ठंडा होता है, गरमीके दिनोंमें बडा गुणकारी होता है दिल और शिरकी गरमी शांत करता है ॥ ३७ ॥

नीलोफरका शरबत

कमलके फूलोंका नाम नीलोफर है, १ छटांक नीलोफरको एक हांडीमें सवासेर पानीमें डाल करके भिगो देवे, अगर ताजे फूल मिलें तब आधापाव लेवे, फिर उनको जोश दे जब सेरसे कम पानी रह जाय तब उतार कर ठंडा कर मलकर कपडेमें छान ले, फिर उस पानीको दो या तीन पहर रखकर नितारले, फिर उसमें १ सेर मिश्री डालकर शरबत बनाले, यह भी गरमीके दिनोंमें गुणदायक होता है ॥ ३८ ॥

फालूदाका बनाना

दो सेर दूध लेकर उसमें एक पावभर निशास्ता और आधा सेर मिश्री सफेद मिलाकर कपडेसे उसको किसी बरतनमें छानलेवे फिर १ पावभर पानी साथ और मीठा उसमें मिलावे, फिर हलकी आग-पर उसको पकावे, परन्तु कडछीको उसमें बराबर चलाता रहे, गोली बनने न पावे, जब खूब पक जाय तब फिर दोसेर दूध गौका गरम और पावभर मिश्री पीसी हुई उसमें मिलाकरके फिर उसको अग्नि-पर पकावे, परन्तु कडछीको बराबरही उसमें चलाता रहे, जब गाढा होजावे तब उतारकर थोडासा उसमें गुलाबका अर्क छिडककर हिला-कर फिर उसको फूलकी या मिट्टीकी प्यालियोंमें या कलईदार कटोरोंमें जमादेवे, फिर पिस्ते और बादामकी आधी २ छटांक गिरी ले करके गरम पानीमें डालकर उनका छिलका निकाल-कर चाकूसे उनको बारीक कतरकर प्यालियोंपर छिडक देवे, फिर चावसे मजेसे खावे ॥ ३६ ॥

दूसरी रीति

दो सेर गौका दूध लेकर आधासेर उसमें पानी मिलावे, फिर तीन छटांक निशास्ता उसमें मिलाकर कपडेसे छानलेवे, फिर बरा-बरकी अग्निपर पकावे और कडछीको बखूब चलाता रहे, जब गाढा होजाय तब एक हांडीके ऊपर पीतलकी चलनीको रख कर हांडीको आधे पानी भरकरके फिर उस चलनीमें पके हुवे निशास्ताको डालकर उसको ऊपरसे खूब दबावे, चावल नीचे पानीमें निकल जावेंगे । जब ठंडा होजावे तब हाथसे बाकीको दबा करके चावल देवे, जब सब चावल हांडीमें निकल जावे, तब उस हांडीके पानीको बदल दे, अर्थात् पहलेवाले पानीको निकाल करके फिर उसमें ठंडा पानी डालदेवे । चीनीकी चाशनीको बनाकरके पास रख लेवे और दूधको औटाकर ठंडा करके रख लेवे और बरफको भी रखलेवे । प्रथम एक कटोरेमें उन चावलोंको डालकरके उनका पानी निकाल देवे फिर थोडा चाशनीका शरबत और थोडासा ठंढा पानी कटोरेमें डाले,

थोडासा दूध और थोडासा गुलाबका अर्क और थोडीसी बरफको उसमें डालकरके चम्मचसे पीवे ।। ४० ।।

फालूदा बनानेकी तीसरी रीति

आधा सेर निशास्ता लेकर उसमें १ सेर पानी मिलाकर डेगचीमें डाल करके खूब पकावो, जब गाढा होजावे तब एकमिट्टीके बर्तनपर चलनीको रख करके उसमें निशास्ताको छोडकर दबा करके चावल निकालकर पूर्ववाली रीतिसे खावो ।। ४१ ।।

बर्फकी कुलफीका जमाना

टीनकी दो दर्जन बडी और छोटी कुलफियां बनवावो, जिनमें १ छटांक, आधापाव या तीन छटांक तक दूध आजावे । दो सेर दूध खूब गरमकर ठंडा करलेवे, उसमें १ सेर या आधासेर पानी मिलावो और डेढ पाव मिश्री और डेढ पाव मलाईको भी उसीमें मिलावो, एक छटांक पिस्ता और एक छटांक बादामकी गिरीको गरम पानीमें धोकर दोनोंको बारीक कतरकर उसी दूधमें मिलाकर फिर उस दूधको कुलफियोंमें भरकर ढकनोंसे बंद करके आटा सख्त सानकरके ढकनोंके गिरदे लगा देवे, फिर मिट्टीका मटका लेकर बरफ तीन सेर और डेढ पाव कलमीशोरा और डेढ पाव नमक बर्फमें मिलाकर मटकीमें एक तह बर्फकी बिछाकर ऊपर उसके कुलफियोंकी एक तह बिछाकर, फिर बर्फ, फिर कुलफियां, इस तरहसे मटकेको भरदेवे, ऊपर ढकना देकर एक मोटे कंबलमें उसको ऊपर नीचे लपेटके रक्खो एक घंटेके पीछे एक कुलफीको निकालकरके देखो उसके ऊपरका आटा पकजाता है और हिलानेसे जमी मालूम हो तब चाकूसे आटेको उतारकर निकालकर खावो ।। ४२ ।।

फिरनी बनानेकी विधि

१ छटांक पुराने चावलोंको लेकरके चार पांच बारपानीमें धोकरके फिर खूब महीन पीस डालो फिर एक सेर दूध छानकर उस दूधको अग्निपर चढाकरके पकावे मगर कडछी उसमें बराबर ही चलाता रहे कि गोली बनने न पावे जब कि खूब गाढा होजावे तब उसमें आधा

पाव मलाई या खोवा डालकर खूब कडछी चलावे फिर आधे पाव मिश्रीको या बतासोंको डालकर अग्निसे उतार करछी चलावे और कटोरोंमें जमा देवे फिर एक तोला पिस्ता और एक तोला बादामी गिरीको गरम पानीमें गरम करके उनका छिलका उतारकर चाकूसे महीन कतरके उन कटोरोंमें छोडदेवे और केशरको पीसकर उसको भी जरा २ छींटदेवे और फिर चमचेसे खावे ।। ४३ ।।

आचारकी चाशनी बनाना

एक पावभर छुहारेको लेकर उनकी गुठलीको कूटके निकालदेवे और एक पावभर किसमिसको लेकर उसके तीले निकालके साफ करके दोनोंको धोकरके कपडेसे पोंछले और कच्चे आंबोंको छीलकर गुठली निकाल कर उनकी फाकियोंको सुखाले और एक छटांक मैदा सोंठको लेकर कूटले फिर एक अमरतबान या चीनीका पात्र लेकर उसमें छुहारे किसमिस आंबकी फाकी और सोंठ इनको डाल-देवे फिर उसमें तीन पाव मिश्रीको कूटकरके छोडदेवे और डेढ सेर सिरकेको भी उसीमें डालदे । एक तोला लाल मिरची, एक तोला काली मिरची और आधी छटांक नमक इनको पीसकर उसी बरत-नमें छोडदे फिर उसका मुख बांध करके १५ दिन धूपमें रक्खे और नित्य जरासा हिलाभी दिया करे फिर खावे ।। ४४ ।।

हरीरा बनानेकी विधि

छः मासा बादामकी गिरी, छः मासा पिस्ता, छः मासा अखरोटकी गिरी और दो तोले पोस्तेका दाना, पहले खसखसको साफ करके पानीमें खूब धोकर उसको पीसडाले फिर उसको आधासेर पानीमें खसखसके शीरेको डालकरके पकावे जब कि पककरके गाढा होजावे तब बादामकी गिरी और पिस्तेको धोकर साफ कर चाकूसे बारीक कतरकर और अखरोटकी गिरीको भी बारीक कतरकर उसमें मिला देवे और फिर उसको खावे ।। ४५ ।।

हरीराकी दूसरी रीति

छः मासा बादामकी गिरी छः मासा पोस्ताका दाना, दोनों गिरी-

को धोकर छिलका उतारकर खसखसको भी धोकर दोनोंको महीन पीसकर आधासेर दूधमें औटावो मगर कडछी चलाते रहो आधा घंटेतक उसको पकावे फिर आधी छटांक निशास्ताको आधी छटांक घृतमें भूनकर उसमें ३सेर दूधको आधे घंटेतक पकाकर उसमें १छटांक मिश्रीको डालकरके सबेरे या रात्रीको सोते समय पीवो शिरकी गरमी और खुशकी इससे दूर होजाती है। दिमागको बडी ताकत देता है खफगानको भी दूर करता है ।। ४६ ।।

पुष्टिकी पिंडियोंका बनाना

चार सेर दूध लेकरके अग्नि पर चढावे फिर १ छोटासा अच्छा गरी का गोला लेवे उसकी एक तरफसे टांकीको उतार लेवे फिर उसमें एक जायफल और छः मासा केशर और छः मासा जावित्री यह तीनों उस गोलेमें डालदेवे उसी टांकीसे बंद करके किसी बांसके काँटेसे मजबूत करदेवे और उस गोलेको दूधमें छोडदेवे फिर आधा पाव छुहारेको लेकर उनकी गुठलीको निकालकर धोकर पोंछकर उसी दूधमें छोडदेवो फिर आधापाव चिरौंजीको भी साफ करके उसी दूधमें छोडदेवो फिर १ छटांक बादामकी गिरीको गरम पानीमें धोकर छिलका उतारकर उसीमें छोडदेवे और एक छटांक अखरोट-की गिरीको साफ करके उसी दूधमें छोडदेवे और मंद २ अग्निपर उसको पकावो जब कि गिरीका गोला और छुहारा आदिक सब नरम होजावें तब उन सबको दूधसे निकाल करके पीस डालो और दूधका खोवा बनाकर उस खोवेमें उस पीसी हुई गिरियों वगैरहको डालकर फिर उस खोवेको घृतमें भूनलेवो फिर १ पावभर मिश्रीको बारीक पीसकर उसमें डालकर फिर छोटी २ पिंडियाँ बनालेवो सरदीके दिनोंमें सबेरे और रात्रिको एक पिंडी खाया करो शरीरमें बडा बल पैदा करेगी दिमागको तर करेगी ।। ४७ ।।

दूसरी रीति

एक पावभर मैदाको आधापाव घृतमें भूनलेवे और १ पावभर खो-

वाको जुदा घृतमें भूनलेवे। फिर १ छटांक पिस्ता, १ छटांक बादामकी गिरी, १ छटांक चिरौंजी, १ छटांक अखरोटकी गिरी, १ छटांक गलगोजाकी गिरी, १ छटांक छुहारेकी गुठलीनिकालकर साफ करलेवे और सबको चाकूसे बारीक कतरलेवे फिर एक तोला बबूरके गोन्दको भी पीसलेवे फिर एक जायफल ६ मासा जावित्री इनको महीन करलेवे तीन मासे केसरको भी पीसलेवे इन सबको उस भुनी हुई मैदामें मिला देवे फिर आधा सेर चीनी और उस खोवेको भी मैदामें मिलाकर थोडी देरतक आगपर भूनकर एक २ छटांककी पिंडी बना करके रखलेवे उसके खानेसे शरीरकी बडी पुष्टि होती है ॥ ४८ ॥

धातुओंके जौहरोंको उडाना

दो मिट्टीके सकोरोंको लेवे और जिस धातुके जौहरोंको उडाना हो एक सकोरेमें डालकर दूसरेको उसके साथ मिलाकर अर्थात् दोनोंके मुखोंको मिलाकर फिर संपुट बनालेवेफिर कोयलोंकोसुलगाकर उनके ऊपर संपुटको रखदेवे और ऊपरवाले सकोरेपर कपडेके टुकडेको पानीमें भिगोकरके रक्खे सवा घंटेके पीछे फिर आगसे उतारकर ठंडा होजानेपर खोलो ऊपरवालेमें जौहर लगे होवेंगे उनको उतारकर अपने काममें लावो ॥ ४९ ॥

बाल सफा करनेका अर्क

जीते पत्थरका चूना पावभर लेकर १ सेर पानीमें डालकर एक बर्त्तनमें डालदेवे और ऊपरसे ढाँपदेवे फिर आधापाव सज्जीको कूटकर एक बरतनमें डेढपाव पानीमें भिगोदेवे फिर ३ तोले हरतालको लेकर पावभर पानीमें भिगोदेवे किसी बर्त्तनमें तीनोंमें जुदा२ कपडेका टुकडा डालकर उनके पानीको दूसरे बर्तनोंमें निकाल ले फिर तीनोंकोइकट्ठा करके एक बर्त्तनमें ढांपकरके जोश दे जब कि आधा रहजावे तब बोतलमें डालकरके धरदेवे फिर एक पतली लकडीके साथ जरासा कपडा बांधकर उस कपडेसे उस अर्कको बालोंपर लगानेसे पांच मिनटमें बाल साफ होजावेंगे ॥ ५० ॥

मछलीके कांटेका गलाना

मछलीको धोकर उसके ऊपर शोरेका तेजाब मलदेवे फिर उसको धोवे फिर मसाले एक बूंद शोरेके तेजाबको डालकर उस मसालेको मछलीमें भरके पकावे मछलीका सब कांटा गल जावेगा ।। ५१ ।।

दूसरी रीति

केवल मछलीके कांटेको गलाना हो तब आंवलासारगंधक और नौशादर दोनोंको बराबर लेकर मछलीके कांटेपर लगानेसे वह गल जावेगा ।। ५२ ।।

लालरंगका बनाना

सवासेर मँजीठको लेकर खूब महीन करे फिर उसको १०सेर पानीमें घोलकर दोतोले तेजाब शोरेको मिलाकर सातरोजतक इसको भिगो रखो फिर उसके पानीको नितार लेवे उस पानीको किसी कढा-ईमें डालकर आग पर रख करके सुखावो जब कि, पानी सूखजावेगा और जो कि महान नीचे रह जावेगा वही लालरंग होवेगा एक रत्तीसे दो कपडे रंगे जावेंगे इसी रीतिसे जितना चाहे बनालेना ।। ५३ ।।

काला रंगका बनाना

माजू, माई हीराकसीस हरएक आधा २ सेर लेकर उसको बीस तोले शोराकी तेजाबमें हल करके फिर उसमें आठ सेर पानी डालकर दशदिनतक उसको भिगो रक्खे फिर पानीको नितारकर लोहेके बर्त-नमें डालकर आगपर सुखानेसे काला रंग बन जावेगा ।। ५४ ।।

पीले रंगका बनाना

एक सेर हल्दीको लेकर फिर दो तोले शोरेका तेजाब लेवे पहले हरदीको महीन पीसकर उसमें दस सेर पानीको छोडदेवे फिर उसमें शोरेके तेजाबको डालकर सात रोज रखछोडो फिर ऊपरके पानीको निकालकर आगपर पकाकरके सुखानेसे पीला रंग बनजावेगा ।।५५।।

बिना किसी चीजके आपसे आप अग्नि होमके कुंडमें निकल आवे सब लोक इसको सिद्धि मानेंगे

एक पैसेकी पोटासको लेवे और हथेलीभर शक्करको लेवे दोनोंको

मिलाकरके होमके कुण्डमें बिछावे ऊपर सूखी लकडियोंको जोडदेवे और चार लौंगोंको गंधकके तेजाबमें भिगोकरके पहलेसेही पास रखले और छः मन्त्र करके खडा होकर दो लौंगोंको लकडियोंमें जोरसे फेंके तुरन्तही आगकी ज्वाला होमसे निकलेगी ॥ ५६ ॥

बादामकी गिरीका गलाना

एक छटांक बादामोंकी गिरियोंको गरम पानीमें धोकर छिलका उतारकर दो २ फाँकें करके आगपर बरतनमें थोडे पानीमें चढादेवे और ६ मासा अपामार्गकी खार उसमें छोडदेवे गिरी गल जावेगी जवाखारसे भी गलजाती है ॥ ५७ ॥

दीमकके दूर करनेकी औषध

जिस जगहमें या जिस वृक्षपर दीमक लगगई हो उस जगहमें थोडीसी हींगको तेलमें मिलाकरके छींट देवे दीमक सब भाग जायँगी ॥ ५८ ॥

पत्थरपर लिखनेका तरीका

मोमको पिघलाकर उससे पत्थरपर लिखो और उस पत्थरको तुरन्तही सिरकेमें डुबादेवे परन्तु पहले फिटकरी और नौशादरको पीसकर उसी सिरकेमें छोडदेना तीन दिनोंतक वह लिखा हुवा पत्थरका बर्तन सिरकामें ही रक्खा रहे चौथे दिन उसको सिरकेसे निकालकरके पानीसे धोडालो अक्षर रह जावेंगे ॥ ५९ ॥

लाहेपर लिखनेका तरीका

नीलाथोथा और नौशादर दोनोंको बराबर वजन लेकर फिर उनको सिरकेमें मिलाकर लोहेके किसी औजारपर लिखदेवे और धूपमें उसको धरदेवे फिर थोडी देरके पीछे उसको धोडालो लिखा हुवा मालूम होवेगा, या मोमको गरम करके उससे कुछ लोहेपर लिखो और बाकीकी जगह पर दालचीनी, नीलाथोथा, नौशादर तीनोंको बराबर लेकर सिरकामें पीसकर लगादेवे और धूपमें धरदेवे फिरपाव घण्टाके पीछे धोकरके साफ करो लिखा हुआ रह जावेगा ॥ ६० ॥

लकडीपर लिखनेका तरीका

रालको खूब बारीक पीसकर लकडीपर मलो उसके मलनेसे लकडीपर स्याही न बैठेगी फिर स्याहीसे अच्छी कलमसे सुन्दर अक्षर उसपर लिखो जब कि स्याही सूख जावे तब गंधकका तेजाब उस लिखी हुई जगह पर लगादेवे कुछ देरके पीछे वह गन्धकका तेजाब उस लिखी हुई जगहको गाल देगा तब लिखे अक्षर दीखेंगे ।। ६१ ।।

जरमनी चांदीका बनाना

तांबा एक हिस्सा, जस्ता तीसरा हिस्सा, रांगा चौथा सबको मिलाकर फिर आग पर गलाकर मिलादेवो तो जरमनी चांदी बन जावेगी ।। ६२ ।।

शीशेकी चीजका जोडना

लंपके ऊपरकी पीतलकी डिबरी अगर उखड जावे तब फिटकरी लेकर उसको आगपर पिघलाकर गरम गरम ढकनेमें डालकर शीशेपर दबा देनेसे बहुतही मजबूत होजावेगी ।। ६३ ।।

लालरंगकी स्याहीका बनाना

आधापाव काठका बुरादा लेकर उसमें आधापाव कागजी नींबूका अर्क मिलाकर लोहे या मिट्टीके बर्तनमें खरल करलेवे जब कि आधा रहजावे तब छान लेवे उमदा लालस्याही बनजावेगी ।। ६४ ।।

खटमल दूर करनेका तरीका

जिस चारपाईमें खटमल हों उसमें चारों तरफ गंधककी धूनी देदेवे उसकी गंधसे सब खटमल भाग जावेंगे ।। ६५ ।।

बोतलमें अंडेका डालना

एक अंडा ताजा लेकर उसको सात रोजतक अँगूरी सिरकामें डुबा रक्खो वह नरम होजावेगा फिर एक बोतलको आधा पानीसे भरो और अंडेको धीरे २ लंबाकरो इतना बना देवो कि बत्तीकी तरह जो बोतलके भीतर चला जावे उसको बोतलमें डाल देवे वह बोतलमें जाकर पानीमें फिर अपने आकारवाला होजावेगा ।। ६६ ।।

देखते २ सरसों जम आवें

सरसोंके दानोंको लेकर चार पांच दफे थोहरके दूधमें भिगोकरके सुखावे फिर मिट्टीमें डालनेसे बहुतही जल्दी जम आवेंगे ॥ ६७ ॥

देखते २ जुवारके दाने भुनजावें

जुवारके दानोंको चार पांच बार थोहरके दूधमें भिगोकरके सुखा देवो फिर धूपमें फेंकनेसे ही सब दाने भुनजावेंगे ॥ ६८ ॥

लोहेका तांबेकी तरह रंग बनाना

नीलेथोथेको पानीमें डालकर फिर किसी गिलासमें खूब गरम करके उसमें लोहेकी जिस चीजको डालोगे तांबेकी बन जावेगी ॥ ६९ ॥

शीशेपर लिखनेका तरीका

पहले मोमको गलाकर उसकी तह शीशेपर जमावो फिर कलमसे उसके ऊपर जो लिखना हो सो लिखो फिर उसके ऊपर नमकके तेजाबको डालो बस थोडीही देरमें शीशेपर हरफ लिखजावेंगे ॥७०॥

चाकू और छुरी वगैरहके दस्तोंको जोडना

भरोजाको ईंटके सफूफ (चूर्ण) के साथ मिलाकर फिर उसमें थोडासा मोम मिलादेनेसे दस्ता जुड जावेगा ॥ ७१ ॥

जिस आदमीका कोई अंग गरम तेलसे या घीसे जल जाय या अग्निसे जलजाय वह आलूको कूँडीमें सोंटेसे बारीक करके जली हुई जगहपर लगादेवे ॥ ७२ ॥

मूँगाका बनाना

आठ मासे शिगरफको लेकर खूब बारीक पीसकर उसमें आधी छटांक उमदा दालको मिलाकर उसको फिर मंद आगपर गरम करके मूंगाकी शकल बनाकर उसमें सूईसे सुराख करके सुखालेवे ॥ ७३ ॥

शिगरफका बनाना

मैनशिल १ तोला, पारा १ तोला, गंधक पांच तोला सबको मिलाकर खरल करे फिर एक तांबेके बरतनमें डालकर मंद २ अग्नि-को उसके नीचे जलावे और आधा घंटेके पीछे उसको तेज करदेवो जब

तीनों मिलकर एक रूप होजावें तब ठंडा करके उनको धरदे तब शिंगरफ तैयार होजावेगा ।। ७४ ।।

लिखनेकी काली शाहीका बनाना

आठ तोले बबूरका गोंद लेकर सात तोलेको पीसकर पानीमें भिगो देवे जब गल जावे महीन कपडेमें उसको छानलेवे फिर १ तोला गोंदको पीसकर आधा सेर दूधमें डालकर गरम करो फिर ठंढा करके आठ तोले कागजकी एक महीन कपडेकी पोटली बनावे, उस पोटलीको उस दूधमें डालकर हाथसे मलो और उसके ऊपर गोंदवाला पानी छोडते जावो और हाथसे मलते जावो जब कि सबका गाज मलजायगा तब उसको सुखालेवे उमदा स्याही बन जावेगी ।। ७५ ।।

शिंगरफकी लाल स्याही बनाना

एक तोला शिंगरफको खरलमें डालकर उसमें पानी मिलाकर खूब खरल करो फिर उसको टिकाकरके रक्खो जब कि पानी ऊपर साफ आजावे उसको नितार करके फेंक देवो फिर उसमें बबूरके गोंदका लुआब मिलाकर उससे लिखो स्याही तैयार होजावेगी इसी रीतिसे सेंदूरकी भी स्याही बनजाती है ।। ७६ ।।

सुगंधित तेलके बनानेकी विधि

नागरमोथा १ छटांक, पांडी १ छटांक, छैलछबीला आधपाव, बालछड आधपाव, लौंग १ तोला, इलायची बडी १ तोला, कपूर-कचरी ३ तोले, मुशका कपूर १ तोला, रत्नजोत १ तोला, इन सबको महीन कूटकर दो सेर सरसोंके तेलमें डालकर उस तेलको ६ दिन धूपमें रक्खे फिर सातवें दिन थोडासा उसको अग्नि-पर जोश देकर छानकर बोतलमें भर देवे यह बदनपर लगानेसे सुगंधी करेगा ।। ७७ ।।

नौसादरका तेल निकालना

एक बडासा मारू बैंगन लेकर उसके भीतर नौशादरको भरदेवे और जगहमें उसको धर देवे चौथे दिन सब नौशादर तेल बनजावेगा

अगर बैंगनको सीधा रखे कि तेल बाहर गिरने न पावे, फिर निकालकर शीशीमें रख छोडे ।। ७८ ।।

अफीमका नशा उतारना

अरंडकी जडको पानीमें पीसकर पावभर पानी मिला देनेसे नशा उतर जावेगा ।। ७९ ।।

धतूरेके नशेको उतारनेकी औषध

यदि कोई धतूरेके बीज या फूल या पत्ते खाकर बेहोश हो उसको बिनोलेकी जड या बीज या फल खिलानेसे होजावेगा ।। ८० ।।

भांगका नशा उतारना

अगर कोई भांगके नशेमें बेहोश होजाय तब [illegible] होरी नमक नींबूका रस तीनोंको पीसकर मिला करके [illegible] अच्छा हो जावेगा ।। ८१ ।।

शराबका नशा उतारना

शराबीके कानमें सरसोंका तेल डालकर दही और पेडा उसको खिलानेसे नशा उतर जाता है ।। ८२ ।।

बिच्छूके विषका उतारना

जिसको बिच्छू काटे और जहांतक शरीरमें विष चढे लज्जावंतीकी पत्तियोंको लेकर नीचेकी तरफसे झाडते जावे, फिर उसी जगहमें दर्द रह जावेगा, सो उसी जगहको जहांपर काटा हो बांधदेवे । अथवा जहांपर बिच्छूने काटा हो उस जगहमें गोमूत्रको सेंधानमकमें पीसकर लगादेवे या गोबरको गरम करके लेप कर देनेसे भी आराम हो जावेगा या एक तोला हरताल तबकीया लेकर उसको मदारके दूधमें खरल करके गोलियां छोटी २ बनाकर सुखा करके रख छोडो जिसको बिच्छु काटे १ गोलीको पानीमें रगडकर उस जगह पर लगा देनेसे आराम हो जावेगा ।। ८३ ।।

जिसको सांप काटे उसको सीधा बिठलाकर नाभीके ऊपरके बालोंको उस्तरेसे मूंडे परन्तु मांस न छिलजाय फिर जमालगोटेको पानीमें

पीसकर उस मुँडी हुई जगह पर लगादेवे, अगर उसको कै आजाय तब चाँवल और दही दोनोंको मिलाकर पकाकर उसकी आंखोंपर बांधदेवे जब कि कै बन्द होजावें तबआंखोंको खोलदेवे और नीमकी छाल गूलरकी छाल दोनोंको जोश देकर उसके बदनपर मलो इसके मलनेसे सब जीवोंका विष उतर जाता है ।। ८४ ।।

आगसे न जलनेकी विधि

नौसादर और कपूर दोनोंको बराबर लेकरके हाथ पर मलो जब कि हाथ सूख जाय तब अग्निके चिनगारेको हाथ पर रख लेवे हाथ नहीं जलेगा ।। ८५ ।।

हवामें दिया जलता रहे

समुद्रफेन और गंधक दोनोंको पीसकर रुईमें लपेटकर बत्ती बनाकर तिल्लीके तेलमें जगाकर हवामें धरदेवे नहीं बुझेगा ।। ८६ ।।

मकानसे साँप भागजावे

राई और नौशादर दोनोंको पीसकर मिला करके साँपकी जगहमें डाल देनेसे साँप भाग जावेगा, मोरका पंख और तेलिया नाग दोनोंको घरमें रखनेसे भी साँप घरसे भाग जाता है ।। ८७ ।।

मक्खियां भागजाँय

अकरकरा, गंधक, नरगिसकी जड तीनोंको पानीमें पीसकर उस पानीको दीवारोंपर छिडक देनेसे मक्खियाँ सब भाग जावेंगी ।। ८८ ।।

भूख न लगनेकी सिद्धि

झाऊकी गांठको छीलकर उसका गोंद निकालकर खानेसे फिर आठ दिन तक भूख नहीं लगेगी, या पुठकंडाके चावलोंको छः मासा खानेसे भूख आठ रोज तक नहीं लगेगी सिद्ध मानेंगे ।। ८९ ।।

बर्तनोंमें कलई करना

एक तोलाभर नौशादरको मिट्टीके दियेमें धरकर आगपर भूनो जब कि भुनजाये तब उसको पीसकर अपने पास रखलेवे जिन बरतनोंको कलई करना हो उनको पहले माँज करके खूब धोकर साफ कर लेवे कलईको और थोडीसी पुरानी रुईको पास

रखलेवे पहले बर्तनको आगपर रखो जब खूब गरम होजाय तब सँडसीसे एक हाथसे पकडकर उसमें जरासा रांगेका टुकडा डाले रांगा जब गले तब जरासा नौशादर डालकर रुईसे मलडालो इसी प्रकार धीरे २ सब बरतन पर अपने घरमेंकलई करलेवे ॥ ६० ॥

गेशके बनानेकी रीति

पत्थरके कोइलाको कूटकर फिर लोहेके बर्तनमें भरकर मुखमें एक नली लगाकर फिर उस नलीको जमीनके नीचे दबा करके उसका शिर बाहर निकाल देवो फिर उस कोयलेवाले बरतनके ऊपर आगको सुलगाकर लकडीके कोइलाको रक्खो लोहेके बरतनमें जो कि कोइले हैं वह सब धुवाँ होकर नलीमें जावेगा उसके सिरेपर दिया सलाईसे आग दिखला देवे वह बराबर माहताबीकी तरह जलता रहेगा॥ ६१॥

खमीरे तमाकूका बनाना

गुले सुरख, जरनवाद आधा २ पाव,बडी इलायची पावभर, सफेद संदल डेढपाव, गुलकंद पावभर, गुलाब आधसेर, लौंग, नागरमोथा, बालछड हरएक चार २ तोले सब चीजोंको कूट छानकर आधसेर गुड और दो सेर तमाकूमें मिलावो यह उमदा खमीरा तमाकू खुशबू-दार बनेगा ॥ ६२ ॥

तमाकूकी उमदा गोलियोंके बनानेकी तरकीब

एक सेर उमदा तमाकू, दो तोले जायफल, ६ मासा जावित्री, लौंग, गुले सुर्ख, इलायचीका दाना, हर एक छः २ मासा, कस्तूरी १ मासा, दालचीनी, केसर चार २ मासा, संदलका बुरादा १ तोला, कुलिंजन ६ मासा, कपूरकचरी १ मासा, कपूर, बालछड छः २ मासा पावभर या आधा सेर तमाकूको गरदेसे साफ करके दो सेर या १ सेर पानीमें भिगो देवे सबेरे मल करके छान ले और थोडी देरतक रख छोडो जो गरदा पानीमें बैठजाय तथा जब गाढा होजाय तब सब चीजोंको कूटकरके उसमें मिलादेवे ऊपरसे केसरका पानी छिडककरकेमिलावो फिर दो २ रत्तीकी गोलियां बनाकर सुखालेवो पानमें रखकरके अमीर इनको खाते हैं ॥ ६३ ॥

हाजमाकी चटनी

शहद पावभर, सिरका पावभर, सौंफ, धनियां, काला जीरा, सफेद जीरा, गोलमिर्च, पीपल हरएक दो २ तोले सबको कूट छानकर फिर शहदको जोश देकर हल करो अर्थात् सबको शहदमें मिलावो फिर उसमें सिरकेको मिलाकर मिट्टीके या चीनीके बर्तनमें रखके खाओ यह रोटीको हजम करती है खाँसी और बुखारको भी फायदा करती है ॥ ६४ ॥

असली कस्तूरीकी परीक्षा

एक सुईमें तागा डालकर तागे समेत उस सुईको प्याजके गट्ठेमेंसे निकालो फिर उस सुईको तागे समेत कस्तूरीके नाफेमेंसे निकालो यदि असली नाफा होवेगा तब प्याजकी गंध जाती रहेगी इसी तरह हींगकी डलीमें सुईतागेको निकाल करके फिर कस्तूरीके नाफेसे निकालो अगर असली नाफा होवेगा तब हींगकी गंध तागेसे जाती रहेगी ॥ ६५ ॥

दाढी मूछोंका लगाना

जैसे दाढी मूछें लगाना चाहिये वैसी पहले बालोंकी बनावो फिर बडके दूधसे उनको मुखपर जमा देवो असली मालूम होवेंगी ॥ ६६ ॥

प्याजकी गंधका दूर करना

पहले प्याजके गट्ठोंको छीलकर कतरकर नमक लगाकर एक पहर तक उनको धूपमें धरदेवे फिर गरम पानीसे चार बार धोनेसे गंध जाती रहेगी ॥ ६७ ॥

पीतल बनानेकी रीति

तांबा दो छटांक, जस्ता १ छटांक दोनोंको मिलाकर गलानेसे पीतल बन जावेगा ॥ ६८ ॥

काँसा बनानेकी रीति

तीन छटांक तांबा और १ छटांक रांगा दोनोंको मिलाकरके गलानेसे काँसा बन जावेगा ॥ ६९ ॥

फूलका धातु बनाना

तांबा सात छटांक, रांगा दो छटांक, दोनोंको मिलाकर गलानेसे फूल बन जावेगा ।। १०० ।।

शोराको साफ करनेका तरीका

शोराको पानीमें हल करके फिर एक बरतनमें डालकरके किसी ठंडी जगहमें रखछोडो शोराके दाने बन जावेंगे और नमक नीचे बैठ जावेगा ऊपरसे शोराको निकाल लेवे नमकको छोडदेवे ।।१०१।।

संदलरंगका कपडा रँगना

सफेद संदलका बुरादा और मेहँदीकी पत्ती दोनोंको जोश देकर उसमें कपडेको रंगो ।। १०२ ।।

उन्नाबी रंगमें कपडेको रँगना

अनारके फलके छिलकोंको पानीमें पकाकर ३ बार पहले कपडेको डुबा दे फिर उसपर कटका हलका रंग चढावो उन्नाबी रंग बनजायगा । यह सब रंग बाजारमें बनेबनाये हुये मिलते हैं ।। १०३ ।।

पीतलपर नकाशी करना

मोमको पीतलपर लगाकर उसकी तहको जमावो मगर पतलीसी हो फिर लोहेकी कलमसे उसपर जो कुछ लिखना हो सो लिखो फिर उसपर शोरेका तेजाब डालो थोडी देरमें शोरेका तेजाब उसको खाजावेगा और अक्षर निकल आवेंगे ।। १०४ ।।

अंगूठी नाचे

एक अँगूठी ऐसी बनवावो जो बीचमें खाली हो और एक तरफ उसके छोटासा सूराख महीन रहे, उसी सूराखसे उसीमें पारा भरदेवे और मुँह उसका मोमसे बंद करदेवे, इस अँगूठीको गरम करके किसी तख्तेपर फेंकदेवे नाचने लगेगी ।। १०५ ।।

मुखसे आगका निकालना

पकेहुए आमकी गुठलीके गूदेको निकालकर उसको साफ कर सुखालेवे उसमें मूँजका बान भरकर फिर कपडेको भिगोकरके उसपर लपेटके उस गुठलीमें जरासा आगका कोइला रखकर

उस गुठलीको मुखमें दबाकर बाहरको फूँको आगकी लपट बाहरको निकलेगी, मगर अग्निका असर नहीं होवेगा, सब देखनेवाले हैरान होवेंगे ॥ १०६ ॥

पानीका जमाना

पानीको गरम करके एक छोटीसी घडीमें डालकर उसको एक पानीसे भरे हुये मिट्टीके बरतनमें धरो और उस पानीमें नमक, शोरा और नौशादरको डालो पानी जम जायगा ॥ १०७ ॥

आमोंको देरतक ताजा रखना

आमोंको निखालस शहदमें डालकरके रखो ताजेहीरहेंगे ॥ १०८।

चमडेकी काली वार्रानिशका बनाना

अलसीके तेलको खूब गरम करके उसमें मुरदाशंखको पीसकर मिला देवे फिर उसमें काजल मिलाकर खूब घोटे वारनिश बन-जावेगा फिर काममें लावे ॥ १०९ ॥

गिलोयका सत निकालना

गिलोयकी बेलको पत्तोंके सहित कूटकर चौवीस घंटातक पानीमें रक्खे और हिलावे फिर दूसरा पानी उसमें डालकरके मले फिर दोनों पानियोंको छान लेवो और मिट्टीके बरतनमें ठहराकरके रक्खो जब गाद नीचे बैठ जाय तब ऊपरका पानी नितारकरके फेंकदेवे और गादको इकट्ठा करके रख छोडो यही सत है ॥ ११० ॥

पानीमें फेंकनेसे अंडा तोपकी आवाज दे

एक मुरगीका अंडा लेकर उसकी सफेदी और जरदीको निकाल-कर फिर उसमें गंधक जाती चूना भरकर उसका मुँह मोम वगैरहसे बंद करदे फिर उसको नदीमें या तालावमें फेंकनेसे तोपकी अनुसार आवाज आवेगी ॥ १११ ॥

टूटेहुये शीशेके गिलासको जोडनेकी तरकीब

चूनेको अंडेकी जरदीमें हलकरके गिलासको जोडलेवे जुडजाता है ॥ ११२ ॥

पारेका जमाना

पारेको कढाईमें डालकर उसके ऊपर नमक और तूतिया डालकर फिर उसके ऊपर मिट्टीका कोई कूडा देकर उसपर पानीडालकर नीचे आगको जलाये, पारा जम जावेगा ।। ११३ ।।

फूलोंका रंग बदल देना

चूनेके पानीमें नौशादर मिलाकर फिर उसमें फूलको रंगनेसे रंग बदल जायगा ।। ११४ ।।

एक गिलासमें चार पांच किस्मके रंग बना देना

रंगोंको पहले पानीमें जुदा २ घोलो और बोतलमें पहले एक रंगका पानी डालो उसपर तेल डालकर फिर दूसरा रंग डालो फिर उसपर तेल डाल कर तीसरा रंग डालो फिर तेल डालकर चौथा रंग डालो इसी तरह जितने चाहो रंग डालो सब जुदा २ ही रहेंगे ।। ११५ ।।

झटपटही पेड लगजावे

कुसुंभके तेलमें छोटे २ दरख्तोंके बीजोंका एक गमलामें मिट्टीके बीचमें भिगो देवो सात रोजतक भीगेरहे फिर निकालकरके रखछोडो जहाँपर दरख्त लगाना हो वहाँपर मिट्टीके बीचमें बीजको रखकर उसके ऊपर पानीको डालो तुरंत ही उग आवेगा ।। ११६ ।।

चलनीसे पानी न निकले

घीकुवारके लुआबमें सात रोज चलनीको तर करके सुखादेवे फिर पानी डालनेसे न किलेगा ।। ११७ ।।

अर्कका ताजा रखना

एक बोतलमें अर्कको डालकर उसके ऊपर सरसोंका तेल थोडासा डाल करके रक्खो जब काम पडे तेलको अलग निकालकर अर्कको काममें लाना फिर उसके ऊपर उसी तेलको डाल करके रक्खो जब चाहो तब लेना तेल नहीं बिगडेगा ।। ११८ ।।

जादूका साँप

कपूर, गंधक, हरएक डेढ २ छटांक और १ छटांक सपेदा तीनोंको जुदा २ पीसकर फिर शरेशको नरम करके उसमें मिलाकर फिर डेढ

रत्ती शबयमानी इसमें मिलावो और बत्तियां बनाकर रख छोडो एक बत्तीको दिया सलाई लगानेसे सांप दिखाई पडेगा ।। ११९ ।।

असली सिलाजीतकी परीक्षा

थोडीसी शिलाजीतको लेकर उसको कोइलाकी आगपर जलाकर उसकी राख बनावो फिर पानीका गिलास भरकर उसमें उस राखको छोड देवो तब उस राखमें पतलीसी तार निकल २ कर जब बाकी कुछ भी न रहैं तब जानलेना कि असली है ।। १२० ।।

कभी भी न बुझनेवाला चिराग

समुद्रझाग और गंधक दोनोंको पीसकर रुईकी बत्तीपर लगा कर फिर उसको तेलमें भिगोकर बाले, हवामें भी नहीं बुझेगा ।। १२१ ।।

घरसे चूहे भाग जायेंगे

एक चूहेको पडकर नीलमें रंगकर उसको छोड देवे उसको देखकर बाकी चूहे भाग जावेंगे ।। १२२ ।।

गुलाबके फूलोंकी पत्तियोंको लेकर एक शीशीमें डालकर उसमें साफ पानी भरदेवे और आठरोज तक उसको धूपमें रक्खे तब पानी पर तरवरेसे उठ आवेंगे वही गुलाबका इत्र है उन तरवरोंको रुईसे उतारकर शीशीमें रख छोडे ।। १२३ ।।

कागजकी कढाईमें पकोडोंका बनाना

एक मोटे कागजकी कढाई छोटीसी बनावो फिर दो तोले फिटकरी और दो तोले कपूर दोनोंको थोडेसे पानीमें पीसकर कढाईके नीचे मोटासा लेप कर देवो कोई जगह बाकी न रहे फिर उसमें घृत डालकर नीचे आग जलाकर पकोडोंको तलो ।। १२४ ।।

दीवारको जलाना

पहले शराब निखालसका पोत दीवार पर देकर उसको सुखावे फिर मिट्टीके तेलका पोत देवो फिर दियासलाई आग लगावो दीवारका नुकसान नहीं होवेगा और खूब जलेगी ।। १२५ ।।

मोमको रंगदार बनाना

मोमको आगपर पिघलाकर जो रंग बनाना हो उसी रंगको मोममें छोडकर मिलादेवे वैसाही मोमका भी रंग बन जायगा ।। १२६ ।।

बालोंका उडाना

पीला हरताल १ तोला, जीता पत्थरका चूना ५ तोले दोनोंको जुदा २ पीसकर मिलादेवो फिर पतली लेईसी बनाकर बालोंपर लगावो और थोडीसी देर पीछे धोडालो सब बाल झड जायँगे ।। १२७

हरडका मुरब्बा बनाना

पहिले हरडोंको पानीमें भिगोदेवो तीन दिन बराबर वह पानीमें भीगी रहे फिर उस पानीको फेंककर दूसरा पानी उनमें डालो और फिर हरडोंको मोटी सलाईसे चूंगकर दूसरे साफ पानीमें भिगो देवो फिर अग्निपर चढाकर खूब जोश देवो फिर उतारकर पानीसे निकालकर चाशनी पकाकर उतार लेवो ।। १२८ ।।

बीहका मुरब्बा

पहले बीहोंको छीलकर टुकडे करो, बीज दाना निकाल लेवो, फिर उन टकडोंको खूब जोश देवो फिर चाशनीमें डालकर एक जोश देकर उतार लेवो मुरब्बा बन जायगा ।। १२९ ।।

दरख्तसे आपसे आप आग गिरे

कपासकी छडियोंको लेकर उनको जलाके कोइले बना लेवो उनको कपडेमें बांधकर पोटली बना लेवो और उसको दरख्तके साथ लटका देवो उस पोटलीमें जगता सूराख करके उस सूराखको जरासी अग्नि दिखानेसे फिर अग्निकी चिनगारियाँ जमीनपर गिरती दिखाई पडेंगी ।। १३० ।।

पित्तकी दवाई

गरमीके दिनोंमें आम वगैरह मेवा बहुतसा होता है उन्हीं मेवोंके खानेसे लोगोंके शरीरमें पित्त बहुतसा निकलता है और खुजलाता है उसकी यह दवाई है । एक छटांक आँवलोंको लेकर किसी बरतनमें धो करके भिगो देवे जब नरम होजाय तब किसी पत्थरपर हाथसे मल करके उनकी गुठलियोंको निकालकर शीरा जुदा करके फिर १ तोला सुहागा लेकर उसको फुला करके पीसकर आँवला सीरामें मिलाकर उबटनकी तरह शरीरपर मल करके फिर

स्नान कर लेवे, दो चार दिन मलकर स्नान करनेसे पित्त जाता रहेगा ।। १३१ ।।

दांतका मंजन

कूठ, सुहागा, नौशादर, फिटकरी, हरएक एक २ तोले लेकर पीसकर इनसे दूना सिरका मिलाकर लोहेके कडाहीमें डालकर पकावे जब कि गाढा हो जावे तब दांतोंपर मले बडा फायदा होवेगा या नौशादर अकरकरा सौंचलनमक गोलमिर्चमें इन चारोंको बराबर लेकर पीसकर दांतोंपर मले दर्द जाता रहेगा ।। १३२ ।।

हैजेकी दवाई

१ मासे कपूर, ३ मासे छोटी इलायची, ६ मासे शहद और ३ मासे अदरखका रस इन सबको पत्थरपर धरके सफेद चन्दनसे घिसकर तीन २ मासे आधे २ घंटेके पीछे चटानेसे आराम होजावेगा ।।१३३ ।।

कुत्ते काटेकी दवा

ईखका गुड, सरसोंका तेल, अकरकरा, मदारके दूधमें इन तीनोंको मिलाकर लगानेसे आराम होवेगा ।। १३४ ।।

प्रमेहकी दवा

आधपाव दूधमें दो तोला शतावरका रस मिला करके पीनेसे सब तरहका प्रमेह जाता है ।। १३५ ।।

नाकसे रुधिर गिरनेकी दवा

अनारके फूलोंका रस सफेद दूबका रस दोनोंको मिलाकर दिनमें तीन चार बार सूंघनेसे रुधिर बन्द होजावेगा ।। १३६ ।।

पथरीकी दवा

मूलीके दो तोले रसमें चीनी मिलाकरके खानेसे सब तरहकी पथरी दूर होजाती है ।। १३७ ।।

बहुतसी प्यास लगनेकी दवा

१ छटांक सोंफको लेकर एक साफ कपडामें उसकी पोटली बांध-कर पानीमें भिगो देवे फिर उसी पानीको बारबार पीवे या उस पोट-लीको चूसे प्यास जाती रहेगी ॥ १३८ ॥

हिचकीकी दवा

दो या तीन तोले अनारके रसमें थोडा सेंधानमक मिलाकर पीनेसे हिचकी जाती रहती है या अनारके पत्तोंके १ तोला रसमें शहत मिला करके पीनेसे भी जाती रहती है ॥ १३९ ॥

बुखारकी दवा

हरडे, चिरायता, बाँसके पत्ते और गिलोय हरएक छः छः मासे लेकर इनका काढा पीनेसे कफका बुखार दूर हो जाता है धनियां और परवरके पत्तोंका काढा पीनेसे पित्तका बुखार दूर हो जाता है पित्तपापडा और हारसिंगारके पत्तोंका रस एक २ तोला लेकर उसमें थोडासा शहद मिलाकर पीनेसे विषम ज्वर दूर होजाता है ॥ १४० ॥

अजीर्णकी दवा

मछलीके खानेसे अजीर्ण हो तब दूधकी काँजी पीनी चाहिये । केला खानेसे अजीर्ण हो तब सेंधानमक खाना चाहिये । यदि अन्न खानेसे अजीर्ण हो तब नमक और अजवाइन खाकर ऊपरसे थोडासा जल पीलेना चाहिये । मिठाई खानेसे हो तब लौंग खाकर ऊपरसे जल पीले ॥ १४१ ॥

नामर्दीकी दवा

भिलावा, कटेलीका फल, नलिनीके पत्ते, सेंधानमक, जलशोष इनको भैंसके मक्खनमें मिलाकर सात रोज रक्खे मगर सबको पीसकरके मिलावे फिर असगंधको भैंसके घृतमें मिलाकर प्रथम इन्द्रियपर लेप करे फिर ऊपरवाले घृतमें मिली हुईका लेप करे सात दिनमें आराम होगा ॥ १४२ ॥

चाहकी टिकिया बनाना

१ सेर दूधमें चौथाई पानी डाल करके उसमें दो तोले चाह डालकरके उसको खूब पकावो जब कि चाह गलजावे तब उस दूधको छानकर उसका खोवा बनाकरके रख लेवो फिर उसमें अंदाजसे चीनी मिलाकर दो २ तोलेकी एक २ टिकिया बनाकरके सुखालेवो जब कि, चाह पीनेको मन चाहे कटोरामें गरम पानी डालकर उसमें एक या दो टिकियोंको डालकरके पीवो ॥ १४३ ॥

गुलेबासीके एक पौधामें अनेक रंगवाले फूलोंको उत्पन्न करनेका तरीका

गुलेबासीके बीजोंको दस रोज तक बराबरही सिरकामें भिगोदेवे और फिर उनको बोवे एक पेडके साथ लाल पीले अनेक तरहके फूल निकलेंगे ॥ १४४ ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण विरचिते गुणोंकीपिटारीनामकग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय

कपडा धोनेके साबुन बनानेकी रीति

१ सेर पत्थरका जीता चूना और तीन सेर पापडीयाखारको महीन करके दश सेर पानीमें बारह घंटा भिगो देवे फिर एक बरतनमें चूनेको रखकर उसके ऊपर खारके पानीको देवे और १२ घंटा पडा रहे फिर खूब लकडीसे हिलाकरके थोडी देर छोड़कर फिर एक कढाईमें उसको डालदेवे और खूब पकावे। फिर अढाई सेर गरीका तेल लेकर उसको जरासा गरम करके उसीमें छोड देवे और ५ तोले रालको भी पीसकर उसीमें छोडदेवे और पकावे, जब कि चाशनीकी तारकी तरह तार आजवे तब उतार करके जमा लेवे, जब सूख जावे तब फिर अपने काममें लावे ॥ १ ॥

दूसरी रीति

१ सेर पत्थरका जीता चूना और तीन सेर सज्जी और अढाई सेर एरण्डका तेल, एक बरतनमें सज्जीको कूटकर डालकर उसपर पांच सेर पानी छोड देवे फिर दूसरे बरतनमें चूनेको कूटकर छोडकर उसपर भी पांच सेर पानी छोड देवे दोनों पानियोंको नितारकर एक बर्तनमें इकट्ठा करके २४ घंटा रक्खे, फिर एरण्डीके तेलको एक कढाईमें मन्द २ अग्निपर पकावे जब कि पकजावे तब उसमें उसी चूने और सज्जीवाले पानीको थोडा २ डाल करके पकाते जावो और घोटते जावो कि गोली बनती न पावे, फिर एक लकडीके सिरेपर थोडासा लगा करके देखो जब जमजाय तब उतारकर किसी बर्तनमें जमा करके कतलियाँ काटकर रखछोडो ॥ २ ॥

चनेकी खार बनानेका तरीका

शरदमें अर्थात् पौष या माघ महीनामें जब कि चनोंके पौधे हरे २ होते हैं रात्रिको उसके ऊपर ओस गिरती है उस ओसको एक साफ महीन कपडेसे उठा कर उस कपडे को छायामें सुखादेवे इसी तरह एक महीना तक बराबर ही उस कपडेको चनोंकी ओससे तर करके नित्यही सुखाता रहे फिर उस कपडेको पानीसे एक बरतनमें धो डाले

फिर उस पानीको आगपर पकावो जब पानी सूख जावेगा चनाखार नीचे रह जावेगा ॥ ३ ॥

जादूकी कलम

मरहटी साबुनको चक्कूसे छीलकर कलमकी सूरत बनाओ इसी कलमसे कागजपर लिखो अक्षर दिखाई नहीं पडेंगे जब पानीमें उस लिखे हुये कागजको भिगोवोगे तब हरफ साफ दिखाई पडेंगे ॥ ४ ॥

चपडा लाखका बनाना

दाना लाखको लेकर एक कढाईमें डालकर खूब गरम करके एक थैलीमें डाल देवो फिर उस कपडेकी थैलीको दोनों सिरोंसे पकड करके बट देते जावो, जो कि थैलीमेंसे बाहर निकले उसको किसी चाकूसे जुदा करते जावो, तो चपडा लाख बन जावेगी ॥ ५ ॥

वनस्पतिका खार या नमक बनाना

जिस वनस्पतिका अर्थात् मूली वगैरहका खार बनाना हो, तो पहले उसको सुखाकर उसको जलाकर उसकी राख बना लेवो फिर उस राखको पानीमें खरल करके एक कपडे में बांधकर किसी बर्तनके ऊपर लटका देवो उस बर्तनमें जो पानी टपके, उस पानीको किसी बर्तनमें डालकर आगपर धरकर सुखावो, जो बचजावेगा वही खार होवेगा ॥ ६ ॥

सत निकालनेका तरीका

जिस चीजका सत निकालना चाहो, उसको पहले दरडलेवो फिर पानीमें घोल देवो आठ पहरतक उसको रखछोडो फिर मल करके पानीको नितार लेवो फिर आगपर इतना पकावो कि उसमें आधा पानी सूखजावे, फिर दूसरे दिन उस पानीको नितारकर अग्निपर सुखाकर रखो, वही सत नीचे बैठ जायगा इसी तरह सब बनजाते हैं ॥ ७ ॥

जौहर निकालनेका तरीका

जिस चीजका जौहर निकालनेका हो उस चीजको कुचलकर जौ

कूट करके एक प्यालेमें बिछा देवो, फिर उसके ऊपर दूसरा प्याला उल्टा देकर दोनों प्यालोंके किनारोंको खूब मजबूत करदेवो और उसके नीचे दियेकी बत्तीकी तरह मन्द २ आग जलावो और ऊपरवाले प्यालेपर पानीसे भिगो करके कपडा लपेट देवो, जब कपडा गरम होजावे तब उसपर पानी जरा २ डाल करके उसको भिगोते रहो, फिर ठंडा करके पीछे खोलो ऊपरवाले प्यालेमें जौहर सब लगे होवेंगे उनको उतार लेवो ।। ८ ।।

अर्क खींचनेका तरीका

जिस वस्तुका अर्क निकालना हो उसको रात्रिमें भिगो देवो परंतु भिगोते समय इन बातोंका ख्याल रखना जरूरी है, जो कि छिलका हों उनको भिगानेसे पहले कूटलेना फिर डेगके नीचे आग भी मंद २ ही जलाना यदि आग तेज होजावेगी तब उबाल आकर चीजें अर्कवाले भबकेमें जारहेंगी तब अर्कभी बिगड जावेगा । फिर अर्क दो तरहके होते हैं एक तो केवल एकही चीजका, दूसरा बहुतसी मिली हुई चीजोंका भी होता है । अर्कोंका वजन इस तरहसे जानना ।।

अजवायनका अर्क–अजवायन पावभर, पानी ३ सेर ।।

कासनीका अर्क–कासानी आधासेर, पानी साढेचार सेर ।।

पूदीनाका अर्क–पूदीना १ सेर, पानी तीन सेर ।।

मकोहका अर्क–मकोह १ सेर, पानी ३ सेर ।।

अर्क गावजुवान–गावजुवान आधापाव, पानी ३ सेर ।।

सौफका अर्क–सौफ १ सेर, पानी ८ सेर ।।

अर्कगुलाब और केवडा बेदमुश्क इनसे तीन गुणा पानी अधिक डालकर डेढ गुना अर्क खींचो और धनियां, मुंडी, शाहतरा वगैरह एक २ सेरमें पांच २ सेर पानी डाल करके अर्क खींचो ।। ९।।

शरबत बनानेकी तरकीब

जिस चीजका शरबत बनाना हो एक बोतलके वास्ते वही आधा पाव लेनी और आधासेर मिश्री लेनी । पहले कटनेवाली दवाईको कूट करके एक सेर पानीमें रात्रिको भिगो देवो जो नहीं कूटनेवाली है,

उसको इसी तरहसे भिगो देवो सबेरे उसको आगपर पकाकर छानकर रखदेवो फिर उस पानीको नितारकर उसमें मिश्रीको डालकर पकावे जब कि तार बंध जावे उतार कर बोतलमें भरदेवो फिर काममें लावो। इसी तरकीबसे सब तरहके शरबत बनजाते हैं, परंतु वस्तुका वजन अपनी बुद्धिके अनुसार जानलेवे ॥ १० ॥

मोमका तेल बनाना

एक हांडीकी बगलमें सूराख करके उसमें एक नली लगा करके उस नलीके दूसरे सिरेको एक बरतनमें रक्खो, हांडीमें मोम डालकर उसके नीचे आग मंद २ जलावे तेल निकल आवेगा ॥ ११ ॥

संदलका अर्क

संदलके तेलकी तीस बूंदोंको एक बोतल साफ पानीमें डाल करके खूब हिलावे संदलका अर्क बन जावेगा ॥ १२ ॥

चाकूको साफ करनेका तरीका

करंड पत्थर और चीनीको बारीक पीसकर चमडेकी गद्दी पर इसको डालकर उसपर चाकूको रगडनेसे साफ और तेज हो जाता है ॥ १३ ॥

चिमनीको साफ करना

गोबरको या चूनेको या खडिया मिट्टीको पानीमें घोलकर चिमनी-पर लगाकरके फिर पानीसे धोकरके साफ कर देवे, फिर कपडेसे साफ कर दे ॥ १४ ॥

शिरके गञ्जेपनेको दूर करनेकी दवा

शिरमें कितने दिनोंतक रोजही बराबर मिट्टीका तेल लगावे गञ्जापना दूर होजावेगा ॥ १५ ॥

चमडेके वास्ते स्याह वारनीश

चपडा लाख १२ हिस्सा, तेल तारपीन पांच हिस्सा, सिंदूर दो हिस्सा, काजल १ हिस्सा स्प्रिटरेकटीफायट दस हिस्सा, इनको मिला करके बनावे ॥ १६ ॥

नकली मोमका बनाना

२४ हिस्सा चरबी, पीली राल २७ हिस्सा, हलदी ४ हिस्सा, इन सबको मिलानेसे मोम बन जाता है ।। १७ ।।

मसनवी सुहागाका बनाना

सज्जी, लाहोरी नमक, दोनोंको बराबर लेकर उनसे तिगुणा बूरा अलमंनी उनमें मिलाकर पीसकर दूधमें हलकरके सबके बराबर सफेद फिटकरी पीसकर मिलाकरके पकावे परन्तु दूध इतना छोडे जिसमेंसब पककरके गाढा होजावे ।। १८ ।।

मसनवी हीराकसीसका बनाना

लोहेके बुरादेको एक बरतनमें डालकर उसपर गन्धकका तेजाब छोडकर जरासा पानी उसमें मिलावो जब कि बुरादा लग जाय तब उसको आगपर रखकर पानी और तेजाबको खुश्क करे, जब खुश्क हो जावेगा तब हीराकसीस बन जावेगा ।। १६ ।।

बाल बढानेका तेल

नारियलके तेलमें बरगीमाठ आईल मिलकर कई महीने तक बालोंपर रोजही लगानेसे बाल बढजाते हैं ।। २० ।।

पीले रंगके मोमको सुफेद बना देना

जर्द मोमको पानीमें खूब पकाकर उस मोमको पानीके ऊपरसे उठाकर किसी दूसरे बरतनमें धरदेवो उसको हवा लगे वार वार हवा लगनेसे पांच या छः रोजमें सफेद हो जायगा ।। २१ ।।

खमीर बनानेका तरीका

जिन चीजोंका अर्थात् दवाइयोंका खमीरा बनाना हो उनको कूट-कर पानीमें भिगो देवो फिर उनका सीरा निकालकर कन्द या सफेद मिश्रीमें मिलाकर पकावे जब बरफीकी चाशनी बन जाय तब जमा करके उसकी कतलियाँ काटलें ।। २२ ।।

कपडेपर सन्दली रंग करना

संदलके बुरादे और मेहंदीके पत्तोंको पानीमें जोश देकर कपडे को रंगो ।। २३ ।।

कपडेपर उन्नाबीरंगका करना

अनारके फलके छिलकोंको पानीमें पकाकर कपडेको उसमें डुबोकर फिर मँजीठके रंगमें उसको रंगकर फिर कटका हलका रंग देना ।२४।

कपडेपर अमरसी रंगका करना

पहले गुलाबी रंगको पानीमें घोलकर कपडा रंगलेवो फिर जरद रंगमें रंगो अमरसी हो जायगा ।। २५ ।।

आज कल बाजारमें सब रंग बने बनाये मिलते हैं उनको लेकर जिस रंगको चाहो पानीमें घोलकरके रंग लेवो फिर इनको कमी बेसी मिलानेसे अनेक रंग बन जाते हैं जितने रंग चाहो बनाकर उनमें कपडोंको रंग लेवो ।। २६ ।।

मीठे मेवाके पैदा करनेका तरीका

आम वगैरह मीठे मेवोंकी गुठलीको पहले शहदमें भिगोकर उसको बोवो और उस बीजपर शहत डालकर फिर मीठे पानीसे उसको सींचा करो बहुतही मीठे फल पैदा होवेंगे ।। २७ ।।

और जिस मेवेको बदमजा बनाना हो उसको सिरकामें भिगोकर बोवो और खारी पानीसे सींचो बदमजा पैदा होगा ।। २८ ।।

नकली चरसका बनाना

आँबका मूल दो पौंड, गांजा दो पौंड, पोस्ताका दाना पावभर सबको बारीक करके रखछोडो और एक बरतनमें डालकर जमीनमें गाड देवो फिर सात रोजके पीछे चमडामें शहद लगाकर लपेट लेवो और खूब मलो चरस तैयार हो जावेगी ।। २९ ।।

अँग्रेजी मिठाईकी गोलियां बनानी

१ सेर चीनी लेकरके उसमें एक पौंड पानी डालकर खूब मिलाकर फिर आगपर रखकर उसके मैलको उतारकर फिर उसकी चाशनी बनाओ, जब वह जमने लायक बनजावे तब उसको उतारकर ठण्ढा करके उसमें पिपरमिंट थोडासा छोडकर गोलियां बनालें,यदि रंगदार गोलियाँ बनानी चाहो तब उसमें मीठा रंग थोडासा डाल करके बना लेवो ।। ३० ।।

बाल उडानेका अर्क

बीरी असमलफायड एक हिस्सा, खौलताहुवा गरम पानी चार हिस्सा, दोनोंको खरल करके पांच मिनिटतक टिकाकरके रक्खो, फिर छानकर बोतलमें डालकरके कागसे बन्द कर देवो जब काम पडे तब रुईके साथ या ऊंगुलीसे बालोंकी जडोंपर लगा करके मलो फिर पांच मिनिटके पीछे धो डालो बाल उड जावेंगे ।। ३१ ।।

पनीरकी खीर बनाना

दूधको लेकर खूब गरम करो, फिर उसमें जरासी खटाई डालनेसे वह फट जावेगा, उसको ठण्ढा करके एक कपडेमें डाल करके उसके पानीको निकाल देवो उस पकडेपर भार रखकर बिलकुल पानीको निकालकर फिर उसकी चौकोनकी सूरत छोटी २ टिकिया बनाकर उसको चीनीकी चाशनीमें डाल करके पकावे फिर तैयार होजावेगी ।। ३२ ।।

खस्ता कचौरी

एक सेर मैदामें आधापाव घृत डालकर उसको खूब मलो और उड़दकी पीठीमें नमक और गरम मसाला देकर गोल २ बडे तल लेवे, फिर बडोंको कढाईमें कूटकर मैदाके छोटे २ लोइयोंमें भरकर नरम आँचपर तल लेवो बहुत अच्छी कचौरी बन जावेगी ।। ३३ ।।

खताईयोंका बनाना

आधासेर घृत और १ सेर मैदा और आधासेर खांड तीनोंको मिलाकरके खूब हाथसे १ घण्टा तक मलो, फिर एक चौडी परातमें कागज रख करके उसके ऊपर छोटे २ गोल जोडते जावो फिर उसके ऊपर एक चौडी लोहेकी परात रक्खो ऊपर नीचे कोइलोंको जला करके रख देवो जब पक जाय तब उतार लेवो ।।३४।

लकडीपर आबनूसी रंग बनाना

हीराकसीसको पानीमें हल करके तीन चार दफा लकडीपर मलो जब सूख जाय तब माजूके सफूफको गरम करके उसका पौंचा लकडीपर फेर देवे तब उमदा आबनूसका रंग बन जायगा ।। ३५ ।।

रेता पानीमें डालनेसे भी न भीगे

रेताको तेल लगा करके खूब मले फिर उसको पानीमें डालनेसे भी वह रेता नहीं भीगेगा ॥ ३६ ॥

मनसवी रसोतका बनाना

नीमकी पत्ती, इमलीकी पत्ती, बबूरकी पत्ती, हरएक पांच तोले नौसादर छः मासे, अफीम ३ मासा, केसर दो मासा, हलदी, ५ तोले पठानीलोध १ तोला सबको खरल करके खूब मिलावे उमदा रसोत बन जायगा ॥३७ ॥

पारे का जमाना

पाराको एक कढाईमें डालकर उसके ऊपर नमक और तूतिया डालदेवे फिर उसके ऊपर कूण्डा उल्टा धरदेवे, फिर उस कूण्डेपर पानी डालकर उसके नीचे आग जलावे पारा सब जम जावेगा ॥ ३८ ॥

सोने चांदीके जेवरको साफ करना

नमक और फिटकरी दोनोंको बराबर लेकर पीसकर पानीमें मिलाकर जेवरके ऊपर उसका लेप करो फिर आगमें गरम करके किशटाके पानीसे धोकरके खूब साफ करदेवो, उसको कपडासे पोंछकरके जरासी आगकी गरमीसे सुखा देवो ॥ ३९ ॥

कपडेपरके दागको दूर करना

पहले उस दागपर साबुनको मलो फिर चाकको लगाकर सुखावो दो चार दफे करनेसे दाग दूर होजावेगा ॥ ४० ॥

हाथी दाँतके खिलौने साफ करने

नमक, सिंदूर और गन्धकका तेजाब तीनोंको बराबर लेकर पानीमें मिलाकर उस पानीमें हाथीदांतके खिलौनोंको गोता देवे तीन चार दफे खिलौनोंको गोता देनेसे खिलौने साफ होजावेंगे ॥ ४१ ॥

हाथीदाँतके खिलौनोंका स्याह रंग करना

पतंगकी लकडी और हीराकसीस दोनोंको पानीमें पकाकर फिर खिलौनोंको उसमें डाल देनेसे स्याह रंग होजावेगा ॥ ४२ ॥

उबटना मुखपर मलना

हलदी, बेसन, मसूरका आटा, सरसोंकी खली इनको मिला करके मुखपर मलनेसे मुखका रंग उज्ज्वल निकल आता है ॥ ४३ ॥

बगैर दियेके रोशनीका होना

एक चौडे मुँहवाले शीशेमें लौंगका इत्र डालकर फिर उसमें फासफोरसके थोडेसे टुकडे डालकर उसके मुँहको कागसे खूब बंद करके और अँधेरे मकानमें उस शीशेको लेकरके उसपरसे कागको खोल दे रोशनी होजावेगी ॥ ४४ ॥

मोती बनानेका तरीका

उमदा स्वच्छ सीपको २५ दिनोंतक कागजी नींबूके रसमें खरल करो फिर उसको मोतीकी शकल बनाकर चाँदी तारसे उसमें सूराख कर देवो फिर उसको आगमें जलावो उमदा मोती बनजायगा ॥ ४५ ॥

जरयानकी गोली

नकछिकनीबूटी चार रत्ती, अफीम एक रत्ती दोनोंको मिलाकरके ग्यारह ११ गोलियां बनावे, फिर एक गोलीपर चाँदीका वरक लपेट कर एक तोला त्रिफलाके पानीसे एक गोलीको खावे ॥ ४६ ॥

मूलीको उमदा और मोटा पैदा करनेकी तरकीब

जिस खेतमें मूलीको बोना हो उस खेतमें पहले एक केलेको गाड दे फिर मूलीके बीजोंको शहदमें भिगोकर फिर बोवे मूली मोटी और मीठी पैदा होवेगी ॥ ४७ ॥

ककड़ी मीठी बोनेका तरीका

ककडीके बीजोंको दो घंटा तक पहले शहतमें भिगोदे, फिर बोनेसे ककडी बहुत मीठी मजेदार बन जावेगी अगर ककडीके फलके पास बर्तनमें पानी डालकर कईबार रक्खाजावे तब ककडी बहुत बडी बनजावेगी । हैजेवाली स्त्रीका ककडीके खेतके पास जाना मना है ॥ ४८ ॥

बेरके वृक्षको सेवकी तरह बनाना

यदि बेरके दरख्तको सेवका पैरंद लगाया जावे तब बेरभी सेव जैसा होजायगा ॥ ४६ ॥

लसूढकी चटनी

पचास दाना लसूढे, उन्नाब २० दाने, मुलैठी १ तोला, खतमी ४ मासा, खसखसका पोस्त दो तोले, खयारीनका तुखम ४ मासा, बीस दाना ३ मासा, इन सबको दो सेर पानीमें जोश देकर फिर छानकर उसमें १ सेर मिश्री मिलाकर पकावे, जब चाशनी पकजावे तब उतारकरके रख छोडे जिसको कुश्त खाँसी होवे, छः मासासे तोला तक खावे ॥ ५० ॥

खसखसकी चटनी

१ मासा केसर, १ मासा कतीरा, ६ मासा रबुलसोस, ६ मासा निशास्ता, १ तोला गुलेसुरख, १ तोला बबूरका गोंद, एक तोला बंशलोचन, १ तोला सफेद खसखस इन सबको आधासेर पानीमें जोश देकर छानकर १० तोले शहदमें कवार बनावे ॥ ५१ ॥

अलसीकी चटनी

सवा तोला अलसीको लेकरके भून लेवो, मेथी सवातोला, मीठे बदामकी गिरी सवा तोला और कतीरा, मुलैठी, गलगोजाका मगज, निशास्ता, बबूरका गोंद हरएक सात २ मासा इनको कूटकर अंगूरके पानीमें पकाकर जब कि तीसरा हिस्सा बाकी रहजावे तब उतार लेवो ॥ ५२ ॥

लाखको दानेदार बनाना

पहले कच्ची लाखको आगपर कढाईमें रखकर गलावो जब कि गलजाय फिर ठंढाकरनेसे दानादार लाख बनजावेगी ॥ ५३ ॥

सोनेके वर्क बनानेका तरीका

उमदा सोना लेकर उसकी तार खींचकर फिर काट २ करके टुकडे बनावो फिर उन टुकडोंका मुरब्बा सूरत बनाकर फिर हरनके चमडोंके टुकडा बनाकर दो २ हरनेके चमडेके टुकडेमें एक २ सोनेके

टुकडा रखकर फिर सबके ऊपर एक चमडेकी थैली लगाकर फिर उस थैलीको पत्थरकी एक साफ चौकोन सिलापर धरकरके हथोडेसे कूटते जावो सोनेके टुकडे बढकरके वर्क बनजावेंगे ।। ५४ ।।

जैसे कि सोनेके वर्क बनाये जाते हैं वैसेही चाँदीके वर्क भी बनाये जाते हैं और दवाइयोंमें खाये जाते हैं ।। ५५ ।।

धातुओंके जौहर उडाने

दो सकोरोंको जोडकर उनके अंदर दवाको रखकर संपुट बनादेवो फिर संपुटको कोइलाकी आगपर रखो ऊपरवाले सकोरेपर एक कपडेको भिगोकरके रखो, सवा घंटाके पीछे होज़ानेपर खोलो ऊपरवाले सकोरामें जौहर लगे होवेंगे उतार लेवो ।। ५६ ।।

शीशेका काटना

लोहेकी कलमके आगे हीरेकी कणीको लगवाकर फिर लकडीकी तखतीके ऊपर शीशेको रखकरके जितना चाहो उस कलमसे शीशेको काट लेवो ।। ५७ ।।

बोतलके काटनेका तरीका

एक सूतके डोरेको मट्टीके तेलमें तर करके जिस सूरतसे बोतलको काटना हो उसके गिरहदे बांधदेवो फिर दियासलाईसे आग उस डोरेको लगा देवो तुरन्त ही बोतल कट जायगी ।। ५८ ।।

पापड बनानेकी तरकीब

धोई उड़दकी दालका आटा पिसवा लेवो १ सेर उरदकी दालके आटामें ४तोला पापडखार या लोटा सज्जी बारीक पीसकरके मिलावो फिर दो तोले नमक दो तोले गोल मिर्च पीसकर मिलाकरके उसको कडा सानकर खूब हाथसे मलो फिर उसकी छोटी२ लाइयाँ बनाकरके चकलापर बेलकरके पापड बना लेवो ।। ५९ ।।

बिसकुटका बनाना

आधासेर मैदा, पावभर उमदा घृत, और उसमें दो तोले आरारोट मिलाकर उसको दूधमें खूब पकावो फिर उसमें आधापाव मिश्री मिला कर फिर बिसकुटकी शकल बनाकर पकालो ।। ६० ।।

जिस बोतलका काग न खुलता हो उसके खोलनेका तरीका

गरम पानीमें कपडेको तर करके बोतलके मुखपर लपेट देवो थोडी देरमें काग निकल आवेगा ।। ६१ ।।

उमदा उबटनका बनाना

दो तोले बादाम, दो तोले ख्यारीनका मगज, मीठे कद्दूका मगज दो तोले और जौका आटा दो तोले, छोटी इलायची दो तोले, केशर, छः मासा, बालछड तीन मासा, नागरमोथा १ मासा, कपूरकचरी ३ मासा, बदामका तेल १ तोला, खसखसका तेल ३ तोले, चमेली तेल १ तोला, सबको मिलाकर उबटन बनालो ।। ६२ ।।

चिमनीको मजबूत बनानेका तरीका

चिमनीको दूधमें डाल करके खूब पकावो फिर निकाल करके ठंडा करके पोंछ लेवो, वह जलदी नहीं टूटेगी ।। ६३ ।।

मुख देखनेके शीशेको बनाना

कागजको साफ तख्तापर रखकर उसके ऊपर कलईका वर्क धरकर उस वर्कके ऊपर पाराकी पतली २ तहको जमावो फिर धीरेसे उसपर शीशेको धरकर उस कागजको जमा देवो मुख देखनेवाला बन जायगा ।। ६४ ।।

दूरबीनका शीशा बनाना

शोरा अढाई पाव, सिंदूर डेढपाव, कांचका बुरादा दो पौंड इन सबको मिलाकर फिर पिघला करके दूरबीनके शीशेको बना लेवो ।। ६५ ।।

मांस जल्दी गलजाय

जब कि कलियाको पकाने लगे तब उसको भूनकर पीछे जरासा उसमें गुड डालदे तुरन्तही गल जावेगा । अथवा पहले मीठा दही डालकरके उसको खूब भूनै फिर और मसालाभी दहीके साथही डालदे फिर जल डालदे तुरन्तही गल जावेगा ।। ६६ ।।

बिना मोसम दरख्त फलोंको देवे

ऊँट और मुरगेके गोबरको दरख्तकी जडोंमें खादकी जगहपर डाल देवे परन्तु जल उसको बहुत कम देवे फल आजावेंगे ।। ६७ ।।

अंडेका नाचना

पानीके गिलासमें सलफूरिआसिडको डालकर फिर मुरगीके एक अंडेको उसमें डालदेवे अंडा आपसे आप नाँचेगा ।। ६८ ।।

मिकनातीस पत्थरकी पहचान

मिकनातीस नाम चुंबक पत्थरका है । यह तीन तरहका होता है १ लाल, २ भोसला, ३ लाजवरद तीनोंमें लाज वरदही अच्छा होता है यदि उसको लोहेकी सूईके पास किया जावेगा तब उसको अपनी तरफ वह खेंचलेता है ।। ६९ ।।

देशी तरीकेसे कुनैनका बनाना

जिस गिलोयकी बेल नीमके दरख्तके ऊपर फैली होती है वह अच्छी होती है उसकी पत्ती और टहनियोंको तोडलेवे फिर मेंचकाकी पत्ती और नीमके दरख्तकी पत्ती और सूखा चिरायता सबको बराबर लेकर चार पांच रोज तक पानीमें भिगोदेवे फिर मल करके छानलेवे और इस छानेहुये पानीको आग पर सुखालेवे तब उमदा देशी कुनैन बनजावेगी ।। ७० ।।

काले रंगकी पक्की स्याहीका बनाना

कच्ची लाख पावभर, पठानी लोध १ तोला, सज्जी ३ तोले, सुहागा ३ तोले, काजल ५ तोले, सबको मिलाकर लोहेकी कढाईमें घोटे दोचार दिन खूब घोटनेसे स्याही तैयार हो जावेगी ।। ७१ ।।

खडिया मिट्टीसे लकडीके दरारोंको बंद करनेका तरीका

खडिया मट्टी अच्छी उमदा लेकर उसमें सरेस मिलाकरके हलकरके दरारोंमें लगादेवो बंद होजावेगी ।। ७२ ।।

गोंदकी टिकियोंका बनाना

गोंदको साफ करके पानीमें घोलदेवो जब कि खूब गल जाय, तब फिर उसको किसी मोटे कपडेमें छानलेवो, फिर दूसरी बार

छान करके सांचोंमें डाल करके टिकिया बना करके सुखा लेवो, फिर काममें लावो ।। ७३ ।।

औजारोंको जंग न लगे

औजारोंपर बादाम रोगन लगा देनेसे फिर जंग नहीं लगेगा ।। ७४ ।।

मांस नहीं गले

अगर आप चाहते हो कि मांस कभीभी न गले तो पकते हुये मांसमें एक औंस पारेको छोड देवो नहीं गलेगा ।। ७५ ।।

असली पीपरमिंट बनानेका तरीका

सब्जपूदीनेका अर्क पावभर, सफेद शोरा पावभर, नौशादर आधा तोला, कपूर आधा तोला, सबको महीन पीसकर पूदीनाके अर्कमें डालकर फिर लोहेके पालिश किये हुये दो कटोरोंको लेकर एक कटोरामें उस अर्कको डालकर ऊपर दूसरे कटोरेको रखकर फिर मुलतानी मिट्टीसे खूब कपडमिट्टी करके सुखाकर चूल्हेपर रखो और नीचे उसके नरम २ आग जलाओ और ऊपरवाले कटोरेपर कपडेको भिगो करके रखदेना, एक सवा घंटेके पीछे ठंढा करके खोलना ऊपरवाले कटोरेमें जौहर सब लगे होवेंगे वही उमदा पीपरमिंट होगा उतारकर काममें लावो ।। ७६ ।।

मीठी पूरीका बनाना

१ सेर मैदामें आधापाव घृत डालकर उसको खूब गूंदो फिर उसमें अंदाजसे चीनी मिलाकर गूंदो, फिर आधापाव पिस्ता, आधापाव बादामकी गिरी इन दोनोंको धोकर छिलका उतारकर एक तोला अदरखका रस मिलाकर खूब बारीक पीसो फिर पूरियोंमें भरकर बेलकर घीमें तल लेवो बहुत अच्छी बनेगी ।। ७७ ।।

बेदाना बनानेका तरीका

मैदा और चावलका आटा दोनोंको बराबर लेकर एक बरतनमें डालकर खमीर बनावे फिर घृतको कढाईमें गरम करके जरासा खमीर घृतमें डालकरके देखे कि तैरने लगाहै या नहीं, जब तैरने लगे

जाय तब फिर एक बडे झरनेको कढाईपर धरकर उसपर थोडा २ खमीर डालकर कढाईमें छोडते जावो जब कि वह घृतमें पकजावे, तब दूसरे झरनेसे निकाल कर चाशनीमें डालकर निकालते जावो यह उमदा बूंदिया होवेगी ॥ ७८ ॥

बालूशाहीका बनाना

१ सेर मैदामें पावभर घी डालकर उस घृतको मैदासे ढककर कपडेको उसके ऊपर देदेवें, फिर सवा घंटाके पीछे मैदेको खूब सानें और मैदेको बालूशाहीकी सूरत बनाकर फिर घृतमें उनको तल ले जब कि लाल होजावें, तब चाशनीमें उसको छोडदे जब चाशनी को पीले तब निकालकर रख दे ॥ ७९ ॥

सीता भोग

एक सेर चावलके आटेमें १ छटांक घी मिला करके फिर उसमें पावभर फटाहुवा दूध मिलाकर फिर ऊपरवाली रीतिसे बुंदियां झरनी से निकालकर घृतमें तलकर फिर चाशनीमें डालकर तैयारकरलेवे॥

खजूरे बनानेकी रीति

आधासेर मैदामें १ छटांक घी डाले फिर पावभर चीनीकी चाशनी दो तारी बनाकर उसी मैदामें छोड देवे और थोडी देर तक उसको ढक देवे फिर उस मैदाको खूब साने, फिर खजूरोंकी शकल बनाकर घृतमें तल लेवे यह खजूर बडी खस्ता बनेगी ॥ ८१ ॥

मोतीचूरका लाड्डू

आधासेर मैदा और पावभर चनेका आटा दोनोंको खूब मल करके कढाईमें घृत डालकर झरनेसे उसकी पहले बूंदियां निकाल ले फिर उसको चाशनीमें डाले, जब चाशनी उसमें मिलजाय तब लड्डु बनाले, जब काम पडे तब खावे ॥८२ ॥

सादे लड्डु

आधासेर मैदाको डेढपाव घृत कढाईमें डाल करके भूने जब कि मैदा भुन जावे तब बादामकी गिरी पिस्ता चिरौंजी इनको साफ कर कतर समें आधासेर चीनी और गिरीको मिला करके लड्डु बना लेवो ॥ ८३

मालपुवोंका बनाना

१ सेर मैदा और आधा सेर मीठा दही और डेढ पाव चीनी तीनोंको मिलाकर पानी डालकरके खूब मधानीसी लेईकी तरह् वनावे फिर लोहेकी छोटी तबीको आग पर धरकर उसमें घृतको डालो जब कि गरम हो जावे तब कटोरेसे थोडा २ डालकरके फिर झरनीसे पलट-करके दो झरनियोंसे निकाललेना ॥ ८४ ॥

पेठेकी मिठाईका बनाना

सफेद मीठे पेठेको लेकर उसका छिलका उतार देवो फिर बीचसे बीज निकालकर फिर उसकी दो अंगुल चौडी और चार अंगुल लंबी फांकें बनाकर फिर किसी सलाईसे खूब खोचना फिर चाशनीमें इनको पकाकर कढाईके किनारोंकी तरफ फांकोंको चढाकर चाशनी-को उनपर लगाते जाना जब तैयार होजाय उतार लेना ॥ ८५ ॥

शंकरपालोंका बनाना

सेरभर मैदामें पावभर घी डालकर मैदाको खूब मलना फिर उसमें बादामकी गिरी और इलायचीका पानी मिलाकर फिर उसकी चकला पर चौंडी मोटी रोटीकी तरह् बनाकर चाकूसे लम्बे २ या चौकोन काटकर उनको घीमें तलकर फिर चाशनीमें डालकर उनपर खांडको चढाकरके तैयार करलेना ॥ ८६ ॥

दहीके बडे

उड़दकी दालको धोकर पीसकर उसकी पीठी बनाना फिर एक हांडीमें आधा सेर दहीको कपडेमें छानके भरदेवे और आधासेर उसमें जल भी डालदेवे फिर पीठीमें धनियां, जीरा, गोल मिर्च, सोंठ, नमक यह् मसाला पीसकर मिलाकर छोटे २ बडे घीमें या तेलमें तलकर गरम गरम उस हांडीमें छोडता जावे जब कि सब छोड चुके तब मीठे दहीको छानकर उसमें नमक मसाला डाल करके उसी हांडीमें छोड देवे फिर तीन घण्टे पीछे खावे । यदि खट्टे बडे बनाने होवें तो ऊपरवाली रीतिसे बनाना । सिर्फ फर्क इतना है, कि दहीकी जगहमें

इमलीके रसमें नमक मिर्च पीसकर छोडना और उसीमें बडोंको छोडता जावे या अरकनानामें छोडे, या इमलीका रस और सिरका मिलाकर उसमें छोडे या अरकनाना और नींबूका रस मिलाकर उसमें छोडे ।। ८७ ।।

किसमिसकी चटनी

पाव भर किसमिसको लेकर उसके तीले निकालकर धोकर साफ करके रक्खे फिर नमक गोल मिर्च-लालमिर्च इनको अंदाजसे डालकरके किसमिसको खूब सिलीपर पीसे, फिर उसमें आधापाव सफेद चीनी और आधापाव नींबूका रस या अरकनाना डालकरके मिट्टीके बरतनमें डालकरके रखदेवे तीन घण्टे पीछे खावे यदि केवल खट्टी बनानी हो तो चीनी न डाले और सब उसी तरहसे छोडकर बनावे ।। ८८ ।।

पोदीनेकी चटनी

पाव भर पोदीना, आधापाव हरा धनियां, आधापाव अमचूर, अंदाजसे नमक, मिर्च और जीरा छोडकर खूब महीन पीसे, फिर उसमें आधा पाव नींबूका रस डालकरके तीन घण्टा रखकर खावे ।। ८९ ।।

आमकी चटनी

पावभर हरे आमोंका गूदा निकालकर उसमें दो तोले नमक, १ तोला काली मिर्च डालकरके खूब महीन पीसे और आधापाव सफेद चीनी आधा पाव सिरका मिलाकर तैयार करे, यदि खट्टी ही बनानी होवे, तब चीनी नहीं डाले और सब बराबर ऊपरके अनुसार ही बनावे ।। ९० ।।

धनियाकी चटनी

पावभर सूखा धनियां, १ छटांक जीरा सफेद और काला, आधा पाव सूखा अमचूर, अंदाजसे नमक और लालमिर्च तथा गोलमिर्च इन सबको खूब महीन पीसे और १ छटांक प्याज, एक तोला लह-

सुनको महीन पीसकर उसमें मिला देवे फिर एक छटांक इमलीका रसभी छोडदेवे, मगर सब चीजोंको अंगूरी सिरकेमें पीस करके रख-देवे फिर दो घण्टा पीछे खावे ।। ६१ ।।

हाजमाका पानी

आधा पाव राईको महीन पीसकर उसमें चार सेर पानी डालदेवे और अन्दाजसे नमक और गोल और लाल मिर्च भी पीसकर उसमें मिलादेवो और एक छटांक जीरा भी पीसकर उसीमें छोड देवे फिर जब कि खट्टा होजावे तब उसमें आधापाव नींबूका रस या सिरका और आधापाव अरकनानाभी छोड देवे जब कि धूपमें रखनेसे मजे-दार बनजावे तब फिर पिया करे ।। ६२ ।।

इति श्रीस्वामिनंसदासशिष्येण परमानंदसनाख्याधरेण विरचिते गुणोकीपिटारीनामकग्रन्थे तृतीयो ध्यायः ।। ३ ।।

चतुर्थ अध्याय

इस अध्यायमें रसोंके बनानेकी रीतियां और काष्ठादि दवाइयोंके बनाने और सेवनकी रीतियोंको लिखते हैं ।।

प्रभूतरस

पारा तोला १, संखिया तोला १, हरताल तोला १, आंवलासार गंधक तोला १ इन चारोंको पहले कही हुई रीतिसे शोधलेवे, फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्ड, बहेडा, आंवला, हरएक एक २ तोले, सुहागा १ तोला, जमालगोटा १ तोला, जमालगोटेको छीलकर उसकी गिरीको निकालकर फिर उस गिरीको फाडकरके उसके भीतरकी बारीक सबजीको भी निकाल देवे, गिरीकी दालमात्रको रख लेवे, और उसको दूधमें शिगरफकी तरह शोध लेले । फिर पारा और हरताल मिला करके खरल करे फिर उसमें गन्धक और संखियेको मिला करके खरलकरे, फिर सुहागाको पीस करके उसमें मिलाकर खरल करे, फिर उसमें एक तोला शहद मिलावे, फिर उसमें १ तोला लौंग और १ तोला जवाखार मिलावे, फिर ऊपरवाली सोंठ वगैरह सब औषधियोंको बारीक पीसकरके मिलाकर खरल करे, फिर भांगराके रसमें बारह पहर खरल करे, फिर एक २ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनावे, शरीरकी पुष्टिके वास्ते १ गोलीको पानके साथ खावे और वीर्यके स्तंभनके वास्ते १ गोली अदरखके रसके साथ खावे और ज्वरवाला गौके घृतमें १ गोली खावे और अजवाइनके साथ खानेसे पथरी दूर होवे और बबूरके फलके साथ खानेसे फिरंग दूर होता है और नीमके रसके साथ खानेसे ज्वर जाता है, गूमाके रसके साथ खानेसे विषम ज्वर भी जाता है और नीमके रसके साथ खानेसे अठारह प्रकारका कुष्ठभी जाता है । पथ्य इसका चनेकी रोटी अलोनीहै कुष्ठवालेके वास्ते और रेठाके पानीके साथ खानेसे चिगनी प्रमेह दूर होता है और अलसीके तेलमें एक गोलीको घिसकरके उस तेलके मलनेसे सब तरहका दर्द भी दूर होता है । धतूरेके रसमें मिलाकर मलनेसे कमरका दर्द दूर होता है, पसुरिया वायु अर्द्धांग, गठिया

यह सब जाते रहते हैं और कटेरीके रसके साथ खानेसे दमा भी जाता रहता है, गोमूत्रमें मिलाकरके खानेसे क्षय रोग जाता है, नींबूके रसके साथ खानेसे भूख बहुत लगती है, नेत्रोंमें इस गोलीका अंजन करनेसे जलका बहना दूर होता है, बकरीके मूत्रके साथ खानेसे ताप-तिल्ली दूर होती है, पेटके कीडेभी मर जाते हैं, छोटी इलायची या चीनी या कपूरके साथ खानेसे मुखकी दुर्गंध दूर होती है लौंगके साथ खानेसे अजीर्ण दूर होता है ।। १ ।।

पाचक हरतालगुटिका

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध हरताल १ तोला, शुद्ध शिंगरफ १ तोला, शुद्ध आंवलासारगन्धक १ तोला, सुहागा १ तोला, मैदा सोंठ १। तोला, गोलमिर्च १ तोला, पीपल १ तोला प्रथम पारा और गन्धकको खरलमें डालकर एक घण्टाभर दोनोंको मिला करके खरल करे, फिर बाकी सब दवाइयोंको मिलाकरके दो घण्टे तक खरल करे, फिर उसमें १ छटांक अदरखका रस मिला करके खरल करे, फिर मूंगके दानेके बराबर गोली बांधे और १ गोलीको सबेरे स्नान करके नित्य ही थोडे दिनों तक खावे, तब सब तरहकी वातव्याधि दूर होवे और मंदाग्नि तेज होजाय और संग्रहणी शीतज्वर आदि उदरके सब रोग दूर होजावें ।। २ ।।

गोली घोडाचोलीकी

तबकीया हरताल १ तोला, पारा १ तोला, बच १ तोला, सोंठ १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, बडीपीपल १ तोला, आंवलासारगंधक १ तोला, कुटकी १ तोला, बडीहर्डकी छाल १ तोला, सुहागासफेद १ तोला, तेलिया वच्छनाग १ तोला, मीठा संखिया १ तोला, जमा-लगोटा १ तोला, हींग १ तोला, गोखरू १ तोला यह सब १५ दवा-इयां हैं इन सबको जुदा २ पीस छानकर फिर इनको लोहेके खरलमें डालकर उसमें भांगरेका रस डालकर लोहेके डंडेकेसाथ चालीस रोज तक बराबरही खरल करना, फिर १ रत्तीके बराबर इसकी गोलियां बनालेनी और छायामें उनको सुखा लेना ।। ३ ।।

संग्रहणीवालेको १ गोली गौके मट्ठेके साथ देनी या तीन दिनतक बराबरही १ गोली छाछके साथ खावे और ऊपरसे खट्टी और मीठी चीजको न खावे ॥ १ ॥

जिसको बदहजमी हो या पेटमें दर्द हो, उसको १ गोली घृतके साथ देनी ॥ २ ॥

अगर किसीको सांपने काटा हो तब उसकी टांगकी पिंडलीको मलकर जरासा रुधिर निकालकर उस गोलीको जलमें घिस करके उसी जगहपर लगादेनी ॥ ३ ॥

जिसके पेटमें कीडे पड गये हों तो अदरखके साथ एक गोली उसको खिलादेवे ॥ ४ ॥

जिसको बिच्छुने काटा हो तो सोंठके पानीमें एक गोली घिस करके उसी जगहपर लगा देवे ॥ ५ ॥

जिसके शरीरमें जलन होवे आंवलाके रसमें एक गोलीको घिसकर उसकी आंखोंमें लगावे ॥ ६ ॥

और जो कि नित्य ही सबेरे (प्रातःकालमें खावे तब उसका शरीर निरोग रहे, परन्तु ऊपरसे घृत दूध खूब खावे ॥ ७ ॥

और जो कि एक गोली शहदके साथ तीन दिन तक नित्यही खावे तो भोगशक्ति बहुत बढे ॥ ८ ॥

जिसके नेत्र बहुत लाल होजायं तो एक गोलीको जलमें घिसकरके नेत्रोंमें लगानेसे लाली जाती रहेगी ॥ ९ ॥

मुरगीके अंडेकी जरदीको जलके साथ मिला करके उसमें एक गोलीको घिसकर लिंग पर लेप करके भोग करे तब स्त्री वशमें हो जाय ॥ १० ॥

सुजाक वाला जवाखारके साथ एक गोलीको खाय अच्छा हो जावेगा ॥ ११ ॥

जिसके सिरमें दर्द हो मीठे तेलमें एक गोलीको मिलाकरके मले ॥ १२ ॥

जिसको जलंधररोग हो वह नौ मासे ब्रह्मदण्डीके साथ एक गोलीको खाय ॥ १३ ॥

अगर चालीस रोजतक १ गोलीको तोलाभर चीनीके साथ खावे तो शरीरके सब रोग चले जावें ॥ १४ ॥

बदहजमीवाला पानके साथ एक गोलीको खावे ॥ १५ ॥

शहदके साथ एक गोली खानेसे बंधेज बहुत होवे ॥ १६ ॥

जिसके जोडोंमें दर्द हो वह शहद मिर्च और पीपलके साथ एक गोलीको खाय ॥ १७ ॥

जिसका सिर घूमता हो या चक्कर आता हो तो तोला भर बचके साथ पीसकर एक गोली खावे ॥ १८ ॥

जिसके मुखसे दुर्गंधि आती हो तो नौ मासे खसखसके साथ एक गोलीको खाय ॥ १९ ॥

जिसको नासूर हो वह बिल्लीकी हड्डीके साथ एक गोली घिस-करके लगावे ॥ २० ॥

अगर बालचर हो तो जरासे घूंघचीके रसके साथ गोलीको घिस करके लगानेसे बाल निकल आते हैं ॥ २१ ॥

जिसका पेट चलता हो वह अजवायन घोटकर एक गोली उसमें मिलाकर खावे ॥ २२ ॥

जिसके उदरसे खून जाता हो वह मोचरसके साथ एक गोली खावे ॥ २३ ॥

जिसके कानमें दर्द हो वह दो मासे खजूरके रसके साथ एक गोलीको घिस करके कानमें डाले अच्छा होजावेगा या अजवायनके रसके साथ घिसके कानमें छोडे ॥ २४ ॥

जिसके दांतोंमें दर्द हो वह जीरेके रसके साथ एक गोली घिसकर दाढोंपर मले ॥ २५ ॥

और रतोंधीवाला एक गोलीको अपने थूकके साथ घिसकर नेत्रोंमें लगावे ॥ २६ ॥

जिसको छाजन हो वह वह बैंगनके रसके साथ एक गोली मले॥२७

जिसको बादी बहुत हो वह सोंठ और गरम दूधके साथ एक गोलीको खाय ।। २८ ।।

जसके पेटमें दर्द हो वह लौंगके साथ एक गोलीको खावे ।। २९ ।।

और गोखरूके रसके साथ खानेसे पेशाबकी जलन जाय ।।३०।।

चालीस सुपारीके रसके साथ १ गोली खानेसे कमरका दर्द चला जाय ।। ३१ ।।

असगंधके साथ एक गोली खानेसे या माथेपर लगानेसे सिरका दर्द दूर होजाता है ।। ३२ ।।

धतूरेके रसके साथ एक गोली खावे तो नारवा रोग चला जाता है ।। ३३ ।।

त्रिफलाके साथ १ गोलीको खानेसे मुखके सब रोग चले जाते हैं।।३४।।

बकरीके दूधके साथ १ गोली खानेसे पथरीकी बीमारी चली जाती है ।। ३५ ।।

घृतके साथ खानेसे पेटका दर्द चला जाता है ।। ३६ ।।

मीठे तेलमें या फुलेलमें एक गोलीको घिस करके मलनेसे शरीरकी दुर्गंधी जाती रहती है ।। ३७ ।।

त्रिफलाके साथ खानेसे त्रिदोष जाता है ।। ३८ ।।

अजवाइनके साथ ११ गोलीके खानेसे छातीका दर्द जाता रहता है ।। ३९ ।।

मालकांगनीके साथ खानेसे बल बढता है ।। ४० ।।

जिस स्त्रीके बालक न जन्मता हो, उसको इन्द्रजौंके साथ खिलानेसे तुरन्त प्रसूत होजाती है ।। ४१ ।।

बडके साथ खानेसे अतीसार दूर होता है ।। ४२ ।।

आंवलाके रसके साथ खानेसे कमरका दर्द जाता है तथा भांगके रसके साथ खानेसे पांवका रोग जाता है ।। ४३ ।।

शहदके साथ खानेसे शरीर मजबूत होता है ।। ४४ ।।

गौके दूधके साथ खानेसे रुका हुआ पेशाब जारी होजाता है ।। ४५ ।

आंवलाके रसके साथ खानेसे जलन दूर होती है ।। ४६ ।।

जटामांसीके साथ खानेसे गर्भ रह जाता है ॥ ४७ ॥

तुरई रसके साथ इक्कीस दिन उक एक गोली नित्य खानेसे फिरंग बात दूर होजाता है ॥ ४८ ॥

जिसको सर्पने काटा हो उसको सैंधेनमकके साथ खिलानेसे विष उतर जावे और चीतके साथ देनेसे भी विष उतरजाता है ॥ ४९ ॥

चूनेके साथ १ गोली देनेसे पागल कुत्तेका विष उतर जाता है॥५०॥

गधेके मूत्रके साथ देनेसे मिरगी जाती रहती है ॥ ५१ ॥

अकरकराके साथ देनेसे खांसी दूर होती है ॥ ५२ ॥

बबूरके रसके साथ पंद्रह दिनतक नित्य एक गोली खानेसे दमा जाता रहता है ॥ ५३ ॥

जिसको कफ होवे उसको इलायची, शहद, लौंग, तीनों ६ मासे लेकर लौंग इलायचीको पीसकर शहदमें मिलाकर उस गोलीको रखके खावे, बलगम जाय ॥ ५४ ॥

अदरखके रसके साथ खानेसे भूत प्रेतकी छाया जावे ॥ ५५ ॥

भंगरेके रसके साथ देनेसे बादी दूर होती है ॥ ५६ ॥

हींगके साथ खानेसे संग्रहणी जाती है ॥ ५७ ॥

पानके साथ देनेसे कफ दूर होता है ॥ ५८ ॥

नींबूके रसके साथ खानेसे सब तरहका कुष्ठरोग दूर होता है। चालीस दिनों तक एक गोली रोज खावे और ऊपरसे चनेकी रोटी खावे ॥५९ ॥

आंवलाके रसके साथ खानेसे मृगी दूर होती है ॥ ६० ॥

भांगरेके रसके साथ खानेसे पुराना ज्वर दूर होजाता है ॥ ६१ ॥

संभालूके रसके साथ देनेसे शीतज्वर जाता है ॥ ६२ ॥

मुनक्केके साथ खानेसे भूख बहुत लगती है ॥ ६३ ॥

आंवलाके रसके साथ खानेसे खरीशरोग दूर होता है ॥ ६४ ॥

अजमोदाके रसके साथ खानेसे कृमिरोग दूर होता है ॥ ६५ ॥

चित्रकके साथ खानेसे भूख बहुत लगती है ॥ ६६ ॥

मीठेके साथ खानेसे सन्निपात दूर होता है ॥ ६७ ॥

माण्डूर

लोहेकी मैल पुरानी दो सेर लेवे और उसको अग्निमें गरम करके चार सेर गोमूत्रमें पचीस बार बुताओ, फिर उसको इमामदस्तामें कूट करके जौ कोंब करदेवे फिर एक मिट्टीकी मोटी हांडी लेकर उसमें माण्डूरको डालकर उसमें गोमूत्र भरदेवो फिर उस हांडीको गोठोंपर धरकर आग लगा देवो, जितना गोमूत्रको वह मण्डूर अधिक पीवेगा उतना ही अच्छा होवेगा फिर उसको सुखा करके कूटकरके फिर उस हांडीमें अंगूरी सिरका भरकर उसमें माण्डूरको डालकर संपुट बनावो यदि अंगूरी सिरका न मिले तब घीकुवारका गूदा उसमें भरकर संपुट बनाकर गजपुटमें उसको फूंकडालो, जब कि ठंढा होजाय तब निकाल-कर खरलमें पीस करके रख छोडो खुराक इसकी रत्तीसे मासा तक धीरे २ बढानी चाहिये । जिसको पांडुरोग हो उसको ३ मासे शहद और डेढ मासा गौका घृत उसमें डालकर उसमें माण्डूरकोतवेपर पीस-कर मिला करके २१ दिनों तक खवावे और घृतके साथ रोटीको खावे या मीठेसे बिना दूध रोटीको खावे और बलके वास्ते मलाईके साथ खावे । जिसकी धातु जाती हो वह मक्खनके साथ खावे और खुश्क खांसी वाला छोटी इलायची, बंशलोचन, शहद, घृत इन चारोंको मिलाकर इनमें एक रत्ती माण्डूरको डाल करके खावे मगर वंशलोचन वगैरह हरएक चार २ रत्ती होवें, सबेरे या सामको खावे बलगमी खांसीवाला डेढमासा पीपल और ३ मासा अदरखका रस, पीपलको कूटकर उसमें मिलाकर १ रत्ती माण्डूरको खावे और दमेवाला डेढ मासा सनायका आटा, धमासा, शहद १।। मासा, पीपल इनमें दो रत्ती माण्डूरको मिला करके खावे ।। ४ ।।

मोतियाबिंदुकी औषध

हरड, बहेडा, आंवला इन तीनोंका नाम त्रिफला है सो आधासेर त्रिफलाको लेकर इसमें दो सेर पानीको डाल करके औटावे, जब कि १ सेर रहजाय तब उसको एक बरतनमें छान ले फिर उसमें १ पाव भर केलेके पत्तेके रसको मिलावे फिर १ पावभर उसमें सौंफका

अर्क मिलावे फिर पावभर मेहंदीका रस मिलावे फिर आधासेर गौका घृत उसमें डाल करके औटावे, जब कि पानी सब जल जाय तब उतारकर उस घृतको एक दियेमें डाल करके काजल उतारे फिर उस काजलमें छः मासे बिना छिदे मोती और छः मासे कपूर और छः मासे खमीरा डाल करके खरल करके सुरमा लेवे, उस सुरमेको नित्यही सबेरे आंखोंमें लगानेसे २१ दिनों तक मोतियाबिंदु निकल जायगा अचार वा खटाईको न खावे ।। ५ ।।

जिसकी आंखोंमें धुंध हो ढलका हो रतोंधी हो उसकी औषध

एक कागजी नींबू लेकर एक उमदा हरदीकी गांठको उस नींबूमें खोसदे और उस नींबूको सीधा छायामें धरदे कि उसका रस निकलने न पावे जब कि नींबू सूख जाय तब उसमेंसे हरदीकी गांठको निकालले और नींबूको फेंकदे, सबेरे और सामको पत्थरके उरसेको धोकरके हरदीकी गांठको जरासे पानीमें घिसकरके २१ दिन आंखोंमें लगावे धुन्ध जाती रहेगी ।। ६ ।।

धुन्धकी दूसरी दवा

१६ दाने सफेद गोलमिर्चके लेवे, और चमेलीके फूलकी ६ कलीको लेवे और ८० तिलीके फूलोंकी कलीको लेकर तीनोंको खरल करके खूब महीन करे फिर कपडेमें छानकरके किसी शीशीमें धरदे सबेरे और सन्ध्याको आंखोंमें पन्द्रह या बीस दिनों तक लगानेसे धुन्ध दूर हो जावेगा ।। ७ ।।

आंखमें जाले और फूलीकी दवा

१ तोला फिटकरी, १ तोला सेंधानमक, १ तोला कलमी शोरा तीनोंको खरल करके फिर इनको किसी कटोरीमें डालकर चार दफे इनके ऊपर मदारका दूध चुवा करके सुखावे फिर संपुट बनाकर चार सेर आरने उपलोंमें फूंकदे फिर उसको खरलमें पीसकर उसमें १ मासा पिपरमिंट, १ मासा नींबूका सत, १ मासा मेहंदीका सत इन तीनोंको मिलाकरके फिर खरल करके एक शीशीमें डाल-

करके रख छोडे, आंखोंमें जस्ताकी सलाईके साथ लगानेसे जाला, फूली और धुन्ध यह सब दूर हो जावेंगे ।। ८ ।।

सिर दर्दकी औषध

गरमीसे यदि सिरमें दर्द हो तब कपूर या संदल सफेद या धनियां काहूके बीज या पोस्तका दाना या नीलोफल इनको पानीमें रगड करके सिरमें लगाना और सूंघना या अफीमको गुलेरोगनमें घोलकरके लगाना या सिरकेमें घोलकरके लगाना या मेहंदीके फूल और पत्तीको सिरकेमें पीस करके लगाना या कबाबचीनीको गुलाबके अर्कमें घिस करके लगाना अच्छा हो जावेगा । अगर सरदीसे सिरमें दर्द हो तब केसर या कस्तूरी घिस करके लगाना ।। ६ ।।

अगर उठते या चलते समय अंधेरा नजरमें आजावे और सब चीजें घूमती मालूम हों तब ऐसा करना

धनियां तिमरे हिन्दी, विनफा, नीलोफरके फूल, बडी हर्ड, यह सब छः मासा लेकर आधा पावके अर्क गुलाबमें रात्रिको भिगोकर सबेरे मलकर छानकर उसमें दो तोले मिश्री मिला करके पीजावे, दो या तीन दिन बराबर पीवे ।। १० ।।

जुखामकी औषध

कपडेको गरम करके सिरको सेकना और चनोंको भुनाकर गरम गरम सूंघने या चूना और नौशादरको मिलाकर एक शीशीमें डाल-करके सूंघना अधिक गरमी करे तब बिनोशांके शरबतमें मकोहका अरक डाल करके पीना ।। ११ ।।

बिगडे जुकामकी दवा

जिसका जुखाम बिगड जाता है उसका रेशा नाकके रास्तेसे नहीं निकलता है किन्तु गलेके भीतर गिरता है, तब गलेके भीतर खुरकसी मालूम होती है, जलदी इसकी दवाई करे नहीं तो इसीसे दमा भी पैदा हो जाता है इसके वास्ते बर्फ-बडी फायदा करती है सो इस तरहसे बनाई जाती है—पांच तोले गोल सफेद मिर्च, खुरासानी अजवाइन ५ तोले, अफीम अच्छी साफ की हुई दो तोले, केसर १

तोला, बालछड ३ मासे, अकरकरा ३ मासे, फरफयू ३ मासे, सबको कूटकर फिर सबसे तिगुनी शहद मिलाकर एक टीनकी डिबियामें डालकर उसको ढकनेसे बन्द करके फिर एक सेरभर जौ साबित लेकर १ थैलीमें डाल कर उनके बीचमें डिबियाको रख करके थैलीको कसकर बांधकर लटका दे, तीन महीनेके पीछे जौमेंसे डिबियाको निकाल करके काममें ले। खुराक एक मासेसे दो मासे तक सबेरे और संध्याको खावे बिगडा हुआ जुखाम अच्छा हो जावेगा। नजला भी इससे अच्छा हो जाता है, दमेवालोंको भी इसके खानेसे फायदा होता है, बन्धेजको भी यह करती है ।। १२ ।।

नेत्रोंके रोगकी दवा

जिसके नेत्रोंसे पानी जारी हो या दर्द हो तब फिटकरीको फुला करके और अफीम केसर इन तीनोंको लेकर तिमरे हिन्दीके पत्तेके रसमें रगडकर गरम करके पलकों पर लगावे अगर नेत्रोंमें लाली हो तब नीमकी पत्तीका और मकोहकी पत्तीका रस निकाल कर लगाना या अफीम केसरको गुलाबके अर्कमें घिस करके लगाना, यदि नेत्रोंसे पानी जारी रहे और बार बार निकले तब एक टुकडेमें पोस्तेको कूटकर डाले और जरासी अफीम डाले और भिगो करके उस पोटलीको पुन : नेत्रोंपर रक्खे, और ऊपर लिखी हुई नींबूकी हरदीकी गांठको घिसकर लगावे ।। १३ ।।

हमेशा नेत्रोंमें डालनेका अंजन

जिसके सेवनसे नेत्रोंमें कभी किसी तरहकी बीमारी न हो, एक छटांक शीशेको लेकर एक लोहेके कलछेमें डालकर गलाकर फिर किसी बरतनमें आधासेर दूध गौका डालकर सातवार शीशेको बुतावे फिर कूटकर चौडे २ पत्र बनाकर कैंचीसे उनको जौके बराबर कतरले और उनको खरलमें डालकर आधापाव गुलाबका अर्क डालकर खरल करे जब कि सूख जाय तब एक कटोरे पर कपडा बांधकर छान ले फिर उसमें गुलाबका अर्क डालकरके खरल करे फिर सूख जाने

पर महीन छान ले इसी तरह अर्क डाल डालकर सारा तैयार करले, एक शीशीमें रख छोडे और नित्य सबेरे नेत्रोंमें लगाया करे ।। १४ ।।

नाककी बीमारियोंकी औषध

जिसकी नकसीर फूटे, फिटकरीको पीसकर नाकमें फूंके अगर नाकसे दुर्गंधी आवे तब हरे पूदीनेको पीसकर उसका रस नाकमें टपकावे या कडुवे कद्दूका पानी टपकावे या अजमोदा, बायबिडंग, शिगरफ, अजवायन, खुरासानी, सबको बराबर लेकर पीसकर नास लेवे । यदि नाकमें सूजन हो जाय पक जाय तब सफेद कत्था,काली-हर्ड इनको पानीमें पीस करके नाकमें लगावे । नाकके सब रोगोंको फायदा करेगा । वायबिडंग, जेठीमधु, देवदारु, सेंधानमक, सोंठ, मिर्च, पीपल सबको बराबर लेकर और तिलोंके तेलमें पकाकर सूंघे तब नाकके सब रोग दूर हो जावेंगे ।। १५ ।।

कानमें दर्दकी औषध

अदरखका रस, सफेद तिलीका तेल, लाहौरीनमक इनको बराबर लेकर गरम करके कानमें टपकावे या कागजी नींबूको काटकर उसपर नमक लगाकर फिर गरमकर तीन चार बूंदें कानमें टपकावे ।। १६ ।।

कानमें कृमि पडजावें तब नमकको सिरकामें मिलाकर टपकाना। अगर कानमें घाव होजाय तब सुहागा बारीक पीसकर कानमें डाले फिर उसके ऊपर तीन चार बूंदें नींबूके रसकी डालना । अगर शब्द कानमें थोडा सुनाई पडे और वह खुश्कीसे हो तब बादामका तेल कानमें डालना या गुलेरोगन या सिरका या प्याजका पानी टपकाना, अगर बहरापन मालूम हो तब मदारके पीलेपन लिये हुये पत्तोंको लेकरके उनको जरासा गरम करके उनका पानी कानमें निचोडना या प्याजका पानी, पुदीना, तिलीका तेल इन तीनोंको पका करके छान करके उस तेलको कानमें डाले या अदरखका रस, शहद, सेंधा-नमक इन तीनोंको कडुवे तेलमें पका करके कानमें डाले तब कानका बहरापन और दर्द जाता रहेगा या लहसुन, अदरख, अनारकी जड,

केलाकी जड इन सबका रस निकालकर मिलाकर गरम कर कानमें डाले तब कानकी पीडा आदि सब रोग दूर होजायंगे ।। १७ ।।

अब मुखके रोगोंकी दवाइयोंको लिखते हैं

बायबिडंग, कपूर, दक्षिणी सुपारी, तज, तेजपात, नागकेसर, इलायची, कस्तूरी इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर खैरके काढामें इनको मिलाकर चनेके बराबरकी गोलियां बनाकर रख छोडे । ३ गोलीको मुखमें रखनेसे जीभ, दांत, मुख और गलाके सब रोग दूर होते हैं या जायफल, कस्तूरी, कपूर, सुपारी इनसबकेबराबर खैर लेकर पीस छानकर धतूरेके रसमें गोली बांधे और एक गोलीको मुखमें रखे इससे सब तरहके मुखके रोग दूर होंगे ।। १८ ।।

मुखकी दुर्गंधकी औषध

किसमिस, मुनक्का, दारुहलदी, जवासा और हर्र, बहेडा, आंवला, गुरच, चमेलीकी पत्ती सब बराबर लेकर उनका काढा करके उसमें शहद डालकरके कुल्ले करे तब मुखकी दुर्गंध जाय या पुदीनेके पानीसे कईवार धोवे अगर मुंह आवे और लाल हो तब सूखा धनियां, तबाशीर गेहूंका निशास्ता तीनोंको बराबर लेकर थोडासा कपूर उसमें मिलाकर मुखमें छिडके अगर सफेद हो तब फिटकरी, जंगार दोनोंको बराबर लेकर उसमें शहद मिलाकर और बराबरका पानी मिला करके कुल्ला करे अगर रंग काला हो तब थोडा नमक सिरकामें मिलाकरके चार पहर उसको धूपमें रख कर कुल्ला करे । अगर मुखमें जिह्वामें या होठोंमें जखम हो जाय तब नीलाथोथा भूना हुआ और कूट, कत्था, पापडिया इन तीनोंको महीन पीस करके मले अच्छा हो जावेगा ।। १९ ।।

गलेकी बीमारियोंकी दवाइयोंको लिखते हैं

यदि आवाज बन्द हो जावे तब हडकी छाल, पीपलामूल, नमक लाहोरी इन तीनोंको बराबर लेकर और इनसे दूना शहद मिलाकर पांच मासे रोज खावे । यदि खुश्कीसे हो तब मक्खन मिश्रीको चाटे, या एक तोला मिश्रीका शरबत बनाकर उसमें ६ मासा कलमीशोरा

डालकर पीकरके चद्दरको ओढ करके सो जावे थोडी देरमें पसीना आ जावेगा ।। २० ।।

रुधिर थूकनेका इलाज

मीठे कच्चे अनारको लेकर उसको पानीमें पीसकर उसमें थोडीसी शक्कर मिलाकर पान करे ।। २१ ।।

दमेका इलाज

गुलेजूफा ६ मासा, मुलैठी ३ मासे, खतमी खवाजी, हंसराज हरएक दो दो मासा, लसूढे ८ दाने, मुनक्का बीज निकाला हुआ ८ दाने इन सबका काढा बना कर सबेरे और सोतीदफे मिश्री डाल-करके पीवे और गरमीके दिनोंमें इन्हींका काढा करके पीवे ।। २२ ।।

दस्तोंका इलाज

आंबकी छालको शिरकेमें पीसकर नाभीपर लगाना या बेलका मुरब्बा खाना या बीहका मुरब्बा खाना बन्द होजावेंगे अगर पेचिस हो या संग्रहणी हो तब चार तुखमको रेशा खतमाके लुहाबमें डाल करके पीना या धनियां, कालाजीरा जलमें छानकर थोडीसी मिश्री मिला करके पीना और संदल सफेद, कपूर दोनोंको पीसकर नाभीपर लगाना या हर्डकी छाल सफेद नानखजूरा दोनोंको बरा-बर लेकर भूनकर कूटकर इनके बराबर मिश्री डालकर सबेरे और संध्याको फांकना और ऊपरसे आधापाव दही पीना ।। २३ ।।

जिसके पेटमें दर्द हो या बायुगोला हो तब ऐसा करे

ताजा भांगरा दो मासे और खारा नमक दो मासे दोनोंकी गोलीको बना करके खाना या लाहोरी नमक, सोंठ, सुहागा भुना हुआ और हींग भुनी हुई इन सबको बराबर लेकर कूटकर सहिंज-नाकी छालके रसमें एक एक मासाकी गोली बनाकर खाना और उसी १ गोलीको पानीमें पीसकर गरम करके नाभिपरभी लगाना ।। २४ ।।

अगर किसीकी नाभि उतरजावे .

तब नकछिकनी १ मासा पीसकर छः मासा पुराना गुड उसमें मिलाकर खावे या नींबू कागजी लेकर उसको काटकर बीचका बीज

निकालकर फिर १ मासा सुहागा भूनकर पीसकर उस नींबूपर लगाकर थोडा गरम करके चूसना ॥ २५ ॥

अगर किसीको बरबट हो—

तब विलायती अंजीर सिरकेमें रात्रिको भिगोकर सबेरे खाना और इकट्ठे दस बीस अंजीरोंको लेकर सिरकामें भिगो रक्खे दो चार रोज बराबर ही खाया करे या सज्जीनमक, जवाखार, कालीमिर्च इनको बराबर लेकर पीसकर घीकुवारके गूदेमें एक मासाकी गोली बनाकर खाना ॥ २६ ॥

जिसके गुरदामें दरद हो—

तब खरबूजाके बीजोंको पीस छानकर उनमें मिश्री मिलाकर नीम गरम करके पीवे या गुले दाऊदी सफेद १ तोला पीसकर छानकर मिश्री डालकर पीवे ॥ २७ ॥

अगर पेशाबमें जलन हो तब ढाकके फूल पानीमें जोश देकर मसाना पर उसके पानीकी धारको छोडें या कलमी शोरेको नाभिपर रखना या रेवंदचीनी, कलमी शोरा और फिटकरी हरएक एक एक मासा लेकर पानीमें पीसकरके उनको पीना ॥ २८ ॥

सुजाकका इलाज

जिसको सुजाक होवे वह पहले इन्द्री जुलाब लेवे । कबाबचीनी, रेवंदचीनी, दालचीनी, छोटी इलायचीका दाना यह सब एक एक मासा, कलमी शोरा एक मासा, मिश्री ४ मासा सबको खूब पीसकर गौके दूधमें मिलाकर पीवे ऊपरसे गौके दूधमें ठंढा पानी मिला करके पीवे और मीठा डालकर दूध भात खावे, या शिलाजीतके १ मासा सतमें ३ मासा शहद मिलाकरके खावे या सफेद जीरा दो मासा, लोबान १ मासा, शक्कर सफेद ३ मासा इनका चूर्ण बना करके खावे ॥ २९ ॥

बादफरंगकी दवा

अकरकरा, माजू, शिगरफ, सुहागा, कच्चा हर्र हरएक पांच २ मासे लेकर कूटकर पानीमें मिलाकर उसके चार हिस्से करे और एक हिस्से

को हुक्के पर धरकरके पीवे। जब कि वह जल जावे तब दूसरेको फिर तीसरेको, फिर चौथेको तमाखूकी तरह पीवे और रात्रिभर जागता रहे। सबेरे ठंढे जलसे स्नान करके घृत और शोरुवा गेहूं की रोटीके साथ खावे। इस दवाईसे गरमी बहुत होती और कैभी होती है, तथापि एकही बार खुश्क होजाता है ॥ ३० ॥

जिसकी इन्द्री गरमीसे जल जाय तब दो तोला कडुवा तेल लेकर उसमें छः मासा कबीला डालकर उसको जलाकर लगावे अच्छा होजावेगा ॥ ३१ ॥

जिसको नींदमें पेशाब गिरजाय सो यह दवाई करे-सिंघाडा और मिश्री बराबर ले करके खाय, या काले तिल दो तोले, नानखा आधा तोला, गुड पुराना डेढ तोला सबको कूटकर मिलाकरके खाय अच्छा हो जावेगा ॥ ३२ ॥

जिसके पेशाबमें रुधिर जाय वह मीठे अनारकी जड और अंजीरकी जड दोनोंको पीसकर शरबत अनारके साथ खावे ॥ ३३ ॥

सुजाककी औषध

फिटकरी भुनी हुई १ मासा, मिश्री १ मासा दोनोंको बारीक पीसकर सबेरे जिस वक्त पेशाब करे उसी कालमें हाथ धो करके दोनोंको खाय और ऊपरसे गौके दूधमें आधा पानी मिलाकरके पीवे, और पांच दिनोंतक बराबर ही ऐसे करे और खटाई बादीको न खावे और जो आदमी जवान हो वह ड्योढी दवाई खावे ॥ ३४ ॥

जिसकी धातु क्षीण होती हो या पतली हो वह यह दवाई खाय

बडा गोखरू, मोचरस, तालमखाना, मगसूल, ढाकका गोंद यह सब बराबर तीन २ मासा लेकर और सबको कूटकर चूर्ण बनाकर और फिर सबके बराबर मिश्री मिलावे, सबेरे खावे और ऊपरसे आधा पाव गौका घृत पीवे अच्छा हो जावेगा ॥ ३५ ॥

प्रमेहकी औषध

पुठकंडेकी आधी छटांक पत्ती ताजी लेकर घोटकरके उसमें मिश्री

मिलाकरके पीनेसे आराम होजाता है अथवा पावभर जामुनकी गुठलीको लेकर नरम २ कूटे जब कि उसका छिलका उतरजाय तब बीच गूदेका आटा बनाले उसमेंसे तीन मासा लेकर उसमें ६ मासा कच्ची शक्कर मिलाकर सबेरे और सामको पानीके साथ नित्यही १५ दिनतक खावे, सब तरहका प्रमेह जाता रहेगा ।। ३६ ।।
जिसकी धातु पतली हो वह भिंडी तोरीकी भाजी बनाकर १ महीना तक खावे या डेढपाव नित्यही खाया करे मगर उसमें लाल मिरचको न डाले या भिंडी तोरीकी जडोंको मंगाकर सुखा करके उनका छिलका उतारकर बीचके गूदेको कूट बारीक मैदा बनाकर रख छोडे सबेरे तीन तोले मैदामें ३ तोले सफेद शक्कर मिलाकर फांके और ऊपरसे आधा सेर गौका कच्चा दूध पीवे, २१ दिनतक करे, धातु गाढी होजावेगी अगर धातु जाती होगी तो इसके खानेसे नहीं जावेगी ।। ३७ ।।

१ खूनी बवासीरकी दवाई

काला सुरमा ६ मासा, गुड पुराना ४ मासा दोनोंको पीसकर चने के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सबेरे, १ सन्ध्याको खावे, या धनियाँ रसोतका चूर्ण बनाकर खावे ।। ३८ ।।

खूनी बवासीरकी दवाई

एक मोटी मूलीको लेकर बीचसे काटकर दो टुकडा करदेवे फिर किसी सींकसे उन दोनों टुकडोंमें १ तोला कपूर, १ तोला रसोंत, १ तोला चासकूं, एक तोला नीमके फूल इनको भरकर दोनों टुकडोंको मिलाकर कपडेसे कसकर बांध देवे ऊपर उसके कपड मिट्टी कर देवे और सुखाकर चारसेर जंगली ओपलोंमें फूंकदेवेया दोसेरमें फूंके,किंतु बीचसे मूली जलने न पावे, फिर मूलीको निकाल करके दवाइयों समेत पीसकरके छोटी बेरके बराबर गोलियां बनाले, सबेरे पानीके साथ सात रोजतक एक गोली नित्यही खावे अच्छा होजावेगा ।। ३९ ।।

३ खूनी बवासीरकी दवाई

६ मासा तिलोंको कूटकर गोली बनाकर दो तोले मक्खन धरकर

१ गोली १५ दिनतक बराबर रोज खानेसे फायदा होता है या पावभर गूगलको लेकर तीनपाव गौके दूधमें डालकर मंद २ अग्निपर पकावे, मगर कलछीको बराबरही चलाता रहे जो लगने न पावे, जब कि गाढा होजाय तब उतारकर मटरके बराबर गोलियां बनालेवे और सबेरे ठंडेपानीके साथ १ गोली २ दिनतक बराबरही रोज खावे गेहूंकी रोटी या दूध, घृत खावे और दाल, भात, खटाई, लालमिर्च न खावे और तरकारी परवल, तुरई या लौकीकी खावे ।। ४० ।।

४ खूनी बवासीरकी दवाई

सनाय ६ मासा, मुनक्का ६ मासा, सौंफ छः मासा इन तीनोंको १ सेर पानीमें औटाकर जब कि तीन छटांक या आधा पाव रहजावे तब उतारकर छानकर पीजावे, दशदिनोंतक पीनेसे बडा फायदा होवेगा

बादी बवासीरकी दवाई

जरद चोब ३ मासा, मुरदा शंख २ मासा, गुले रोगन दो मासा, मोमजरद १मासा, थोडासा पानी मिलाकरपकावे, जब कि पानी जल-जावे और दवाई सब मलहमसी बनजावे तब उसको बवासीरके तुक-मोंपर लगाना अथवा शलगमको पीसकर फिर उसको तिलोंके तेलमें पकाना जब कि मलहमसी बनजावे तब उसको तुकमोंपर लगाना और आगेवाली दवाईको बना करके खाना । एक मोटीमूली लेकर उसको काटकर उसमें सींकसे सूराख करके उसमें १ तोला नीमके फूलकी पत्तीको, १ तोला चासकूंको, १ तोला कपूरको, १ तोला रसोतको डालकर पूर्ववाली रीतिसे संपुट करके आरने उपलोंमें गोलियां बना-कर १ गोलीको नित्य खाना ।। ४२ ।।

बाद फिरंगकी दवाई

इसीको आतशकभी कहते हैं गरमीभी कहते हैं । १ तोला रसकपूर, गोलमिर्च आधा तोला, लौंग आधातोला, चौथा हिस्सा जायफलका, गिलोयका सत आधा तोला, मंदारके फूल आधा तोला, सबको तीन पहर कढाईमें खरल करे फिर सबकी सात पुडियां बनानी एक पुडि-याको फेंक देना और १ पुडियाको सबेरे नित्य ही गौके कच्चे दूधके साथ छः रोज तक बराबरही खाना ।। ४३ ।।

अण्डकोशोंके बढ जानेकी दवा

सोंठ, बिनोला, काले तिल, हरएक छः २ मासा कूट पीस-कर गौके मूत्रमें पकाकर नीम गरम करके मले, अच्छा होजावेगा। या तमाखूके हरे पत्तोंको थोडा गरम करके बांधे ॥ ४४ ॥

मिरगीकी औषध

नागफणी थोहरमें छिद्र करके थोडीसी गोल मिर्च उसमें भर देवे बीस दिनोंके पीछे उन मिरचोंको निकालकर पीसकर रख छोडे जिसको मिरगी आवे उसको सुंघानेसे मिरगी जाती रहेगी ॥ ४५ ॥

जलोदरकी दवा

कैथेके फलका गूदा ३ सेर निकालकर और पांच सेर उसमें गुड मिलावे फिर उसमें १२ सेर जल डालकर तीन रोज तक उसको भिगो रक्खे और चौथे दिन उसका अरक खैंच लेवे उस अर्कमेंसे ४ तोले नित्य ही सबेरे पिया करे १५ दिनों तक पीनेसे जलोदर जाता रहेगा ॥ ४६ ॥

बालचरकी दवाई

हाथीदांत तीन मासा, रसोत तीन मासा, दोनोंको घिसकरके लगाना, या हरताल और कलौंजीको घिस करके लगाना या मुरगीके अंडेका तैल निकाल करके लगाना, एक दो अंडोंको लेकर फोड करके एक कलछीमें उनकी जरदीको निकाल लेना सफेदीको फेंक देना कलछीको आगपर धरकर उस जरदीको जलाना जब कि जलकर कोयला होजावे दूसरी किसी कलछीकी दंडीसे उसको दबाना तेल जुदा होजावेगा उसको किसी कटोरीमें डालकर उसी तरह जला करके निकाल लेना जहांपर बालचर हो तीन चार दिन लगानेसे बाल जम आवेंगे यह बालचरके वास्ते अजमूदा है ॥ ४७ ॥

गंजेपनेकी औषध

फिटकरी ३ मासा, छडेला ३ मासा, दोनोंको सिरकेमें सिरमें लगाना या ३ मासा कबीला, ३ मासा कच्चा सुहागा, इन दोनोंको कडवे तेलमें मिलाकर लगाना ॥ ४८ ॥

जिसके पेटसे कृमि मलमें गिरते हों, वह ६ मासा कबीलाको लेकर पावभर खट्टे दहीमें मिला करके सबेरे खाजावे दो तीन दस्त आवेंगे पेटके सब कृमि मरकर निकल जावेंगे दो रोज करनेसे अच्छा हो जावेगा ।। ४९ ।।

अब बुखारकी औषधको लिखते हैं

जिसको जाडा लग करके बुखार आवे वह गुलाबी फिटकारीको आगपर फुला करके और फिर उसको पीसकर आधा मासा बतासे या चीनीमें खावे प्रातःकालमें तीन दिन खानेसे ज्वर जाता रहेगा या गुर्च, चिरायता, पित्तपापडा, सोंठ, पीपल, हरएक छः २ मासे लेकर कूटकर पावभर पानीमें रात्रीको भिगो देवे सबेरे काढा बनाकर छानकर दो तोला मिश्री या शक्कर उसमें डालकर पीनेसे आठ प्रकारका ज्वर जाता रहता है ।। ५० ।।

कफके ज्वर वालेको

३ मासा गुरुच, ३ मासा नीमकी छाल, ३ मासा लाल चन्दन, ३ मासा धनिया, ३ मासा पद्माक्ष, सबको कूटकर काढा बना करके पीवे ।। ५१ ।।

वात पित्तज्वर वालेको

३ मासा गुरुच, ३ मासा पित्तपापडा, ३मासा नागरमोथा, ३ मासा चिरायता, ३ मासा सोंठ इन सबका काढा करके दस दिन पीवे।। ५२ ।

जुडया ज्वर, तिजरा ज्वरादिके वास्ते

१ तोला संखियाको किसी बरतनमें रखकर गौका दूध उसके ऊपर इतना डाले जो तीन अंगुल संखियेके ऊपर रहे आठ पहर तक उसमें संखिया भीगा रहे दूसरे दिन उस दूधको फेंकदे, और ताजा दूध उसपर डाले, इसी तरह २१ दिन करे फिर १ बडी डबल ईंटको लेकर खोदे उसमें इतना खोदे कि, जितनेमें वह संखियाके टुकडे आजावें उसमें संखियेके चनेके बराबर टुकडे धरकर भरदे फिर एक ऐसा चूल्हा बनावे जिसके ऊपर ईंट बराबर आजावे उस चूल्हेपर ईंटको रखकर ईंटके ऊपर एक तांबेका कटोरा उलटा धरकर

आटेको कडा सानकर उससे खामदे, फिर आठ पहर लकडीकी आगको उसके नीचे जलावे जब कि आठ पहर गुजर जाय तब ठंढा करके उतार कर संखियेको खरलमें पीसकर किसी शीशीमें रख छोडे। जिसको शीतज्वर हो या पुराना ज्वर हो उसको आधा चावल अथवा चार मासा मिश्रीमें मिलाकरके देवे, ज्वर जाता रहेगा। अगर कुछ गरमी मालूम हो तब ऊपरसे गौका मीठा दही पावभर पीवे और आधापाव दहीका पानीभी पीवे गरमी नहीं होगी ॥ ५३ ॥

चौथिया ज्वरकी औषध

दो मासा हींग, दो मासा नमक, दोनोंको १ सेर पानीमें औटावे, जब कि छः तोला रंह जाय तब पीवे, तीन रोज पीनेसे ज्वर जाता रहेगा ॥ ५४ ॥

सब तरहके ज्वरकी औषध

डेढ तोले बच्छनागको लेवे जो कि भीतरसे सफेद हो, डेढ तोला पीपल, डेढ तोले चिरायता, डेढ तोले गोल मिर्च, प्रथम वच्छनाग और पीपलको १ पहर पीसे, फिर गोल मिर्च और चिरायता मिलाकर थोडा पानी डालकर फिर थोडासा पीसकर एक २ मासाकी गोलियां बनावे पहले दिन आधी गोली खावे फिर १ खावे ॥ ५५ ॥

जिसके शरीरपर किसी जगह शोथ पडजाय या मांस बढजाय तो तीन ३ तोला आंवला, ३ तोला पुराना गुड ले प्रथम गुडको पानीमें घोलकर आंवलोंकी गुठली निकालकर उसे गुडमें डालकर रात्रिभर रक्खे, सबेरे मलकर छान करके पीवे और चिरायता सोंठको पीसकर सूजनपर लगावे, या विषखपरा, एरंडीकी जडकी छाल और सोंठ इन तीनोंको पीसकरके लगावे, या विषखपरा, कुचीला, कालाजीरा, गोलमिर्च, नीमकी पत्ती नरमसी इन सबको बराबर लेकर पानीमें पीसकरके लगावे ॥ ५६ ॥

१ दादकी दवा

एक तोला कच्चा सुहागा लेकर उसको तवेपर फुलाकर, फिर पीसकर उसमें गौका मक्खन दो तोले मिलाकर घोटे और दादको प्रथम खुजलाकर उसपर उस मक्खनको मले ॥ ५७ ॥

२ दादकी दवा

पारा, गन्धक, सुहागा, खुरासानी अजवायन, इनको कूट छानकर तीन तोले गौके दूधमें मिलाकर गोलियां बनाकर दादको खुजलाकर गोलीको लगावे या मैनशिलको पानीमें पीसकरके लगावे अच्छा होजावेगा ॥ ५८ ॥

खुजलीकी दवाई

१ तोला सज्जीको लेकर कूट छानकर तीन तोले गौके घृतको लेकर उसको खूब धोकर उसमें सज्जीको मिलाकर खुजलीपर लगावे या रसोतको पानीमें घिसकरके मले या कलमी शोरेको तेलमें मिला-करके मले और अजवायन तथा गुडको ६ मासा लेकर सात रोज तक खावे खुजली दूर होजावेगी ॥ ५९ ॥

जिसको सफेद दाग पड गये हों वह बगदादी हरताल बरकी १ तोला, वाकुची दो तोले दोनोंको जुदा २ बारीक पीसे । फिर नदीके पानीमें दोनोंको चार पहर तक खरल करे, फिर छोटी २ गोली बना करके रक्खे एक गोलीको पानीमें घिसकरके लगावे, आराम हो-जावेगा ॥ ६० ॥

हाथोंपर सफेद दागकी दवा

६ मासा लहसन, ६ मासा सुहागा, ६ मासा घृत इन तीनोंको चार पहर खरल करके फिर हाथोंपर मले ॥ ६१ ।

जिसकी हथेली फटजाय वह बरगदका दूध हाथपर मले और मोम रोगनको लगावे अच्छा होजावेगा ॥ ६२ ॥

जिसके हाथोंपर छाजन होजावे वह गौका या बकरीका आधासेर दूध लेकर उसको औटाकर उसमें थोडासा सिरका अंगूरी छोडदेवे जब कि फटजाय तब उसको छानकर उसके पानीको बोतलमें रक्खे उसी पानीकी मालिश करे, या मदारका दूध मिट्टीके बरतनमें रखकर थोडीसी गोलमिर्च पीसकर उसमें मिला करके मले अच्छा होजावेगा ॥ ६३ ॥

जिसके, पांवमें फुनसी होकर पानी बहे वह ऐसे करे, १ तोला रसकपूर, १ तोला गंधक, १ तोला मुरदाशंख, १ तोला मेहंदी इन सबको बराबर लेकर पीसकर तिलीके तेलमें मिलाकरके लगावे या तेल लगाकर ऊपर धूपदेवे ।। ६४ ।।

जिसके घाव हो या फोडेसे जखम हो वह इस मलहमको लगावे सिंदूर गुजराती ६ तोले, कबीला साढेसात तोले, कालाजीरा डेढ तोला नीलाथोथा आठ तोले, मोम तीन तोले, तेल कडवा पावभर सब औषधयोंको बारीक पीसकरके तेलमें मिलाकर कढाईमें डालकर आगपर पकावे, जब कि सब औषधियां जल जावें तब उतारकर रक्खे जखमोंपर लगाया करे ।। ६५ ।।

हाजमाकी दवा

अनारदाना पाव भर, सोंठ ३ तोले, जीरासफेद ३ तोले, निशोथ ३ तोले, काला जीरा ३ तोले, बडी हर्ड डेढ तोला, बहेडा डेढ तोला, नमक ४ तोले सबको कूट पीसकर तैयार करके भोजनसे पूर्व १ तोला खावे, भूख लगेगी और दस्तोंको भी बन्द करेगी ।

दूसरी रीति

मुलेठी एक तोला, पीपलामूल एक तोला, मूसली स्याह १ तोला, मुसली सफेद १ तोला, जंगीहर्ड १ तोला, बडी हर्ड १ तोला, बायविडंग १ तोला, बावखंभी १ तोला, अजवाइन दो तोले, सोनामक्खी, ४ तोले, मोथा २ तोले, सनाय ४ तोले, बहेडा १ तोला, हींग १ तोला, मैदा सोंठ ४ तोले, वैतरा सोंठ ४ तोले, कंजकी गूदी १ तोला इन सबको कूट छान करके रक्खे और आगेवाली दवाइयोंको मिट्टीके बर्तनमें भून करके कूटे और छाने कामराज १ तोला, रूमी मस्तंगी १ तोला, सोंफ २ तोला, काली मिरच चार तोले तगर १ तोला, काहू १ तोला, बडी इलायची २ तोले, लौंग दो तोले, गुरुचका मैदा छः मासे या ८ मासे भोजनसे १ घण्टा पहले खावे बहुत गुण होवेगा ।। ६६ ।।

हाजमाकी दवाई

२ तोले आंवलासारगंधकको लेकरके पूर्वोक्त रीतिसे शोधे फिर चार तोले गोलमिर्चको महीन कर खरलमें डालकरके गन्धकके साथ मिलाकर खरलकर फिर पावभर नींबूका रस डालकर खरल करे फिर चनेके बराबर गोलियां बनाकर रख छोडे जब काम पडे १ या दो गोली खावे। बहुत गुण करेंगी ॥ ६७ ॥

पाखाना साफ आनेकी दवाई

दस तोले अंजीर, एक तोला कुसुंभके बीजका मगज दोनोंको मिलाकर कूटकर अखरोट बराबर गोलियां बनावे रात्रिको सोते समय एक गोलीको खाकरके सोजाय सबेरे पाखाना साफ आवेगा, या ६ मासे एलुवा जिसको मुसब्बर भी कहते हैं और ६ मासे नरकचूर दोनोंको गुलाबके अर्कमें खरल करके चने बराबर गोलियां बनावे एक या दो गोली सबेरे पानीके साथ खावे पाखाना साफ आवेगा। या ६ मासे एलुवा, ६ मासे कालाजीरा, ६ मासे नौसादर, तीनोंको गुलाबके अर्कमें चने बराबर गोलियां बनावे एक गोली सोते समय या सबेरे, पानीके साथ खावे पाखाना साफ आवेगा ॥ ६८ ॥

जुलाब

जिसको जुलाब लेना हो वह पहले तीन दिन मुंजिस करे। बनप्सा ६ मासे, गुलकंद ६ मासे, सौंफ ६ मासे, मुलेठी छिली हुई ४ मासे, उन्नाब ५ दाने और मुनक्का इनको आधासेर जलमें काढाकरे, जब ३ छटांक जल बाकी रह जावे तब छानकर ३ तोले मिश्री डाल करके पीवे ३ दिन इस काढेको सबेरे पीवे और खिचडी खावे चौथे दिन जुलाब लेवे ॥ ६९ ॥

जुलाबको लिखते हैं

६ मासे तिरवी, ३ मासे कालादाना, ६ जुलाबा इनको कूट कर फक्की बनाकर एक मासा भर घृतमें तर करके फिर ६ मासे रात्रिको सोते समय खाकर ऊपरसे आधासेर दूध पीवे बाकी १२ मासे सबेरे पीनेके [illegible] साथ फांके इतना वजन तो कडे माद्देवालेको वास्ते

है और नरम माद्देवालेके वास्ते ३ मासे रात्रिको छः मासे दिनको है और जो कडे माद्देवालेको पहले दिन इसके खानेसे दस्त न आवे तब दूसरे दिन फिर घृतको डालकरके, खिचडीको खावे और रात्रिको आधा वजन और दिनको भी आधावजन फांके और जो अधिक दस्त आजावें तो दो तोले सेवका मुरब्बा और चार वरक चांदीके और छः मासा रूमी मस्तंगी इनको खावे दस्त बन्द हो जावेंगे ।। ७० ।।

जिसकी आवाज बैठ जाय वह १ तोला अदरखको कूटकर उसमें ६ तोला गुड पुराना मिलाकर ३ दिन खावे या मेथी डेढ तोला और २०दाना अंजीरके और दस छुहारे इन तीनोंको तीनपाव जलमें जोश देकर फिर छानकर उसमें मिश्री डाल करके तीन दिन पीवे आवाज साफ हो जायगी ।। ७१ ।।

हैजेकी दवा

अजवाइन दो तोले, छोटी हर्ड दो तोले, सौंफ २ तोले, पीपल २ तोले, सोंठ २ तोले, पांचों नमक २ तोले, गोलमिर्च २ तोले, नींबूका रस २ तोले, ८ तोले मदारके फूलोंकी कली सबको कूट छान करके गोलियें छोटे बेरके बराबर बनावे जिसको हैजा होजाय दो गोली दे। जिसको दस्त लगजाय एक या २ गोली दे, जिसका पाखाना पतला हो उसको भी दो या १ गोली दे तुरन्त अच्छा हो जावेगा ।।७२ ।।

पतले दस्तोंकी दवा

छः मासा अजवाइनका सत और एक तोला मुश्ककपूर दोनोंको छोटे छोटे टुकडे करके एक शीशीमें डालकरके ५ मिनिट धूपमें रखना अर्क बन जावेगा । जिसको पतला दस्त आता हो या हैजा होगया हो बतासामें दो तीन बूंद डाल कर देना अच्छा हो जायगा ।। ७३ ।।

दांतका मंजन

फिटकरी १ तोला, हर्डकी छाल १ तोला, खट्टे अनारका छिलका १ तोला, सबको कूट पीसकर मंजन बनावे, अथवा खट्टे अनारका छिलका १ तोला, फिटकरी २ तोला, अकरकरा ६ मासे गुलाबके फूल ६ मासे, माजू ६ मासे सबको कूट पीसकर छानकर मंजनबनावो।।७४

गठिया बायकी औषध

नकछिकनीकी पत्तीको सुखाकर पीस करके रखे। धतूरेकी पत्तीका रस निकाल लेवे उस रसमें १ रत्ती अफीमको मिलाकर पीसे फिर उसमें ६ मासे एरंडका तेल मिलाकर ६ मासेनकछिकनी पीसी हुई मिलाकर रखे जहांपर बाय हो मले ।। ७५ ।।

सुजाककी औषध

कुलफाके बीज, सफेद पोस्तेका दाना, खीरा, ककडीके बीजोंकी गिरी तरबूजेके बीजोंकी गिरी, हर एक डेढ २ तोले, छोटे गोखरू बबूरका गोंद दो २ मासे इन सबको कूटकर बारीक करके ईसबगोलके लुहाबके साथ तीन २ मासेकी गोलियोंको बनावे। एक गोलीको सबेरे खाय अथवा कलमीशोरा १४ मासे, बडी इलायची १४ मासे दोनोंको कूट छानकर छः भाग बनाकर एक भाग सबरे, एक संध्याको पानीके साथ खावे, या १ तोलाके साठी चावलोंको भिगो करके उनके पानीके साथ खावे। अथवा फालासाकी जड १५ मासे लेकर कूट छानकर रात्रिको पानीमें भिगोदे सबेरे उसको छानकर थोडासा बूरा उसम मिला करके खाय ।। ७६ ।।

बँधेजकी औषध

अजवाइन ५ मासे, कद्दूके बीजोंकी गिरी ६ मासे, असगन्ध ९ मासे, भांगक बीज ८ मासे, भुनहुए चने ७ मासे, अफीम ३ मासे, केसर ४ रत्ती, इलायचीका दाना १ मासा पहले दो पोस्तके डोडों बाकी सब दवाइयोंको कूट छानकर उसी पानीमें मिला देवे और चनेके को पानीमें भिगो देवे फिर मलकर उस पानीको छानलेवे, बराबर गोलियां बना लेवे, १ गोली संध्याको खाय अगर कुछ गरमी मालूमहो तब कद्दू तरबूज कुलफाके बीजोंको घोटकर सीरा निकाल करके पीवे ।। ७७ ।।

नामर्दीकी दवा

इन्द्रजौ सात मासा लेकर भैंसके ताजे दूधमें भिगोकर चार पहर पीस करके गुनगुना करके इन्द्रीपर बांधे ऊपरसे कपडा लपेट कर

फिर सो रहे, सबेरे गरम जलसे धोडाले दस रोज तक बराबर ही ऐसा करे तब मर्द बन जावेगा अथवा नीलेथोथेको तीन चार दफे नींबूके रसमें खरल करके केलाकी जडके पानीमें रगड कर उसका पातालयन्त्रसे तेल निकाले परन्तु पौने दो तोला आंवलासारगन्धक भी उसमें डाले तेल निकाल कर फिर इस तेलकी १ बूंद मलाईमें डालकरके खावे, बहुतसा फायदा होवेगा ॥ ७८ ॥

पेटमें दर्दकी औषध

पावभर छोटी हर्डको लेकर पावभर गौके दूधमें औटावे जब कि सूखजाय तब उतारकर धूपमें सुखाकर फिर एक पावभर नींबूका रस निकालकर उसमें पांच तोला पांचों नमक पीसकरके डाले फिर उन हर्डोंको भी उस नीबूके रसमें डालकर धूपमें सुखावे, जब सब रस सूखजाय तब रखछोडे, जिसको बदहजमी हो या पेटमें दर्द हो, उसको एक या दो तीन हर्ड लिखावे अच्छा हो जायगा ॥ ७९ ॥

दमेकी औषध

बारसिंगाको लेकर उसके टुकडे बनाकर एक सकोरेमें धरकर संपुट बनाकर पांचसेर आरने उपलोंमें फूंक देवे, फिर दो मासा बारहसिंगाकी राख और १ मासा गुलाबी फिटकरीकी राख दोनोंको मिलाकर १ तोला चीनीके साथ खावे तीन दिनोंतक सेवन करे, खटाई न खाय ॥ ८० ॥

खांसीकी दवाई

जिसको कि खुश्क खांसी हो वह एक छटांक माखनमें ६ मासा मिश्री डालकर चांदीके वर्कमें मक्खनकी गोलीको लपेट करके खा जावे या बिना ही चांदीके वर्कके मक्खनको सबेरे खावे, या रात्रिको सोती दफे आधापाव मलाईको खा करके सो रहे या लसूढोंकी चटनी को सबेरे और संध्यामें खावे अथवा ६ मासे बनप्सा, ६ मासे रेशाखतमी, ८ दाने मुनक्काके, ८ दाने लसूढोंके, ६ मासे सोंफ, ३ मासे मुलैठी इन सबको पावभर पानीमें औटाकर काढा करे, जब कि आधा रह जाय तब छानकर १ तोला मिश्री डाल करके पीजावे ॥ ८१ ॥

बलगमी खांसीकी दवा

एक छटांक सेंधानमक और १ छटांक धतूरेके बिया दोनोंको एक मिट्टीके सकोरामें डालकर उसपर आकका दूध चुवावे, जब कि दूधसे भर जाय तब कहीं रख छोडे। जब कि दूध सूख जाय तब उसका संपुट बनाकर चार सेर कंडोंमें रख करके फूंकदेवे, जिसको बलगमी खांसी होवे उसको १ रत्ती पानमें देवे, खटाइ बादी न खावे ॥ ८२ ॥

नजलेकी नसवार

कश्मीरी पत्र, रठा, धनियां, तीनोंको बराबर लेकर कूट छानकर नसवार बनावे और सूंघे ॥ ८३ ॥

हरएक किस्मके दरदका तेल

पांच सेर कडुवा तेल लेकर उसको आगपर कढाईमें चढा देवे, फिर आठ तोले नीमकी पत्ती और ७ तोले स्यूडकी पत्ती और ८ तोले पलाशके फूल इन तीनोंको जब कि तेल गरम हो जाय तब उसमें छोड दे। जब कि वह जल जावे तब उनको झरनेसे निकालले इसी तरह आठ आठ तोले तीनोंको एक आदमी छोडता जावे और उनके जलजानेपर दूसरा निकालता जावे पचास दफे उस तेलमें जला जला करके निकाले फिर तेलको ठंढा करके छान करके बोतलोंमें रख छोडे। यह तेल सब तरहके दर्दको फायदा करेगा, फिर अगर सौदफे वह तीनों जलाये जावें तब बहुत ही उत्तम होवेगा यह आजमूदा है ॥ ८४ ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण विरचिते गुणोंकीपिटारीनामकग्रन्थे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पाचवां अध्याय

इस अध्यायमें प्रथम स्त्रियोंकी चिकित्साको लिखते हैं

जिस स्त्रीको स्त्रीधर्म न होता हो वह यह औषध करे। काले तिल, सोंठ, गोल मिर्च, पीपल, भारंगी, गुड यह सब छः २ मासेभर लेकर पावभर जल डालकर काढा करके छानकर १ तोलामिश्रीडालकर १५ दिनों तक बराबर ही सबेरे पीवे।

जिस स्त्रीको गर्भ न रहता हो वह बिजौला नींबूके बीजको ...कर बछराके तेलके दूधमें मिलाकरके पीवे या मिश्री, तिल, जौ तीनोंको बराबर एक एक तोले लेकर पीसकर शहदमें मिला करके खानेसे गर्भकी रक्षा होती है। अथवा असगन्ध, नागकेशर, गोरोचन इनको शहदमें मिला करके पीनेसे भी गर्भ रह जाता है। या हाथीदांतका बुरादा लेकर कूट छान कर रख छोडे जब कि रजोधर्म ही उसके तीसरे या चौथे दिन स्नान करके ४ मासे मुरादामें ४ मासे मिश्री मिला करके सात रोजतक बराबर ही सबेरे नित्य खावे या कायफलको ३ तोले लेकर कूट छानकर उसके बराबर मिश्री मिलाकरके खावे, ऊपर दूध चावल खावे, फिर पुरुषके पास जानेसे गर्भ रहजाता है। अथवा असगन्ध, नागौरी ५ तोले लेकर कूट छानकर रक्खे, जब कि रजस्वला होकर स्नान करके शुद्ध होजावे, तब पहिले दिन १ तोला खावे, दूसरे दिन दो तोले खावे, ऊपरसे दूध भात खावे, फिर पुरुषका समागम करे॥ १॥

अब कन्या बालककी परीक्षा

यदि गर्भवती स्त्रीको किसी तरहकी बीमारी न हो और उसको अपनी दाहिनी तरफ बोझ मालूम हो और दाहिना स्तन बडा मालूम हो और स्तनोंपर सुर्खी मालूम हो तब तो उसके लडका पैदा होगा।

जिस गर्भवतीकी भूख कमती हो, शिर भारी हो और मुखपर जर्दी और रूखापन हो, बदनमें सुस्ती हो, नींद अधिक आती हो और चलते समय पहले दाहिना पैर उठे और दाहिना हाथ टेक करके उठे

तो जानलेना कि, इसके लडकी पैदा होवेगी फिर गर्भवती अपने हाथ पर जूंको रखकर उसपर अपना दूध डाले यदि उस दूधमें जूं रेंगे तो जानलेना कि, लडका पैदा होवेगा यदि जूं मरजाय तब जानलेना लडकी पैदा होवेगी ।। २ ।।

प्रसूत होनेकी औषध

यदि प्रसूतकालमें कष्ट हो तब जवासा, बांसकी जड इनको पीस-कर नाभिमें और योनिमें लगावे तुरंत प्रसूत होवे, या दशमूलका का[illegible] कर उसमें पीपलको पीसकर मिला करके देवे तब सन्निपात, प्रस[illegible] अंगपीडा आदि सब रोग दूर होजावेंगे ।। ३ ।।

गर्भके न ठहरनेकी औषध

पीपल, वायविडंग, सुहागा, यह सब बराबर लेकर पीसकर ऋतु आनेके पीछे ५ दिन जलसे पीवे तब गर्भ न रहेगा अथवा पुराना गुड १ छठांक भर औटाकर १५ दिन बराबर पीवे गर्भ न रहेगा वा नींबूके तेलका फाहा ऋतुके समय योनिमें रक्खे या सेंधानमक, अज-वायन, नीमका तेल इनकी पोटली बनाकर योनिमें रक्खे तो गर्भ नहीं रहेगा ।। ४ ।।

अथयोनिसंकोच

फिटकरी और बेलका गूदा पीसकर गोली बनाकर योनिमें रखनेसे संकुचित होजाती है या अनारके छिलके तेलमें घिसकर योनिमें लगानेसे संकोच होती है स्तनोंको भी कडा करता है । या बैंगनको सुखाकर पीसकर योनिके अन्दर मले या ढाककी कलियां छायामें सुखाकर बराबरका बूरा मिलाकर १० मासे नित्य ही सबेरे और सांझको १५ दिनों तक खावे या इमलीके बीजोंकी गिरी कूट छानकर सबेरे तथा योनिमें मले ।। ५ ।।

गर्भवतीके ज्वरका इलाज

मुलैठी, रक्तचन्दन, गोरी सरसों, कमलगट्टाकी जड, इन सबका काढा करके मिश्री मिली करके पीवे, ज्वर उतर जायगा ।। ६ ।।

स्तनोंकी चिकित्सा

जिसके स्तन लटकगये हों अर्थात् ढीले होगये हों तब बडी कटेरी, छोटी कटेरीकी जड, अनारका छिलका, कंदूरकी जड, कच्ची मूसली यह सब बराबर लेकर पानीमें पीसकर स्तनोंपर लेप करे या बरगदकी दाडी जो कि जमीनके साथ लगी न हो किन्तु ऊंची हो और पीले या लाल रंगकी हो उसको काट करके सुखाले और पानीमें पीसकर लगावे, बडा फायदा होगा ॥ ७ ॥

जिस स्त्रीके स्तनोंमें गरमी और खुश्कीके कारण दूध जमगया वह लजालू और असगंधकी जडको १५ दिनों तक लगावे, बडा फायदा होवेगा ।

अथवा मूंग और सांठीके चावलोंको पीस करके लगावे ॥ ८ ॥

स्तनोंके सोजकी दवा

मकोह, गुलखैरू, निर्विसी, अफीम, गेरू, हरएक एक २ मासे लेकर पानीमें पीसकर गुनगुना करके लेप करे तो सोज दूर हो जावेगी ॥ ९ ॥

नेत्रके लालकी दवा

मुलैठीको छीलकर कूटकर थोडेसे पानीमें पीसकर उसमें रुई भिगोकरनेत्रोंपर रक्खे ॥ १० ॥

नेत्रमें खुजली

माजूफल, छोटीहर्ड, दोनोंको पीसकरके नेत्रपर लेप करे खुजली दूर होती है ॥

जिस स्त्रीका रजोधर्म रुकगया हो उसके जारी करनेकी दवा

मूलीके बीज, गाजरके बीज, मोथा इनको कूट छानकर एक हथेलीभर थोडे गरम जलसे फांके अथवा काले तिल १ तोला, गोखरू १ तोला इन दोनोंको रात्रिमें पानीमें भिगोकर प्रातःकालमें शीरा निकालकर थोडासा उसमें बूरा मिलाकर पीवे, रजोधर्म जारी होजावेगा या थोडेसे गुडको घीमें मिलाकर आगपर रक्खे जब कि वह बत्ती

बनानेके योग्य होजाय तब थोडासा सूखा फरोजा पीसकर उसमें मिलाना तथा बत्ती बनाकर गर्भाशयके मुखतक पहुंचावे, रजोधर्म जारी हो जावेगा और कलौंजी पाकके खानेसे भी रजोधर्म जारी होता हैं और इससे गर्भाशयकी पीडा भी दूर होजाती है । जिस स्त्रीको रजोधर्मके समयपर अधिक रुधिर बहता हो वह मसूर, अरहर, उडद हरएक दो २ तोले, सांठीका चावल १ तोला सबको जलाकर महीन पीसकर फंकी बनाकर एक हथेलीभर खावे या एक तोले चनोंको जलाकर और तज, लोध एक २ तोले तीनोंको पीसकर तोला बूरा मिलाकर एक हथेलीभर खावे या मालतीके फूल कत्था खांड हरएक छः २ मासे मिलाकरके खावे ।। ११ ।।

गर्भवतीके नलोंमें यदि दर्द हो तब यह लेप करे

काली जीरी ३ तोले, चार मासा रैंडीका गूदा, आधापाव सोंठ इन सबको औटाकर पीसकर गुनगुना करके लेप करे ।। १२ ।।

बांझ बनानेवाली औषध

हाथीकी ताजी लीदको लेकर निचोडकर १ तोला शहदमें रजस्वला होनेके पीछे तीन दिन तक खावे या प्रातःकालमें नित्य ही १ लौंग खाया करे तब गर्भ नहीं ठहरेगा या पारेको अजवाइनमें मिलाकरके तीन दिन तक खावे बांझ होजावेगी ।। १३ ।।

प्रसूत होनेकी दवा

१४ मासे अमलतासके छिलकोंको पानीमें औटाकर बूरा मिलाकर पीनेसे तुरंत प्रसूत होजावेगी ।। १४ ।।

गर्भकी रक्षाके उपाय

जो गर्भवती स्त्री दिनमें सोती है उसका लडका पागल पैदा होता है या अपस्मार रोगयुक्त पैदा होता है । जो स्त्री नित्य ही लडाई झगडा करती है और पशुकी तरह मैली कुचैली रहती है उसका लडका दुर्बल निर्लज्ज पैदा होता है और अल्प आयुवाला भी होता है । जिस स्त्रीका स्वभाव चोरी करनेका होता है उसका लडका चोर, कुकर्मी और आलसी पैदा होता है और जो धनादिकोंको हर-

नेवाली और दूसरोंको सतानेवाली होती है और ईर्षा क्रोध बखीली-
जो करती है उसका लडका भी क्रोधी, छली, कपटी, दुराचारी
पैदा होता है, इस वास्ते स्त्रीमात्रको इन बातोंका त्याग करदेना ही
वाजिब है और स्त्रीके वास्ते सब नशोंका त्याग कर देना ही परमधर्म
है क्योंकि सब नशे गर्भको नुकसान ही करते हैं, स्त्रीके शरीरको
भी बिगाडते हैं । गर्भवती स्त्रीको उपवासादिक व्रतोंके करनेका
भी निषेध किया है, क्योंकि व्रतोंके करनेसे गर्भमें बालकके मरनेका
[illegible] होता है, नहीं तो अतिदुर्बल और कमजोर तो जरूरी ही पैदा
[illegible]ता है और किसी मृतकके साथ श्मशानमें भी न जाय और मृत-
कके पीछे रुदन भी न करे और खडी होकरके छातीकोभी न पीटे
और न किसी तरहकी चिंता ही करे, क्योंकि इन कामोंको करनेसे
गर्भके गिरनेका डर रहता है या बालक गर्भमें ही मरजाता है, इस-
वास्ते गर्भवतीको उचित है कि, ऊपरवाली बातोंका त्याग कर-
देवे और अतिशीतल जलसे या अतिगर्म जलसे स्नान भी न करे, ऐसा
करनेसे भी गर्भको पीडा पैदा होती है और किसी ऊँचे स्थान या
सीढीसे भी न कूदे और न बहुत चले । गर्भकी रक्षा करनेसे ही
माताके शरीरकी भी रक्षा होती है, यदि गर्भवती को किसी तरहकी
बीमारी होजावे, तब गुलाब न लेवे और फस्तको भी न निकलवावे
और सींगी, जोंक वगैराको भी न लगावे और पतिके साथ सोवे भी
नहीं ॥ १५ ॥

तत्काल गर्भधारण करनेके ये चिह्न हैं

मुखमें थूंकका भरजाना और जीका मचलाना, अंगोंमें भारीपन
होना, ग्लानि तथा तंद्रा हर्षका होना, हृदयमें व्यथा होनी और बिना
भोजनके तृप्ति होनी इन्हीं चिह्नोंसे गर्भका रहजाना मालूम होता
है ॥ १६ ॥

• गर्भकी रक्षाके उपाय

जो स्त्री गर्भवंती होकर टेढी बैठती है अथवा बहुतसे ऊंचे नीचेपर
चढती उतरती रहती है और जो तखत आदि कठिन स्थानोंमें

सोती है और जो मल, मूत्र और अपानवायुको रोकती है, कठिन और अनुचित व्यवहार करती है और बहुत चलती फिरती और रोती है और अतिखट्टा और अति गर्म और बहुत मिरचादिकोंका सेवन करती है और बहुतसे व्रतोंकरके भूखी रहती है उस पापिनीका बच्चा गर्भके भीतर ही मरजाता है, या जन्म लेकर दो चार महीनोंका होकरके मरजाता है। जो गर्भवती सबेरे उठकरके नदीपर स्नानके वास्ते एक मीलतक या न्यूनाधिक जाती और मंदिरोंमें घूमती फिरती है या दौडती चलती है या अनुचित व्यवहार करती है, उसका बच्चा भी नहीं जीता है, इस वास्ते ऊपरवाली बातोंसे गर्भवतीको परहेज करना अर्थात् उनका न करना ही उचित है।

जो गर्भवती स्त्री गहरे गड्ढेमें या गहरे कूपमें बार २ देखती है उसका भी गर्भ गिरजाता है और अत्यन्त हिलनेवाली सवारीपर चढनेसे और अत्यन्त घोर शब्दके सुननेसे भी गर्भको नुकसान पहुंचता है और सीधा सोनेसे भी नुकसान पहुंचता है।

जो रात्रिको बार २ भ्रमण करती है उसकी संतान उन्मत्त पैदा होती है और जो कि हरवक्त लडाई झगडा करती है, उसकी संतति मृगीरोगवाली पैदा होती है और जो अत्यन्त भोगकी अभिलाषावाली होती है उसकी संतति निर्लज्ज और कुकर्मी पैदा होती है और डरपोक होती है। जो गर्भवती नित्य ही शोकातुर रहती है उसकी संतति दुर्बल पैदा होती है और बहुत सोनेवालीकी सन्तान आलसी होती है और मदिरा पीनेवालीकी संतान दुष्ट और पिपासाशाली पैदा होती है। जो नित्य ही बहुत मीठा भोजन करती है उसकी सन्तान प्रमेह रोगवाली और गूंगी पैदा होती है और जो नित्य ही अति खट्टा खाती है उसकी सन्तान रक्तपित्तके रोगवाली पैदा होती है ॥ १७ ॥

प्रसूत वायकी औषध

और किसी २ स्त्रीको बालक उत्पन्न होनेकी पीछे प्रसूत वायका रोग होजाता है तब उसके नेत्र बदल जाते हैं और अन्यथा बकने

लगती है अर्थात् पागलकी तरह वह बनजाती है । मूर्ख लोग भूत प्रेतका खयाल करके झाड फूंक कराते हैं परन्तु उनको रोगका ज्ञान नहीं होता है । इस रोगकी उत्पत्ति इस तरहसे होती है, जिस कालमें बालक पैदा होता है तब उस कालमें लडकेके साथ गर्भाशयका मल गिरता है, उस कालमें जो थोडासा रुधिर भीतर रहजाता है उसीसे दो चार दिनोंके पीछे वह स्त्री पागलसी बनकर व्यर्थ बकने लगती है, इसीका नाम प्रसूत वाय है । जब औषधी करनेसे उसके भीतरका मल सब गिर जाता है, तब वह अच्छी भी होजाती है । इसकी दवाई नागकेशर एक हिस्सा, काली मिरच दो हिस्सा, दोनोंको पीसकर अदरखके रसमें जंगली बेरके बराबर गोली बनाकर दोगोली सबेरे और दो गोली शामको खिलावे या अजमोदा, दालचीनी, लोबान इन तीनोंको बराबर लेकर बारीक पीसकर फिर उसमें थोडी-सी शक्कर मिलाकर अंदाजसे खावे या दो मासा पीपल, १ मासा धतूरेका बीज इन दोनोंको कूट छानकर एक एक रत्तीकी गोलियां बनाकर एक गोली या दो गोली खिलावे । या एक मासा लोबानका सत, दो रत्ती मुश्क आठ दिनोंतक इन दोनोंको मिला करके खावे या कन्दर, नागचूर, जदवार, हरएक दो दो मासा लेकर पीसे, फिर शहदमें मिलाकर अन्दाजसे खावे ॥ १८ ॥

अगर प्रसूत होनेके पीछे अंगोंमें पीडा अधिक होवे, तो दशमूलका काढा करके उसमें पीपलको पीसकर मिलाकर पिलावे सब रोग दूर होजावेंगे ॥ १९ ॥

जिसके उदरमें बच्चा मरजाय वह इस दवाको खाय

बथुवेके बीज डेढ तोला लेकर उनको आधासेर पानीमें जोश देवे जब आधापाव पानी बाकी रहजाय तब छानकर पिला देवे बच्चा बाहर निकल आवेगा, या सहिंजनेके पेडकी छाल और गूदा दोनोंको जोश देकरके पिलावे और ऊंटकटारेकी जडको पानीमें पीसकर पेटभर लेप करे और घोडेकी लीदको उसके आगे जलावे उसका धुवां देवे,

ऐसे करनेसे भी बच्चा बाहर आजाता है। फिर घृतमें एक कपडा तरकरके योनिमें रक्खे तो दर्द भी जाता रहेगा फिर इस दवाको पीवे, ६ मासा गोखरू, १ तोला सौंफ, १ तोला खरबूजेके बीज इन तीनोंको पानीमें जोश देकर मिश्री मिलाकरके पिलावे और खानेको कुछ भी न दे और जब प्यास लगे तब कपासकी कली और बांसकी ताजी गांठको पानीमें जोश देकर पिलावे तब बहुतसा फायदा होवेगा ॥ २० ॥

गर्भ रहजानेके पीछे भी जिस स्त्रीके ऋतुका खून जारी हो उसको गूलरके वृक्षकी छाल पानीमें जोश देकर पिलानी चाहिये त वह बन्द हो जावेगा ॥ २१ ॥

जिस स्त्रीका रजोधर्म अपने वख्तसे आगे पीछे आता है वह स्त्री कमजोर होजाती है, उसकी यह दवाई है, बैंगनकी कोंपलको पानीमें घोटकर पीनेसे फायदा होवेगा, या चनोंको जलाकर उनके बराबर लोध मिलाकर फिर दोनोंके बराबर शक्कर मिलाकर एक हथेलीभर सबेरेके वख्त फांके फायदा बहुतसा होवेगा, या छः मासा मालतीके फूलोंमें शक्करको मिलाकरके फांके खून बन्द होजायगा और सुपारीपाक भी इसी बीमारीमें फायदा करता है ॥ २२ ॥

अगर स्त्रीकी छातीपर या स्तनोंके समीप सूजन होजावे तब नीम और बकायनघी पत्तीको गरम करके उसमें सेंकना और बांध भी देना, फायदा होवेगा या गुलेबासकी पत्ती और मकोहकी पत्ती दोनोंको पीसकर गरम करके लगानेसे सूजन जाती रहेगी या नागरमोथा और मेथीको लेकर भेडके दूधमें पीसकर लगानेसे आराम हो जाता है ॥ २३ ॥

जिनके संतति उत्पन्न नहीं होती है उन स्त्री पुरुषोंके वीर्योंमें रोग होता है। स्त्रीके वीर्यमें रोग होता है या पुरुषके वीर्यमें रोग होता है, सो रोगकी परीक्षा इस तरहसे करनी चाहिये, दो मिट्टीके प्याले लेकर उनमें मिट्टी डालकर उस मिट्टीमें सात २ दाने गेहूंके छोडदेवे और

दोनों प्यालोंको अलग २ जगह पर रक्खे, एकमें स्त्री रोज पेशाब करे दूसरेमें पुरुष पेशाब करे सातरोजतक बराबर दोनों पेशाब करें, जिसके प्यालेमें दाने न उगें उसीमें रोग जान लेना वही अपने रोगकी दवा करे, जिसमें दाने निकल आवें वह दवा न करे, क्योंकि उसमें रोग नहीं है ॥ २३ ॥

अब दूध पिलानेवाली धाईके दूधकी परीक्षा लिखते हैं

एक बर्तनमें थोडासा पानी डालकर उस पानीमें दूध पिलानेवाके थोडेसे दूधको छोड देवे यदि वह दूर पानीके साथ मिलजावे तब उसके दूधको उत्तम गुणकारी जानलेना उसका दूध बच्चेको फायदा करेगा, इस वास्ते वही दूध पिलाना चाहिये और जिस धाईके दूधका रंग काला या लाल हो और पीछेसे कषैला हो या जिसमें किसी प्रकारकी गन्ध आती हो या रूखा हो या बच्चेको तृप्ति करनेवाला न हो वह दूध वातके विकारोंको उत्पन्न करनेवाला होताहै और जिसके दूधकाली पीली या तांबेकी रंगकी तरह झलक हो और जिसकेमें तिक्त, आमिल, कटु रह हो और जिसमें सडे हुए रुधिरकी गन्ध आती हो और जो बहुत गर्म हो वह दूध पित्तके विकारको उत्पन्न करता है और जो दूध अत्यंत सफेद और मधुरता लिये हुए दो और कुछ सलोना भी हो और जिसमें घी तेल चरबीकी गंध आती हो और जो जलमें डालनेसे डूब जाय वह दूध श्लेष्मा और कफके विकारोंको उत्पन्न करता है फिर जिस बच्चेकी मांके या धाईके स्तनोंका दूध तीन दोषोंमेंसे किसी एक दोषवाला भी हो तब उसकी दवा किसी उत्तम वैद्यसे करानी चाहिये क्योंकि दोषवाले दूधको पीनेसे बच्चा भी जरूर रोगवाला होजाता है। यदि लडकेको दूधके सबबसे कोई बीमारी होजावे तब लडकेकी दवाई लडकेकी माको पिलानी चाहिये। दवाका असर दूधद्वारा बच्चेके शरीरमें पहुंचता है। बच्चेकी मांको गरम शरद चीजोंके खानसे और बादीकी चीजोंको खानेसे भीपरहेजरखनाचाहिये

क्योंकि उसका असर दूधद्वारा बच्चेको भी पहुंचाजाता है। बच्चेको दूध पिलानेवाली अल्प भोजनका भी नियम करलेवे और खटाई, मिर्च वगैरह खानेसे भी परहेज करे। अगर बालकको कोई दवा देनेकी जरूरत भी पडे तब एक महीनेके बालकको वायविडंगके दानेके तुल्य दवा देनी चाहिये, अधिक नहीं देना, दो महीने वालेको दो दानोंके तुल्य देना चाहिये, तात्पर्य यह है कि; प्रथम महीनोंमें १ रत्तीभर दवा शहद या मिश्री या दूधके साथ बच्चेको चटा देनी चाहिये फिर ए[illegible] २ महीनेमें एक २ रत्ती दवाका वजन बढाकरके बच्चेको देनी चा[illegible] जब १ बरसका बच्चा होजावे तब १ मासाभर दवाका वजन [illegible] देवे फिर बरस २ के पीछे एक २ मासा दवाका वजन बढाकरके देवे इस रीतिसे वैद्यकी सम्मतिसे बच्चेको दवा देनी चाहिये ॥ २४ ॥

और जिस स्त्रीके स्तनोंमें दूध कमती हो उसको यह दवा पिलावे। शतावरको शतावरको दूधमें पीसकर उसमें मीठा मिलाकरके स्त्रीको पिलावे या सफेदजीरा और साठीके चावल दूधमें पका करके थोडे दिनों तक खिलावे; इस दवासे दूध बढजाता है, या करंडके पत्तोंको स्तनोंपर बांधना और सफेद जीरा घोट करके पीनेसे भी दूध बढ जाता है ॥ २५ ॥

यदि दूध पिलानेवाली स्त्रीके पेटमें आगसी जल उठे या पेटमें मरोड पडने लगे तब गौके पाव या आधासेर दूधमें दो तोले मिश्रीको मिलाकरके उसको पिलावे या मिश्रीका शरबत उसको पिलावे। जब स्त्रीके पेटमें जलन उठे तब तो ऊपरवाली दवाका पिलाना ठीक है, क्योंकि ऐसा करनेसे बालकके बीमारी कदापि नहीं होती है ॥ २६ ॥

जो स्त्री एक दो बार प्रसूत हो चुकी है, वह जन्मसे उस बालकको तुरंत दूध पिलावे और जो स्त्री गरम मिजाजवाली होती है, उसके स्तनोंमें एक या दो रोज तक दूध नहीं आता है इस कारण वह ऐसा करे कि, बच्चेके मुखमें अपने स्तनको देकरके देखे यदि बच्चेके चूसनेसे भी नहीं आवे तब गौके या बकरीके दूधमें गर्भ पानीको

मिलाकर और जरासा उसमें चीनीका रवा मिलाकर किसी उत्तम वैद्यसे पूछकरके औषधिको खावै जिसके खानेसे शीघ्रही किसी छोटीसी चमचीसे बच्चेके मुखमें छोडे और वह दूधको बढाने-वाली जो औषधि पीछे लिख आये हैं उसका सेवन भी करे, या स्तनोंमें दूध आजावे परंतु इस बातका ख्याल रखना चाहिये कि बिना पानीके मिलाये कोरा दूध बच्चेको कदापि न पिलावे क्यों कि कोरा दूध को बच्चा पचा नहीं सकेगा किंतु फटा हुआ दूध कै करने लगेगा और बच्चेको दस्त भी आने लगेगा और पेटके दर्दके मारे रीं रीं भी किया करेगा।

और जो बच्चा दूधको तो पीना चाहता है परंतु उससे पीते नहीं बनता है तब किसी अच्छे वैद्यको बुलाकरके दिखला देवे और उसका इलाज करे।

अगर पैदा हुआ बच्चा माके दूधको पीकर के भी पाखाना न फिरे तब दो रोजके बीत जानेपर बच्चेको १ मासा ऐरंडके तेलको, दो मासे शहदमें मिल करके चटावे, या एक मासा ऐरंडके तेलको, दूधमें घोल करके पिला देवे, क्योंकि,दो तीन दिनोंतक पेटमें पुराना मल रहनेसे सूख जाता है। कोई २ स्त्री देखनेमें हृष्ट पुष्ट भी रहती है, तब भी उसका बच्चा दुबला पतला ही रहता है इसका सबब यह है, कि उसका दूध बिगडा रहता है, इस वास्ते उसको प्रथम अपने बच्चोंकी दवा करना उचित है, जब उसका दूध औषध करनेसे शुद्ध हो जाय तब पिलावे या किसी दूसरी अच्छे दूधवालीका दूध बच्चेको पिलावे। बच्चेवाली स्त्रीको उचित है कि, याद करके बारी २ से दोनों स्तनोंका दूध पिलाया करे, यदि एकका ही पिलावेगी तब दूसरे स्तनमें दूध जम करके किसी विकारको उत्पन्न कर देवेगा इस वास्ते दाहिने बायें दोनोंका पिलाया करे और बच्चेवालीको खाने पीनेका समय भी जरूर करना चाहिये। बहुत भारी और देरमें पचनेवाले भोजन न करे और कुवक्तपर भी भोजन न करे, वक्त परही भोजन करे,

क्योंकि कुवक्तमें भोजन करनेसे और कुअन्न भोजन करनेसे उसके शरीरमें रोग पैदा होजावेगा तब माताका दूधभी बिगड जावेगा, उस बिगडे हुए दूधके पीनेसे बच्चा भी बीमार होजाता है, इस वास्ते बच्चेकी माताको उचित है कि, सडा गला और बासी भोजन न खावे, क्योंकि ऐसे भोजन करनेसे वातादिक दोषको करते हैं, उसीसे दूधभी बिगड जाता है इस वास्ते बच्चेकी मताको नियमसे रहना चाहिये ॥ २७ ॥

और जिस मकानकी हवा खराब हो उस जगहमें रहनेसे बच्चे माता भी रोगवाली होजाती है उसीसे बच्चाभीबीमार होजाता है इस वास्ते खराब हवावाले मकानमें न रहे या सफाईसे मकानकी हवाको साफ कर ले, बच्चेको गोदमें दबा करके रखनसे, मुख ढांपकरके रखनेसे भी बीमार होजाता है, दूसरा बहुत मैला कुचैला रखनेसे भी बच्चेको बीमारी होजाती है, तीसरा जो बच्चोंवालियां उपवास व्रतोंको करती हैं उनके करनेसे भी बच्चेको कोई न कोई बीमारी होजाती है ॥ २८ ॥

जिस माताको वात रोग होजाता है उसके दूधको पीनेसे बच्चा भी बातरोगवाला दुबला पतला होजाता है और जिस माताको पित्तदोष होता है उसके दूधको पीनेसे बच्चाभी कामला और पित्तके रोगों करके दूषित होजाता है और अधिक प्यासको लगानेवाला भी होता है और कफके रोगों करके दूषित माताके दूधको पीनेवाला लडका कफके रोगों करके पीडित होता है और शरीर पर सोजवाला और सफेद आंखोंवाला होता है इसी वास्ते माताके दूधका शोधन करना जरूरी है ॥ २९ ॥

अब बालकके दांतोंके निकलनेके वृत्तांतको लिखते हैं

जब कि, बालकके प्रथम दांत निकलने लगते हैं तब रोगोंका उसको होना आश्चर्य नहीं है, ज्वर मलका दस्त शरीरका माडापन होना छर्दि होनी शिरमें दर्द या चक्र होना आंखोंसे पानीका बहन

फिर शरीरपर सोज और छोटी २ फुनसियोंका होना यह सब रोग तो अवश्यही होते हैं और दांतोंके निकलनेके समयपर जो वस्तु बच्चेके हाथमें आजाती है उसीको वह मुखमें रख करके चबाने लगता है इस वास्ते उस कालमें कडी वस्तु बच्चेके हाथमें न आनेदे किंतु रबडका कंगन लेकर बच्चेके गलेमें किसी तागासे बांध करके लटकादे ताकि उसी कंगनकोही बच्चा मुखमें डाल करके चबाता रहे और कोई २ बच्चा दांत निकलनेके समयपर अपने अंगूठेको या अंगुलियोंको मुखमें करके चूसा करता है सो अच्छा होता है । उसको उनके चूसनेसे न रोवे और दांतोंके निकलनेके समय किसी २ लडकेके मुखसे लारभी बहती है वहभी अच्छी होती है परंतु बहुतसी लारके बहनेसे मुखस्राव-रोग भी होजाता है उसकी यह दवा है । ६ मासा सफेद कत्था और शीतलचीनीके १० दाने, कपूर १ रत्ती, तीनोंको पानीमें पीसकर अंगुलीसे लडकेके मुखके भीतर करदेवे तब अच्छा होजावेगा, या पीपलकी छाल और पत्तोंको बराबर लेकर कूटकर कपडछानकर उसमें दो रत्ती शहदको मिलाकर दिनमें चार दफे चटानेसे मुखस्राव रोग जाता रहेगा। या सरवन, लोध, किला, मुलैठी चारोंको छः २ मासे लेकर फिर पावभर जलमें उसको काढा करके उसको छानकर उसी पानीसे दिनमें तीन चार दफे बच्चेके मुखको पोंछदेवे ऐसा करनेसे भी मुखस्राव रोग जाता रहता है ।

यदि दांतोंके निकलनेके समय बच्चेके कानके नीचे छोटी २ फुनसिया निकलें उनसे खाज होती है सो उनको नीमके पानीसे प्रतिदिन धोनेसे आराम होजाता है ।। ३० ।।

अब बच्चेके दांतोंके निकलनेके फलको दिखाते हैं

जो बालक दांतोंके सहित जन्मता है वह बडा उपद्रवी होता है और माताका भी नाश करता है और जिस बालकके प्रथम, द्वितीय, तृतीय महीनोंमें दांत निकलते हैं वह अपने पिताका नाश करता है और जिस बालकके चतुर्थ महीनेमें दांत निकलते हैं वह अपने भ्राताका

नाश करता है और जिसके पांचवें महीनामें दांत निकलते हैं वह अपने मामाका नाश करता है और जिसके छठे महीनामें निकलते हैं वह मातापिताको अधिक सुख देता है। जिसके सातवे महीनामें दांत निकलते हैं वह पिताके धनसे सुख पाता है, आगे आठवे महीनेसे नवम दशमादिक महीनेमें दांत निकलें तब वह सुखभोगका करनेवाला होता है ।। ३१ ।।

और जबतक बच्चेके संपूर्ण दांत निकल न आवें तबतक बच्चेको दूधसे ही पालना चाहिये अन्नको उसके प्रति कदापि नहीं खिलाना चाहिये, क्योंकि दांतोंका काम आंतोंसे नहीं लेना चाहिये।

और जब तक लडका दस बरसका न होले तब तक उसको दूधका अधिक सेवन कराना चाहिये और कभी गौका कभी भैंसका, कभी बकरीका या गौ भैंसाका मिला हुआ भी नहीं पिलाना चाहिये किन्तु एक ही अच्छी गौका दूध नित्य पिलाना चाहिये। तथा गौ दुर्बल या रोगी न हो क्योंकि दुर्बल और रोगी गौका भी दूध फायदा नहीं करता है और जिस गौका दूध सेवन किया जावे उसको घास चारा भी अच्छी तरहसे दिया जावे और जिस दोहनीमें दूध नित्य दुहाजावे और जिस बरतनमें औटाया जावे उसको नित्य ही धोकर साफ कर दिया जावे और लडकोंको अधिक फलोंका भी सेवन नहीं कराना चाहिये और गर्मीके दिनोंमें बच्चेको महीन कपडे पहराने चाहिये और वर्षाऋतुमें और जाडेमें मोटे कपडे पहराने चाहिये ।। ३२ ।।

और जिस बच्चेको दूधके दोषसे कुणप रोग होता है उसकी आंखोंमें खाज होती है तब बालक आंखके नीचे खुजलाता है और सूर्यके तेजको भी वह नहीं देख सकता है तब हर्ड, बहेडा, आंवला और लोध, सोंठ, अदरख और दोनों कटेरी इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे कुणप रोग दूर होजाता है ।। ३३ ।।

जो बच्चा बहुत रोता हो सोता न हो तब रोगन काहू या रोगन

खसखस बच्चेकी कनपटी पर लगावे, या काहू खसखस सौंफ पीसकर उसमें शक्कर मिलाकरके पिलावे ॥ ३४ ॥

और जो बच्चा सोते २ रो उठे तब उसको बदहजमी जानो और उसको शहद चटावो या पुदीना जोश दे करके पिलावो अगर बच्चेको दस्त पतला आता हो तब सफेद जीरा, गुलाबके फूल दोनोंको पानीमें पीस करके उसके पेटपर लगावो या माजू और अनारका पोस्त पीस करके लगावो या पुदीना या इलायचीके दाने मिश्रीके साथ पीसकर माताके दूधमें घोल करके चटावे ।

अगर बच्चेको कब्जी होजाय तब रोगन गुलको गरम करके पेट पर लगावो या चूहोंकी मेंगने और शहद मिलाकर दोनोंको पीसकर पेटको उससे चिकना कर ऊपर लेप करे ।

अगर बच्चा पेटभर हाथमारे तब जान लेना कि इसके पेटमें कोई दर्द है तब पुरानी रुईको गरमकरके थोडी नगरमसे सेंके या जरासा नमक पीसकर गरम करके पिलावे अगर बच्चेको हिचकी आती हों और आपसे आप बंद न हो तब सौंफ और शक्करको पीस करके चटावे या शहदकोही चटावे ।

अगर बच्चेको आंव या लोहू आता हो तब चार तुखम रेशा खतमीके लुहाबके साथ पिलावे ।

अगर बच्चेको चूने पैदा होजायं तब हलदी और बायविडंग पीसकर शक्करमें मिला करके पिलावे या एलुवा पानीमें घोलकर पाखानाकी जगहमें लगावे या तमाखूका पत्ता या कुदरोंदाका पत्ता पानीमें पीसकर पाखानाकी जगहमें लगावे ।

अगर पेटमें केचुआ हो जावें तब अनारकी जका छिलका जोश देकर पिलावे ।

अगर बच्चेको कांच निकलनेकी बीमारी होजावे तब मीठे अनारका पोस्त और गुलनार मीठा तथा माजूनको जोश देकरकेइनकेपानीमें आबदस्त करावे ।

अगर बच्चेको मिरगीकी बीमारी होजावे तब पोदीना और काला जीरा पानीमें पीसकरके पिलावे या जदवारको मांके दूधमें घिस-करके पिलावे ।

अगर बच्चेके दिमागमें वरम होजाय तब उसकी यह पहचान है बालकका मुख लाल या पीला होगा और माथेमें दुःख होवेगा इसी से लडका माथेको मलेगा तब ताजे मकोहके पत्तोंके पानीमें गुलना-रको पीस करके फिर उसमें रोगनगुल मिलाकर बालकके सिरपर लगावे अगर बच्चेको छींकें बहुतसी आवें तब पुरानी रुईको गरम करके उससे सेंके या अरहरको भूनकर उससे सिरको सेंके अच्छा जायगा अगर बच्चेको जुखाम होजावे तब एक कपड़ा गरम पानीमें तर करके हलकमें डाले तब कै आवेगी ।

अगर बच्चेको खांसी आवे तब खतमी मुलेठी और उन्नाब इनको जोश देकर बीचमें शक्कर मिलाकर छानकर पिलावे ।

अगर बच्चेको पसलीकी बीमारी हो तब पहले दस्त आनेकी दवा दे । गावजुबां सिपिस्ता, बनप्सा, मुलेठी, खतमी और गुल-कन्द, इनको जोश देकर छानकर पिलावे और प्याजके रसमें एलुवा घोलकर पसली पर लेप करे ।

अगर बालक रोवे या कानको मले तब जानलेना कि इसके कानमें दर्द है तब उसके कानमें पुदीनेका अर्क या हरी मकोहके अर्कको डाले ।

अगर बच्चेके कानसे मवाद जाय तब फिटकरी माजू पीसकर शहदमें मिलाकर बत्ती बनाकर कानमें रख दे । यदि बच्चेकी आंखकी पलकें फूलीरहें तब रसोतको गरम करके आंखमें लगावे ।

जिस बच्चेके तालुमें कंटक रोग हो जाता है वह स्तन नहीं पीता है और दस्त उसको पतला आता है उसको यह दवा देवे । हरड, बच, कूठ, इनको कूटकर शहदमें मिलाकर पिलावे अच्छा हो जावेगा ।

बालकको यदि ज्वर होजाय तब मुलैठी, वंशलोचन, धानकी

खील, रसोत, मिश्री इनकी चटनी बनाकर बालकको देवे तब बालकके सर्व प्रकारके ज्वर जाते रहेंगे ।

कफज्वर बच्चेको तब हरड, आंवला, पीपल, चीता यह पाचन सर्व प्रकारके कफज्वरोंको दूर करता है ।

बालको यदि श्वास हो तब कायफल, पोहकरमूल, काकडासिंगी, पीतल इनको शहदमें मिलाकर चटनी बनाकर देवे तब बाल... श्वास, खांसी, मन्दाग्नि भी दूर हो जाती है ।

और जो बालक कटिको धारण करता हो उसको गजपीपल, लोध, बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला इनका काढा बनाकर उसमें शहद मिलाकर बालकको देनेसे फायदा होता है ।

फिर जिस बालकको अतिसार होजावे उसको काकोली, गजपीपल, लोध ये सब बराबर भाग लेकर काढकर इसमें शहद मिलाकर बालकको देनेसे फायदा होता है ।

यदि बालकको संग्रहणी रोग हो तब अंजवाइन, जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल और इन्द्रजव इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनाकर शहदमें मिलाकर बालकको देवे । या हल्दी, सरल, देवदारु, कटेली, गजपीपल, पिठवन, शतावरी इनका चूर्ण बनाकर शहदमें मिलाकर चटानेसे आराम होवेगा और अग्निको भी जगावेगा और वातरोग, ज्वर, अतिसारको भी यह चूर्ण दूर करेगा ।

यदि बालकको अजीर्ण होजावे तब धनियां, सोंठका काढा बनाकर उसमें सोंठ, मिर्च, चिरचिटा, जीरा इनके चूर्णको मिलाकर पिलावे तब समूल रोग और अजीर्ण जावेगा ।

जिस बालकको श्वास या खांसी होजाय उसको कटेली, लौंग, नागकेसर इनका चूर्ण बनाकर शहदमें मिलाकरके देवे तब सब प्रकारकी खांसी दूर होवेगी ।

या वंशलोचनके चूर्णको शहदमें मिलाकर बालकको चटानेसे भी श्वास और खांसी जाती रहती है ।

बालककी पुरानी खांसीकी दवा

कटेली, लौंग, नागकेसर इनका चूर्ण बनाकर शहदमें मिलाकर चटावे तब बालककी पुरानी खांसी जाती रहेगी और शरदी भी दूर होजावेगी ।

जिस बालकको तृषा बहुत लगती हो, उसको पीपल, मुलैठी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते इनका चूर्ण बनाकर शहदमें मिलाकर देनेसे तृषा दूर होती है ।

जिस बालकको दस्त न आता हो उसकी यह दवाई

एरण्डके बीज और चूहोंकी मेंगनोंको निबूके रसमें पीसकर बालककी नाभीपर या गुदापर लेप करनेसे दस्त आवेगा ।

जिस बालककी नाभी पकजावे, हलदी, लोध, मेहंदी, मुलैठी इनका काढा कर उसमें तेलको पकाकर नाभीपर लगानेसे अच्छी होजावेगी । या बकरीकी मेंगनोंको दूधमें पीसकर नाभीपर लगानेसे अच्छी हो जावेगी । जिस बालककी नासिका पकजाय उसकी नासिकापर हलदी, लोध, मेहंदी, मुलहठी इनका काढा कर तेलमें पकाकरके लगावे नासिका अच्छी होजावेगी ।

जिस बालककी गुदा पकजावे तब रसोतको पानीमें पीसकर लेप करे ।

जिस बालककी तालू पकजावे तब जवाखारको शहदमें पीसकर उसपर मालिश करनेसे आराम होजावेगा ।

जिस बालकके दांतोंमें रोग उत्पन्न हो तब धायके फूल, पीपल, आंवला इनके रसमें शहद मिलाकर दांतोंपर मालिश करे फायदा होवेगा ।

बालकके मुखपाक रोगकी दवा

जावित्री, दूध, दाख, पाठा, हरड, बहेडा, आंवला इन सबका काढा

कर उसको छानकर ठंडाकर उसमें शहद मिलाकर बालकको कुल्ला करानेसे मुखपाकरोग दूर हो जाता है।

जिस बालकके नाकसे रक्त बहता हो उसको अनारके फूलोंका रस या दूभका रस निकालकर नास देनेसे रुधिर बंद होजाता है।

और जिस बालककी पाचकशक्ति मंद होगई हो, उसको सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोदा, सेंधानमक, कालाजीरा, सफेदजीरा ये सब सातभाग, हींग आठभाग इनका चूरन बनाकर भोजनके आदिमें ग्रास इसको देवे तो मंदाग्नि जाती रहेगी।

बालकके ज्वरादिकोंकी दवा

गौका दूध और दही गौके गोबरका रस इनमें ही गौके घृतको पकावे फिर इसी घृतका बालकको सेवन करानेसे चौथिया ज्वर, उन्माद और मिरगी भी दूर होजावेगी, मगर दूधादिक सब एक ही गौके होवें।

बालककी मूर्च्छाकी दवा

बेरकी गुठली, पद्माख, खस, चंदन, नागकेसर इनका चूर्ण बनाकर शहदमें मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा खुल जाती है।

दाहकी दवा

पद्माख, चंदन, नेत्रवाला, खस इनको महीन पीसकर चूर्ण बनाकर दूधके साथ बालकको पिलानेसे दाह जाती है।

पेटके कृमिकी दवा

नागरमोथा, वायविडंग, पीपल, मूषापर्णी, कपिला अनारकी छाल इनका चूर्ण बनाकर खिलानेसे बालकके पेटके कृमि सब नष्ट हो जाते हैं।

शीतज्वरकी दवा

बांसा, नागरमोथा, गिलोय, दाख, इनका काढा बनाकर शीतल कर बालकको पिलावे तब शीतलाज्वर जाता रहेगा।

आंखोंकी दवा

आंखमें खाज हो तब सेंधानमक, लोध इनको शहद तथा घृतमें पीसकर फिर पीसाहुआ सुरमा उसमें मिलाकर सफेद वस्त्रमें उसकी पोटली बनाकर बालकके नेत्रोंपर बार २ फेरनेसे आंखके सब रोग दूर होजाते हैं ।

आंखोंके दाह रोगकी दवा

चंदन, मुलैठी, लोध, चमेलीके फूल, गेरू इन सबका लेप करनेसे बालकके दाहरोगसे आंखोंके पानीका झरनाभी दूर हो जाता है ।

कानमें दर्द हो तब पके हुए मदारके पत्तेका रस डालनेसे दूर हो जाता है ।

जिसमें पूरी २ मरदानगी यानी ताकत होती है वही पूरा मरदभी कहा जाता है । हकीम लोग इसको कुव्वतेबाह कहते हैं और उसी पुरुषपर स्त्री प्रसन्न भी होती है जिसमें मरदानगी ताकत नहीं है उस पर स्त्री कदापि प्रसन्न नहीं होती है, चाहे उसका पति राजा क्यों न हो क्योंकि स्त्री हमेशा ही मरदानगी ताकतवालेको चाहती है इस वास्ते उसकी जरूरत सब गृहस्थाश्रमियोंको रहती है और इसकी इच्छा गरीब अमीर सबको ही रहती है, क्योंकि इससे तीन फायदे हैं एक तो शरीर बली और पुष्ट रहता है, दूसरा विषयानन्दकी प्राप्तिभी होती है, तीसरा संततिभी अच्छी उत्पन्न होती है और भी बहुत फायदे हैं और इसके न होनेसे सब तरहके नुकसानही नहीं बल्कि वह संसारी लोगोंमें जीता ही मरेके बराबर होता है, इस वास्ते मरदानगी ताकतकी रक्षा करनी सबको वाजिब है । हकीम लोगोंकी यह राय है जो कि दिल और जिगर और दिमाग इन तीनोंके आरोग्यसे मरदानगी ताकत रहती है और मरदानगी ताकतमें नुकसान दो तरहसे पैदा होते हैं एक तो स्त्रीसंगकी इच्छाका ढीला होना दूसरा उपस्थ इन्द्रियमें किसी तरहका नुकसानका पैदा होजाना, फिर मरदानगी ताकतमें कमजोरी अनेक तरहसे हो जाती है एक तो शरीरके बहुत

ही दुबला पतला होनेसे स्त्रीसंग भोगकी इच्छा अवश्य ढीली हो जाती है, क्योंकि अति दुबले पतलेके शरीरमें खून नहीं रहता है, अर्थात् खूनकी कमीसे वीर्य भी उसके कम पैदा होता है जबतक शरीरमें वीर्यकी अधिक उत्पत्ति नहीं होती है तबतक इच्छा भी नहीं होती है और खूनके अधिक पैदा होनेसे वीर्य्य भी अधिक पैदा होता है क्योंकि छः बूंद खूनसे १ बूंद वीर्य्य पैदा होता है।

तीसरा–वीर्यके स्थिर होनेसे भी भोगकी शक्ति कम पैदा होती है क्योंकि जबतक वीर्यमें दौरान अर्थात् क्रिया नहीं होती है तब तक भोगकी ख्वाहिश नहीं होती है और जब कि वीर्यमें क्रिया पैदा होती है, तब भोगकी भी ख्वाहिश होती है और वीर्यमें क्रिया रसोंके पीनेसे होती है।

चौथा–बहुत कालतक स्त्रीका संसर्ग न करनेसे भी भोगकी इच्छा कम होजाती है।

पांचवां–दिमागके कमजोर होजानेसे भी कम होजाती है।

छठा–जिगरके कमजोर होनेसे अथवा दिलके कमजोर होजानेसे भी कम होजाती है।

सातवां–गुरदोंकी कमजोरीसे और बद शकल स्त्रीके मिलनेसे भी कम होजाती है।

आठवां–चंडी, लड़ाकी, दुराचारिणी स्त्रीके मिलनेसे भी ख्वाहिश कमहोजाती है।

नवां–प्यारी स्त्रीके मर जानेसे भी ख्वाहिश कम होजाती है।

दशवां–धातुक्षीणकी बीमारीसे भी ख्वशाहिश कम होजाती है।

ग्यारहवां–भोग कालमें वीर्यके जल्दी गिरजानेसे भी ख्वाहिश कम होजाती है।

बारहवां–उपस्थ इन्द्रियमें किसी तरहकी आतशक या सुजाककी बीमारीसे भी ख्वाहिश कम होजाती है और नामरदीवगैरहबीमारि-

योंके होजानेसे भी भोगकी शक्ति कम होजाती है । सो ऊपरवाले रोगोंमेंसे जिस किसी रोगसे भोगकी शक्ति कम होगई हो उसीका इलाज करना चाहिये और उस रोगको दूर करना और भोगकी शक्तिको पैदा करनेसे ही गृहस्थीको सुख मिलता है, क्योंकि स्त्रीका संसर्ग भी आरोग्यका हेतु है, परंतु इतना फरक जरूर है यदि समय २ पर स्त्रीसंभोग करे तब तो वह आरोग्यका जनक है और जो बिनाही समयके करे तब रोगका हेतु होजाता है, क्योंकि जैसे अधिक दस्त आनेसे पुरुष कमजोर होता है वैसेही अधिक वीर्यके गिरनेसे भी कमजोर होता है, क्योंकि वीर्यभी एक शरीरका मल है जैसे मल मूत्रके रुकनेसे अनेक बीमारियां पैदा होती हैं वैसे इसके रुकनेसे भी होती है । प्रथम तो खूनमें फसीद पैदा होजाता है और पागलपना भी इसके रुकनेसे खडा हो जाता है, ऐसी हकीमोंकी राय है और इसके त्याग करनेके वास्ते स्त्री बनी है इसी वास्ते ऋषि मुनि सब स्त्रियोंको साथ रखते थे और चतुर्थाश्रमको भी इसी वास्ते चतुर्थ अवस्थामें बनाया है, क्योंकि उस अवस्थामें शरीरमें वीर्यही नहीं रहता है, इसी वास्ते स्त्रीकी इच्छा उस कालमें कम हो जाती है ।

और जो लोक स्वप्नादिकोंमें जब कि वीर्य गिरने लगता है और उसको रोक देते हैं उनका वीर्य उस कालमें जहर होजाता है और उसके अबखरे उठकर दिमागमें जाकरके गैस पैदा करते हैं, और नेत्रोंकी बीमारीको अथवा पसलियोंमें सूजन पैदा करते हैं और नींदको भी घटा देते हैं और भी अनेक अनेक रोगोंको पैदा करते हैं और समय २ पर इसको स्त्रीसंसर्ग करके गिरानेसे कोई भी बीमारी पैदा नहीं होती है, इसीसे साबित होती है कि, जो स्त्री संभोगसे समय-पर वीर्यका गिरना भी आरोग्यका कारण है और कुसमय पर वीर्यके अधिक गिरनेसे अनेक प्रकारके रोग पैदा होते हैं ।

एक तो शारीरिक बल नष्ट होजाता है, तथा फिर दिल और जिगर वगैरह सब कमजोर होजाते हैं । जैसे अधिक दस्त आनेसे या अधिक

कै आनेसे शरीरके सब अवयव कमजोर और ढीले होजाते हैं इसी तरह अधिक वीर्य्यके निकलनेसे शरीर भी बेकामही हो जाता है और शरीरमें साफ खून भी कम होजाता है और बदनमें खुश्की भी पैदा होजाती है और कमजोरी भी आ जाती है ।

और जोकि अतिभोगी होजाते हैं उनकी इन्द्रीसे वीर्य्यकी जगह खून निकलता है, उसीसे फालजयी, लकवा और खफगानकी बीमारी भी होजाती है और तपेमारका भी उसको पैदा होजाता है और उसको संतति भी नहीं होती है इसी वास्ते वह जल्द मरभी जाता है । इसीसे अतिभोगी होना गृहस्थीके वास्ते बहुतही बुरा है इस वास्ते समयपर ही संभोग करना उसको उचित समझना चाहिये।। ३५।।

और जिसको कि भोगसे उत्तर बदनमें कमजोरी होजावे वह इस माजूमको बनाकर ४।। साढे चार मासे नित्यही खाया करे तथा माजून-गोखरू छोटा, लहसन, चने इन तीनोंको बराबर लेकर जुदा २ कूट छानकर इनको गौके घृतमें भूनलेवे, फिर इन तीनोंसे तिगुनी शहद निखालस लेकर फिर प्याज और तुरंजबीके पानीको शहदमें मिलाकर चाशनी बनाकर उसमें गोखरू वगैरहको डालकर माजूम बनाकर रख छोडे और भोगोत्तरकालमें ४।। मासा उसमेंसे खाया करे तो कमजोरी नहीं आवेगी ।। ३६ ।।

जालीनूस हकीमने कहा है कि, भूखे पेट स्त्री-संभोगको न करे, और भोजन करके जब उठे तब, और कै होनेके पीछे, दस्त फिरनेके पीछे और फसद लेनेके पीछे, हजामत करानेके पीछे भोगको न करे और जब मनमें कोई चिंता हो तब या शरीरमें किसी प्रकारकी व्यथा हो तब, निंद्राके पीछे भी और बदहजमीके होनेपर भी सरदीके लगजानेपर भी और गरमपानीसे तुरंत स्नानकरके भी औरनींदकी खुमारीमें भी और नशेकी खुमारीमें भी और खट्टीवस्तुके खानेके पीछेभी और पहली रात्रिमें भी और दिनमें भी स्त्री संभोगको कदापि न करे, अर्थात् इनहीं नियमोंके अनुसार जो पुरुष चलता है उसका शरीर

निरोग रहता है और जो आदमी इन नियमोंके विरुद्ध चलता है उसका शरीर रोगग्रस्त होकर अल्पायुवाला होजाता है ॥ ३७ ॥

जिसका शरीर अति दुबला पतला होता है उसके शरीरमें वीर्य कम पैदा होता है । उसको उचित है कि, बादाम और पिस्ता और पुष्टाईकी माजूमों वगैरहका सेवन करे और जिसके वीर्यमें गरमी बहुत पैदा होजाय वह काहू और कुलफा वगैरह सरद चीजोंका सेवन करे और जिसके वीर्यमें हरकत कम होजाय उसको चाहिये कि, ६ तोले मखानोंको लेकर बरगदके दूधमें दोबार भिगोकर फिर उनको छायामें सुखावे, फिर एक नारियलमें छिद्र करके तालमखानोंको उसके भीतर भरदे और नारियलके छिद्रको उसीके छिलकेसे बंद करके फिर थोडासा गेहूंका आटा कडा सानकर नारियलके ऊपर उसका लेप करके गोलासा बनालेवे उसको मंद २ आंचपर रख करके पकावे जब कि ऊपरका आटा लाल होजाय तब उसको अग्निसे निकाल करके ठंढा करे, फिर उसके ऊपरके आटेको उतार देवे और नारियलसे तालमखानाको निकालकर उसको पीसकर रक्खे । फिर तोदरी लाल, तोदरी सफेद, गोखरू छोटी, गोखरू बडी, मूसली सफेद, मूसली स्याह, गावजुबान हरएक दो २ तोले, समुद्रसोग १ तोला, इन्द्रजव मीठे १ तोला, मोचरस १ तोला, इलायची १ तोला, दालचीनी, कबाबचीनी, सुरजामीठी, शकाकल, तबशीर सफेद, हरएक नौ २ मासे, चोबचीनी १० तोले, वामन सफेद, वामन सुर्ख, हरएक डेढ २ तोला, बुजीदान दो मासे, १ छटांक पिस्ता, एक छटांक गलगोजाकी गिरी, आधपाव मीठे बादामकी गिरी ऊपरवाली सब दवाइयोंको कूटकर बारीक करे, आधसेर मिश्रीकी चाशनी बनाकर उसमें तालमखाना वगैरह सब दवाइयोंको डालकर माजूम बनाले और इसमेंसे १ तोलाभर सबेरे नित्य खाया करे और खटाई वगैरहको न खावे इसके खानेसे वीर्य बढेगा । वीर्यके बढनेसे शरीरका बलभी बढेगा ॥ ३८ ॥

पेशाबके साथ या आगे पीछे वीर्य्यके गिरनेका नामही प्रमेह है सो प्रमेह बलगमी, सबरावी और सौदावी तीन तरहका होता है। इनकी पहचानको दिखाते हैं, जिसका पेशाब गन्नेके रसकी तरहका हो या शराबकी तरहका हो या सफेद और पतला होता हो या पेशाबके साथ वीर्य तारकी तरह गिरता हो या मुखकी लुहाबके तरह वीर्य पेशाबमें गिरे या पेशाबके साथ रेता भी गिरे या पेशाब आटेकी तरह जमजावे इन किसमों वाले प्रमेहका नाम बलगमी प्रमेह है ।। ३९

बलगमी प्रमेहकी दवा

जरदचोब, दारुहलदी, हलेला, जंजबील, हरएकएक २ तोलालेकर जौकोबा करे फिर १ सेर पानी डालकर रात्रिको भिगो देवे, सबेरे उसको अग्निपर पकावे जब कि आधापाव पानी बाकी रहजाय तब उसमें छानकर उसमें दो तोले शहदको मिला करके पीजाय अथवा हर्ड, बहेडा, आंवला और जरद चोब इन सबको दो २ तोले लेकर कूट पीसकर आठ तोले उसमें मिश्री मिलाकर छः मासासे लेकर एक तोलातक नित्यही सबेरे खाकर ऊपरसे घूंट पानीके पीलेवे ।। ४० ।।

अब सफराई प्रमेहके चिह्नोंको दिखाते हैं

खारे पेशाबका होना, या सफेद रंगके वीर्यका पेशाबके साथ गिरना, या काले रंगवाले पेशाबका होना, या लालरंगवाले पेशाबका आना, या पीले रंगवाले पेशाबका होना, या तेलके रंगका पेशाबका होना, यह सब सफराई प्रमेहके चिह्न हैं । इलाज यह है—छोटी हर्ड, जंबीरी, दोबाला, नाकेसर, हरएक छः २ मासे लेकर कूटकर फक्की बनाकर इसमें १ तोला शहद मिलाकर नित्यही सबेरे दस या बीस दिनों तक खावे ।। ४१ ।।

अब सौदावी प्रमेहके चिह्नोंको दिखाते हैं

जिसके पेशाबपर मखियां और चींटियां आकरके बैठजाय या जिसका पेशाब तेल या जली हुई चरबीकी तरह हो, या जिसके पेशाबमें गलीजपना या चिकनाहट हो सो प्रमेह सौदावीसे होता है। ऐसा

प्रमेह बडी मुश्किलसे अच्छा होता है, तब भी इलाज इसका जरूर करना चाहिये । १ तोला जरद चोब, और चार तोले सूखा आंवला दोनोंको कूटकर एक सेर पानीमें उबाल देवे जब कि पावभर पानी बाकी रह जाय तब छानकर उसमें दो तोले शहद मिलाकर ठंडा करके सात रोज तक बराबर पीवे ।

उपस्थ इन्द्रीके अन्दर दो छिद्र होते हैं एकसे पेशाब गिरता है और दूसरे छिद्रसे स्त्रीके साथ संभोगकालमें वीर्य गिरता है ।। ४२ ।।

और प्रमेहरोग छै तरहसे पैदा होते हैं, एक तो वीर्य्यके अतिरोकनेसे, पुष्टि करनेवाली अति गरम चीजोंके सेवनसे, जब कि वीर्य बहुत पैदा होता है, और रोका जाता है तब फिर प्रमेहकी बीमारी खडी होजाती है, उसका इलाज स्त्री-भोग या थोडे दिनोंतक खुश्क भोजन करना चाहिये ।

दूसरी वजह—जब कि वीर्यमें गर्मी पैदा हो जाती है तब वीर्यका रंग पीला होजाता है और वीर्यके पात होनेके पीछे इन्द्रीमें सूज पैदा होजाती है । इलाज इसका यह है—गुले नीलोफर, बनप्शा, खयारीन, उन्नाब, ईसबगोल, काशनीका बीज, सूखा धनियां इन सबको घोटकर मिश्री डाल करके पीवे ।

तीसरी वजह यह है—भोगशक्तिका कम होजाना, वीर्यका ढीला होजाना और वीर्यका पतला भी होजाना, सरदीका बढजाना और भोगकालमें जल्दी वीर्यका गिरजाना और शरीर प्रतिदिन कमजोर होते चला जाता है । इलाज इसका पुष्ट औषधियोंका और हलवा वगैरहका सेवन है ।

चौथा—इन्द्रीके खडे होनेमें थरथरा पैदा होता है इलाज इसका पुष्टि करनेवाले तेलोंकी इन्द्रीपर मालिश है।

पांचवां—अतिभोग करनेसे गुरदोंकी चरबी वीर्यद्वारा गिरती है चिह्न इसके यह हैं वीर्यका अधिक गिरना और पेशाबके पीछे गलीज व

मैलका गिरना और बदनका रोजबरोज कमजोर होते चला जाना और जो कि पेशाबके पीछे गलीज गिरता है वही चरबी है सो गुदरको पुष्ट करनेवाली माजूमोंका खाना ही इसका इलाज है ।

छठा—जब कि, वीर्यमें गरमी बढ जाती है, तब भोगशक्तिके कम होजानेसे कमजोरी पैदा होजाती है इलाज करना चाहिये तिमिरे-हिंदीके बीजोंको भूनकर छिलका उतारकर उसकी फांकी बनावे फिर उसके बराबर सफेद चीनीको मिला करके एक हथेलीभर गौके दूधके साथ उसको फांके । या उरदकी धोई दालको लेकर गौके दूधमें भिगोदेवे जब कि समग्र दूधको दाल पीजावे तब उसको छायामें सुखाकर फिर मूसली सफेद, मूसली स्याह, तिमिरे हिंदीका बीज भूनकर छीलकरके धरदेवे फिर दालके बराबर सिंगा-डाको लेकर कूट पीसकर रख छोडे, और सब ऊपरवाली दवाइयोंको कूट पीस करके धरदेवे, थोडेसे सिगाडेका आटा और दो तोले पीसी हुई ऊपरवाली दाल और दो तोले ऊपरवाली औषधियें और ३ तीन तोले चीनी सबका हलवा बना करके सात रोज तक खाय फायदा होवेगा ।। ४३ ।।

प्रमेहकी औषध

तिमिरेहिंदीके बीज छिले हुए १ तोला, बकायनके बीजोंकी गिरी, सन्दल सफेद, हरएक सात २ मासे, इनकी फांकी बनावे और इनके बराबरकी चीनीको मिला करके फिर कुलफाके बीज, खसखस तीनोंको सात २ मासे लेकर पीसकर इनका सीरा निकालकर उसीमें मिलाकर फिर शरबत, नीलोफर शरबत, खसखस दो २ तोले उसीमें मिलाकर पीवे, या गूलरकी जडका छिलका, गोखरू छोटा, ताल-मखाना, कनोलका मगज, गुड, हरएक पांच २ तोले, भाफेली मकाना, बीजबंद, सरवाईका बीज, चनियानका गोंद, हरएक एक २ तोला सबको कूट, पीसकर फांकी बनाकर एक तोला भरकी वह फांकी गौके दूधके साथ खावे ।। ४४ ।।

प्रमेहकी माजून

एक पावभर तुखम किवांच और पावभर मूसली स्याह, आधापाव दारफिलफिल, गौका दूध अढाई पाव, सब औषधियोंको कूट पीसकर गौके दूधमें पकावे जब कि सब दूध सूख जावे तब दालचीनी, कलमी, इलायची सफेदका दाना, हरएक बाईस २ मासे लेकर कूटकर महीन करके फिर सफेद चीनीकी चाशनी बनाकर उसमें ऊपरवाली सब औषधियोंको मिलाकर माजूम बनाकर दशमासासे बीसमासातक सबेरे खाया करे, जरूर फायदा होजावेगा ।। ४५ ।।

जो मनुष्य हाथरस करते हैं उनको भी ऐसी बीमारी होजाती है प्रथम तो लिंग इन्द्रियकी जड ढीली और पतली होजाती है और बीचमेंसे टेढीसी भी होजाती है, फिर दुर्बल भी होजाती है, स्त्रीसंग करनेकी सामर्थ्य भी उसमें नहीं रहती है । ऐसी बीमारीवाला पहले इस तरहसे दवाईको करे जो उपस्थ इन्द्रीपर दाने निकल आवे उन्हीं द्वारा पानी निकल जाय पीछे उसकी पुष्टिका इलाज करे । जिस दवाईसे इन्द्रीपर दाने निकल आते हैं उसका नाम पट्टी है–इस वास्ते पहले पट्टीके नुकसेको लिखते हैं । बालोनके बीज कूट खरदल, इन सबको बराबर लेकर कूट पीसकर गरम पानीसे मिलाकर इन्द्रीमें बांधे, जब कि पट्टीसे दाने निकलकर उन्हींद्वारा पानी निकल जावे तब फिर इस दवाईको लगावें, दवाई–जुदे बेदस्तर, अकरकरा, फरफियून, हरएक आठ २ मासे, मबीजज कोई, दालचीनी हरएक चार २ मासे करनफल २१ दाने, सबका चर्ण बनाकर शराबमें या शहदमें जंगली बेरके बराबर गोलियां बनावे, एक गोलीको संध्याके समय घिसकर इन्द्रीपर लेप करदेवे और सबेरे नीम गरम जलसे उसको धोडाले आठदिनों तक बराबर ही संध्याको लेप करे और सबेरे उसको धोडाला करे । इस उपायसे असली ताकत आवेगी ।। ४६ ।।

१ नामरदीकी दवा

केसर, करनफल, दालचीनी, कस्तूरी, हरएक छः २ मासे, तज, बीरबहूटी और सूखी कराही, जायफल, जावित्री हरएक एक २ तोला, मस्तंगी रूमी ७ मासा, शिगरफ ३ मासा, सबको पीसकर फिर मुरगीके अंडेके तेलमें खरल करके उसमें शहदको मिलाकर इन्द्री-पर मले मगर ख्याल रक्खे कि दवाई इधर उधर लगने न पावे। इसके लगानेसे अगर इन्द्रीपर बारीक २ दाने निकल आवें तब इन्द्रीको धोकर गौका घृत उसपर मालिश करदेवे तो निश्चय नामरदी जाती रहेगी ।। ४७ ।।

२ नामरदीकी दवा

गौका घृत, तेजपाल, सफेद कनेरकी जड, हरएक एक २ तोला लेकर जडको पीसकर तीनोंको खरल करके लेपकरे और ऊपर पानके पत्तेको बांधे। या जंगली कबूतरकी बीट और खानकी जुड-काकी बीट, पारा, अकरकरा, हरएक एंक २ तोले, शहद दो तोले, मदारका दूध ३ तोले, गौका घृत २२ तोले इन सबको कढाईमें डाल-कर खूब पीसे, जब कि तैयार हो जाय तब सात रोजतक बराबरही रात्रीके समयमें थोडासा उसमेंसे लेकर इन्द्रीपर लेप करो तो थोडे ही दिनोंमें नामरदी जाती रहेगी ।। ४८ ।।

३ नामरदीकी दवा

काला बछनाग, अकरकरा, गुजराती सिंदूर, और शहद हरएक एक २ तोला और आकका दूध ४ तोले, गौका मक्खन दो तोले पहले सब दवाइयोंको खूब महीन करो फिर एक लोहेकी कढाईमें डाल-कर उसीमें शहद डालकर नीमका सोंटा लेकर उसके नीचे तांबेका पैसा जडाकर उस सोंटेसे चार दिन तक बराबर खरल करो, फिर उसमेंसे १ मासा भर लेकर इन्द्रीपर मलो और ऊपर उसके पानके पत्तोंको बांधो और सबेरे खोलकर नीमके गरम पानीसे धोडालो तो बडा फायदा होवेगा ।। ४९ ।।

नामरदीका तेल

बीरबहूटी, पारा, संखिया सफेद हरएक दो २ तोले लेना, फिर मुरगेके अंडेकी जरदीके साथ सब दवाइयोंको पांचरोजतक खरल करो। फिर उसकी गोलियां चनेके बराबर बनाकर आतशी शीशेद्वारा उनका तेल निकालकर रखछोडो और उस तेलकी १ सींख पानपर लगाकरके उस पानको इन्द्रीपर बांधो और उस आतशी शीशेके अंदर सफेदसा जमाहुआ दिखाई देगा उसको निकालकर रखछोडो और उसमेंसे जरासा लेकर उसको पानीमें घोलकर भोगसे पहले इन्द्रीको उससे धोडालो, यह दवाई बहुत ही बडा फायदा करनेवाली है ॥ ५० ॥

इन्द्रीकी सुस्तीकी दवा

मरी हुई जौंकको लेकर सुखाकर पीसकर तेलमें खरल करो, फिर उसको इन्द्रीपर मलो सुस्ती जाती रहेगी। या गोल मिर्चके ११ दाने, लौंग १३ दाने, भीमसेनी कपूर १ मासा इनको पीसकर जरासा पानी डालकरके मलो, या भिलावे, कटेलीका फल, नलिनीके पत्ते, सेंधानमक, जलशोष इन सबको पीसकर भैंसके मक्खनमें मिलाकर सातरोज तक उसको रक्खो और पहले असगंधको भैंसके घृतमें मिलाकर इन्द्रीपर लेप करके पीछे उसपर ऊपरवाली दवाईका लेप करो तो बडा फायदा होवेगा ॥ ५१ ॥

नामरदीकी विशेष दवा

इन्द्रजौ ७ मासा लेकर भैंसके ताजे दूधमें उनको भिगा देवे, फिर दूसरे दिन चार पहर खरल करके गुनगुना करके इन्द्रीपर उसका लेप करके ऊपरसे कपडा लपेटकरके सो रहो और सबेरे गरम जलसे

धोडालो, २१ दिनोंतक बराबर ऐसा करनेसे बडा भारी फायदा होवेगा ।। ५२ ।।

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण विरचिते गुणोंकीपिटारीनामकग्रन्थे पंचमोऽध्यायः ।। ४ ।।

दोहा–संवत इक अरु नव पुनि, षष्ठ पांच पुनि आन ।
फागन बदी त्रयोदशी, पूरण ग्रन्थ सुजान ।।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण–बम्बई

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस
खेतवाडी–बम्बई